NEET Bulletin Helpline No.
8800265682
Completely NEET Counselling Guidance specially for
MBBS BDS BAMS BHMS BUMS
B.Sc Nursing GNM D./ B. Pharma
BPT MPT D/BMLT D.Optometry
OT Technician Clinical Research
B.Sc Ag. Micro Bio Bio Chem
Bio tech. BNYS etc.

R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

विजडम इंडिया

निर्भीक और बेबाक अभिव्यक्ति

EMAIL: sheelshukla100@gmail.com

लखनऊ से प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 332 लखनऊ, शुक्रवार 19 जुलाई 2024 मूल्य: 02 रुपये पृष्ठ- 08

जम्मू–कश्मीर की सुरक्षा को लेकर मोदी ने की अहम बैठक, अमित शाह और राजनाथ सिंह हुए

, tlh

जम्मू–कश्मीर ऑपरेशन गुरुवार को चौथे दिन में प्रवेश कर गया और मंगलवार और बुधवार की मध्यरात्रि को देसा के जंगलों में दो स्थानों पर थोड़ी देर के लिए गोलीबारी भी हुई। इससे पहले दिन में, डोडा आतंकी हमले से जुड़े तलाशी अभियानों में सहायता के लिए एक स्कूल भवन के अंदर स्थापित एक अस्थायी सुरक्षा शिविर पर आतंकवादियों के एक समूह ने गोलीबारी की, जिसमें सेना के दो जवान घायल हो गए।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार, 18 जुलाई को जम्मू–कश्मीर (श्र–ज्ञ) में आतंकी हमलों की बढ़ती संख्या

पर सुरक्षा पर कैबिनेट समिति की बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी शामिल हुए। पीएम मोदी की सुरक्षा बैठक के बारे में अब तक कोई और जानकारी साझा नहीं की गई है। सुरक्षा बैठक जम्मू–कश्मीर के डोडा जिले में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच गोलीबारी में दो सैनिकों के घायल होने के कुछ घंटों बाद हुई है, जहां सेना के जवान एक मेजर सहित चार कर्मियों की हत्या से जुड़े कुछ आतंकवादियों को मार गिराने के लिए मुठभेड़ में लगे हुए हैं। ऑपरेशन गुरुवार को चौथे दिन में प्रवेश कर गया और मंगलवार और बुधवार की मध्यरात्रि को देसा के जंगलों में दो स्थानों पर थोड़ी देर के लिए गोलीबारी भी हुई। इससे पहले दिन में, डोडा आतंकी हमले से जुड़े तलाशी अभियानों में सहायता के लिए एक स्कूल भवन के अंदर स्थापित एक अस्थायी सुरक्षा शिविर पर आतंकवादियों के एक समूह ने गोलीबारी की, जिसमें सेना के दो जवान घायल हो गए। रिपोर्ट्स के मुताबिक, सुरक्षाकर्मियों पर फायरिंग करने के बाद आतंकी घने जंगल में भाग गए। गोलीबारी कास्टीगढ़ क्षेत्र के जद्दन बाटा गांव में देर रात करीब दो बजे शुरू हुई और एक घंटे से अधिक समय तक जारी रही। गंभीर रूप से घायल सैनिकों में से एक को उधमपुर स्थित कमांड अस्पताल ले जाया गया है। वहीं, जम्मू–कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में सुरक्षाबलों ने बृहस्पतिवार को नियंत्रण रेखा (एनओसी) के पास घुसपैठ की कोशिश नाकाम कर दी और दो आतंकवादियों को ढेर कर दिया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सतर्क सुरक्षा बलों ने उत्तरी कश्मीर जिले के केरन सेक्टर में घुसपैठ की कोशिश नाकाम कर दी। उन्होंने बताया कि दो आतंकवादियों को ढेर कर दिया गया है। अभियान जारी है।

कांवड़ यात्रा मार्ग पर अपना धर्म नाम छुपा कर धंधा करने वालों के खिलाफ योगी सरकार सख्त

loknnkrk

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने सभी जिला प्रशासन से इस बात का ध्यान रखने की बात कहते हुए कांवड़ यात्रा के रास्ते में पड़ने वाली दुकानों के मालिकों को निर्देश दिया है कि वे अपनी दुकान पर नाम का बोर्ड जरूर लगाएं। प्रशासन के इस निर्देश पर सियासी बवाल शुरू हो गया है। देश के अलग अलग हिस्सों में छोटे व्यापारियों खासकर खाने पीने का सामान बेचने वाले दुकानदारों के बीच एक अलग ही ट्रेंड चल रहा है कई दुकान अपना धर्म छुपा कर और दूसरे धर्म के देवी देवताओं और नाम की आड़ लेकर धंधा करने लगे हैं। कोई अपनी दुकान का नाम हिंदू देवी देवताओं के नाम पर रख लेता है तो कोई तिलक लगाकर और भगवा गमछा पहनकर यात्रियों को गुमराह करता है। हिंदू देवी देवताओं के नाम पर दुकान का

नाम रखकर यहाँ नॉन वेज परोसा जाता है। इसको लेकर लंबे समय से विवाद भी चल रहा है, खासकर ऐसे दुकानदारों से उन लोगों को तब ज्यादा समस्या होती है जब वह अपने धार्मिक आयोजनों जैसे कावड़ यात्रा पर निकलते हैं, जिस दौरान भक्त अपने खान पान का विशेष ध्यान रखते हैं, लेकिन अक्सर उन्हें खाना खाने के बाद पता चलता है कि जिन देवी देवताओं के नाम पर दुकान चल रही थी, वह दूसरे धर्म या संप्रदाय का था।सावन का महीना शुरू होने वाला है। इसी दौरान शिव भक्त कावड़ लेकर प्रदेश की प्रसिद्ध नदियों का गंगाजल लेकर अपने क्षेत्रीय शिवालयों में चढ़ाने के लिए निकल पड़े हैं। कावड़ यात्रा के दौरान ऐसे दुकानदारों के खिलाफ योगी सरकार ने फरमान जारी कर कहां है, कोई भी दुकानदार अपना धर्म और नाम छुपा कर व्यापार नहीं करेगा।उत्तर प्रदेश सरकार ने सभी जिला प्रशासन से इस बात का ध्यान रखने की बात कहते हुए कांवड़ यात्रा के रास्ते में पड़ने वाली दुकानों के मालिकों को निर्देश दिया है ।

नृशंस हत्या, नायडू ने कानून-व्यवस्था पर टाला श्वेत पत्र

, tlhA

आंध्र प्रदेश वाईएसआरसीपी युवा विंग के नेता शेख रशीद (27) की शेख जिलानी ने बुधवार रात लगभग 8रू30 बजे आंध्र प्रदेश के पलनाडु जिले के विनुकोंडा शहर में भीड़ भरे मंडलामुडी बस स्टैंड पर हत्या कर दी। हत्या को कैद करने वाले व्यापक रूप से प्रसारित वीडियो में, जिलानी को गर्दन पर हमला करने से पहले छुरी से रशीद के हाथ काटते हुए देखा गया है। रशीद को स्थानीय अस्पताल ले जाया गया लेकिन वह बच नहीं सका। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने गुरुवार दोपहर को कानून और व्यवस्था की स्थिति पर राज्य सरकार के श्वेत पत्र की निर्धारित रिलीज को स्थगित कर दिया, जब विपक्षी वाईएसआर

कांग्रेस ने तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) पर अपना हमला तेज कर दिया और आरोप लगाया कि उस व्यक्ति को देखा गया था। व्यस्त सड़क पर वाईएसआर कांग्रेस के एक कार्यकर्ता की बेरहमी से हत्या कर दी गई, जो सत्ताधारी पार्टी का सदस्य था। वाईएसआरसीपी युवा विंग के नेता शेख रशीद (27) की शेख जिलानी ने बुधवार रात लगभग 8रू30 बजे आंध्र प्रदेश के पलनाडु जिले के विनुकोंडा शहर में भीड़ भरे मंडलामुडी बस स्टैंड पर हत्या कर दी। हत्या को कैद करने वाले व्यापक रूप से प्रसारित वीडियो में, जिलानी को गर्दन पर हमला करने से पहले छुरी से रशीद के हाथ काटते हुए देखा गया है। रशीद को स्थानीय अस्पताल ले जाया गया लेकिन वह बच नहीं सका। पलनाडु जिले के पुलिस अधीक्षक कांची श्रीनिवास राव ने हत्या के पीछे किसी भी राजनीतिक मकसद से इनकार किया। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, हत्या पूरी तरह से मृतक और आरोपी के बीच व्यक्तिगत दुश्मनी के कारण हुई थी। राव ने कहा कि हत्या करने के बाद जिलानी भाग गया और लापता है। आरोपी को पकड़ने के लिए तलाशी अभियान शुरू कर दिया गया है। शांति बनाए रखने के लिए विनुकोंडा शहर में निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है। वाईएसआर कांग्रेस ने हत्या पर टीडीपी को घेरने की कोशिश की, राज्य सरकार ने एक बयान जारी कर घोषणा की कि उत्पाद शुल्क नीति और राज्य वित्त के अलावा राज्य में कानून और व्यवस्था पर श्वेत पत्र आगामी विधानसभा में जारी किया जाएगा।

असम सरकार का बड़ा फैसला, मुस्लिम मैरिज एंड डिवोर्स एक्ट किया रद्द, सीएम हिमंत ने दी जानकारी

भाजपा नेता ने आगे बताया कि आज असम कैबिनेट की बैठक में हमने असम निरसन विधेयक 2024 के माध्यम से असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण अधिनियम और नियम 1935 को निरस्त करने का निर्णय लिया है। असम सरकार ने गुरुवार को एक कैबिनेट बैठक में असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण अधिनियम और नियम 1935 को रद्द करने का फैसला किया। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने जानकारी दी है। सीएम हिमंत बिस्वा सरमा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि हमने बाल विवाह के खिलाफ अतिरिक्त सुरक्षा उपाय करके अपनी बेटियों और बहनों के लिए न्याय सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। भाजपा नेता ने आगे बताया कि आज असम कैबिनेट की बैठक में हमने असम निरसन विधेयक 2024 के माध्यम से असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण अधिनियम और नियम 1935 को निरस्त करने का निर्णय लिया है। सरकार ने बताया कि विवाह और तलाक के पंजीकरण में समानता लाने के लिए, राज्य मंत्रिमंडल ने असम निरसन विधेयक, 2024 को मंजूरी दे दी है, जिसका उद्देश्य असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण अधिनियम, 1935 और असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण नियम, 1935 को निरस्त करना है। विधेयक को असम विधानसभा के अगले मानसून सत्र से पहले विचार के लिए रखा जाएगा। इससे पहले असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने राज्य में जनसांख्यिकीय बदलावों पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने दावा किया कि असम में मुस्लिम आबादी 1951 में 12: से बढ़कर आज 40: हो गई है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह मुद्दा उनके लिए राजनीति से परे है और इसे राज्य के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण बताया। एएनआई द्वारा रिपोर्ट की गई सरमा की टिप्पणी ने इन जनसांख्यिकीय बदलावों के कारण कई जिलों को खोने की गंभीरता को रेखांकित किया।हिमंत बिस्वा सरमा ने जोर देते हुए कहा कि मेरे लिए यह कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं है। यह मेरे लिए जीवन और मृत्यु का मामला है।

डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस एक्सीडेंट से पहले सुनी धमाके की आवाज, लोको पायलट का हैरान करने वाला दावा

, tlhA

चंडीगढ़–डिब्रूगढ़ लोको पायलट ने बताया है कि उन्होंने दुर्घटना से पहले एक तेज विस्फोट जैसी आवाज सुनी। इस दावे ने फिलहाल सभी को हैरान कर दिया है। इसके बाद इस घटना को लेकर अलग–अलग एंगल से जांच की जा रही है। रेलवे तोड़फोड़ की संभावना की जांच कर रहा है। उत्तर प्रदेश के गोंडा के पास डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस पटरी से उतर गई। इस घटना में कम से कम दो लोगों की मौत हो गई हैं। वहीं कई लोग घायल बताए जा रहे हैं। इसके साथ ही दोनों लोको पायलट सुरक्षित हैं। इन सब के बीच रेलवे सूत्रों

ने लोको पायलट के हवाले से बड़ा दावा किया है। लोको पायलट ने बताया है कि उन्होंने दुर्घटना से पहले एक तेज विस्फोट जैसी आवाज सुनी। इस दावे ने फिलहाल सभी को हैरान कर दिया है। इसके बाद इस घटना को लेकर अलग–अलग एंगल से जांच की जा रही है। रेलवे तोड़फोड़ की संभावना की जांच कर रहा है। डिब्रूगढ़–चंडीगढ़ एक्सप्रेस में यात्रा कर रहे एक यात्री का दावा है, ष्मुझे हाजीपुर जाना था... (घटना से पहले) हल्का विस्फोट हुआ और उसके बाद जोरदार झटका लगा और हमारा कोच पटरी से उतर गया। हम चंडीगढ़ से आ रहे थे।ष यूपी के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कहा कि हमारी प्राथमिकता है कि यूपी के सभी अस्पतालों में बेहतर इलाज उपलब्ध हो। आज मैंने कई अस्पतालों का निरीक्षण किया. अनुपस्थित डॉक्टरों का एक दिन का वेतन काटेंगे। जिन जगहों पर साफ–सफाई ठीक नहीं थी, वहां के लिए हमने जिम्मेदार एजेंसियों का एक दिन का वेतन काटा है. जो डॉक्टर अनुपस्थित थे उनके खिलाफ निलंबन की कार्रवाई की जाएगी।

प्रदेश सरकार द्वारा ''हर घर को जल'' एवं ''हर खेत को पानी'' की परिकल्पना की जा रही है साकार –निदेशक भूगर्भ जल

लखनऊ(आरएनएस) आम जनमानस को भूजल के महत्व के प्रति जागरूक करने तथा जल संरक्षण एवं जल सम्वर्धन के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रदेश के समस्त जनपदों में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 16 से 22 जुलाई, 2024 के मध्य ''जल संरक्षण का करो प्रयास–जल ही है जीवन की आस'' थीम के साथ भूजल सप्ताह वृहद स्तर पर मनाया जा रहा है जिसका शुभारम्भ जल शक्ति मंत्री, स्वतंत्र देव सिंह ने 16 जुलाई, 2024 को लखनऊ स्थित सामाजिक परिवर्तन प्रतीक स्थल (मरीन ड्राइव) चौराहा से किया था। इसी कड़ी में आज यूनियन इण्टर कालेज, रामनगर जनपद बाराबंकी में निदेशक, भूगर्भ जल विभाग, उ0प्र0 राजेश कुमार प्रजापति की अध्यक्षता में जल संरक्षण एवं संचयन के विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्कूलध्कालेजों के छात्र–छात्राओं, शिक्षक, अभिभावक, जल संरक्षण एवं संचयन के क्षेत्र में अग्रणी एवं उल्लेखनीय कार्य कर रही संस्था ''जनहित कल्याण सेवा समिति, बाराबंकी'' द्वारा बढ़ चढ़ कर प्रतिभाग किया गया। इस अवसर पर ''जल के लिए चल'' विषय पर आधारित स्कूली छात्र–छात्राओं की रैली निकाली गयी। छात्र–छात्राओं द्वारा रैली में वृहद वृक्षारोपण हेतु सामाजिक वानिकी के लिए उपयुक्त पौधों के साथ ''पौधों की बारात'' का आयोजन भूजल संरक्षण के उद्देश्य से किया गया। इस कार्यक्रम में भूजल प्रबंधन विधाओं, भूजल स्रोतों की सुरक्षा, संरक्षण एवं जल के दुरूपयोग को रोकने के उपायों से जन समुदाय को जागरूक किया गया। इस समारोह में यूनियन इण्टर कालेज, रामनगर, बाराबंकी के छात्र–छात्राओं द्वारा जल संरक्षण पर आधारित रंगोली, पेन्टिंग, मेहन्दी आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेकर सुन्दर आकृतियों का प्रस्तुतीकरण किया गया।इस अवसर पर निदेशक, भूगर्भ जल विभाग ने अपने सम्बोधन के माध्यम से जल संरक्षण एवं संचयन की उपयोगिता पर चर्चा करते हुए अवगत कराया कि प्रदेश सरकार द्वारा ''हर घर को जल'' एवं ''हर खेत को पानी'' की परिकल्पना साकार की जा रही है। सरकार का यह भी प्रयास है कि भूजल संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाय, इसका नियोजित प्रबन्धन किया जाय तथा भूजल संरक्षण की विधाओं का बेहतर अंगीकरण सुनिश्चित किया जाय। भूजल सप्ताह के अवसर पर उपस्थित सभी स्कूल–कालेज के छात्र–छात्राओं, शिक्षकों, जल के क्षेत्र में अग्रणी कार्य कर रहे गैर सरकारी संगठनों एवं भूगर्भ जल विभाग द्वारा किए जा रहे सार्थक प्रयासों की सराहना की और इस अभियान को सफल बनाने का निर्देश दिया गया। कार्यक्रम में जल के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही जनहित कल्याण सेवा समिति के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र कुमार वर्मा, प्रधानाचार्य डा0 कमलेश सिंह एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस अवसर पर भूगर्भ जल विभाग, उ0प्र0 के अधिशासी अभियन्ता सर्व श्री अनुपम
, आमोद कुमार, रविकान्त सिंह, धर्मवीर सिंह राठौर, सहायक अभियन्ता, आदित्य पाण्डेय, अंकुर श्रीवास्तव, ध्यानपाल तथा डा0 एन0एल0एम0 त्रिपाठी व साकेत श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

प्रदेश के सभी क्षेत्रों को निर्धारित शिडयूल के अनुरूप की जाये विद्युत आपूर्ति–ऊर्जा मंत्री

विद्युत दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए की जाए प्रभावी व्यवस्था

लखनऊ(आरएनएस)रू प्रदेश के सभी उपभोक्ताओं को निर्धारित शिडयूल के अनुरूप अनवरत विद्युत आपूर्ति मिले, इसके हर संभव प्रयास किये जाए, जहां कहीं पर भी विद्युत व्यवधान उत्पन्न हो या फिर शटडाउन लेने के लिए आपूर्ति बाधित की गयी हो तो इसकी भरपाई के लिए अतिरिक्त विद्युत आपूर्ति देकर पूरी की जाए। शटडाउन लेने से पहले इसकी जानकारी लोगों को दी जाए, जिससे कि वे किसी भी प्रकार की परेशानियों से बचे। ऊर्जा मंत्री श्री ए0के0 शर्मा ने इसके निर्देश देते हुए कहा कि बरसात में विद्युत उपकरणों में करंट उतरने की संभावना रहती है, जिससे कि विद्युत दुर्घटना घटित हो जाती है, इसकी रोकथाम के लिए लोगों को जागरूक करें कि वे बरसात के दौरान विद्युत पोल, स्टेवायर, ट्रांसफार्मर सुरक्षा जाली को छूने से बचे और हरे पेड़ों के संपर्क में न आये। जहां कहीं पर भी विद्युत उपकरणों में करंट उतरने की सूचना प्राप्त हो, तत्काल उसका समाधान कराया जाए।नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए0के0 शर्मा ने कहा कि विद्युत चोरी को रोकने के लिए हर संभव प्रयास किये जाए। हाई लाइन लॉस वाले क्षेत्रों में सघन चेकिंग अभियान चलाये जाए। जहां कहीं पर भी ऐसे प्रकरण मिले, उन लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए। विद्युत चोरी राजस्व हानि के साथ–साथ प्रदेश की प्रगति में भी बाधक है। इस पर शत प्रतिशत रोक लगाई जाए। उन्होंने कहा कि सभी उपभोक्ताओं को समय पर सही बिल उपलब्ध करायें। बिल बनाने में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न होने पाए। उपभोक्ताओं की शिकायतों को गम्भीरता से ले। शिकायतों के निराकरण में हीलाहवाली बर्दाश्त नहीं की जायेगी। ऊर्जा मंत्री ने विद्युत कार्मिकों को बेहतर कार्य संस्कृति एवं पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करने को कहा, जिससे लोगों में उनके प्रति बनाई गयी धारणा में बदलाव आये और विभाग की छवि अच्छी बने। उन्होंने कहा कि अभी भीषण गर्मी में विद्युत कार्मिकों के अथक प्रयासों और बेहतर प्रबंधन से प्रदेश को देश में सर्वाधिक 30,600 मेगावाट से अधिक विद्युत आपूर्ति सफलतापूर्वक की गयी, जिसकी पूरी देश में प्रशंसा हुई।

अब तक 50 हजार से अधिक बच्चे हुए नया सवेरा योजना से लाभान्वित

लखनऊ (आरएनएस) प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशों के क्रम में उत्तर प्रदेश के प्रत्येक बच्चों की बालश्रम से संलिप्ता को समाप्त करते हुए शिक्षा की मुख्यधारा में सम्मिलित कर, अच्छी शिक्षा ग्रहण कराने का कार्य किया जा रहा है। इसी दिशा में नया सवेरा योजना के तहत 6–14 आयु वर्ग के 35203 कामकाजी बच्चों और 15–18 वर्ष के 14837 कामकाजी बच्चों की पहचान कर, उन्हें औपचारिक शिक्षा की मुख्य धारा में लाया गया है। श्रम विभाग द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार अब तक 12266 परिवार के सदस्यों को विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ा गया है।

महिला कल्याण विभाग के अन्तर्गत राजस्व पक्ष हेतु 1238.61 लाख रूपयें मंजूर

लखनऊः (आरएनएस)प्रदेश सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष 2024–25 में महिला कल्याण विभाग के अन्तर्गत राजस्व पक्ष में पूर्णतया राज्य पोषित अधिष्ठान व्यय के लिए 12138.61 लाख रूपयें मंजूर किये हैं। मंजूर की गयी धनराशि निदेशक, महिला कल्याण के निवर्तन पर रखी गयी है। यह धनराशि महिला कल्याण निदेशक हेतु प्रविधानित कुल धनराशि 2477.15 लाख रूपये के सापेक्ष द्वितीय छमाही हेतु आवश्यक धनराशि के रूप में मंजूर की गयी है।इस संबंध में महिला कल्याण विभाग ने आवश्यक आदेश जारी कर दिये हैं। आदेशनुसार बजट प्राविधान के सापेक्ष धराशि की उपलब्धता का दायित्व निदेशक, महिला कल्याण का होगा। वित्तीय स्वीकृति का आदेश निदेशक, महिला कल्याण द्वारा बजट प्राविधान के सापेक्ष अवशेष धनराशि की उपलब्धता की स्थिति में ही निर्गत किया जायेगा। अवमुक्त धनराशि का आहरण एकमुश्त न करते हुए आवश्यकतानुसार एवं नियमानुसार किया जायेगा। मंजूर की गयी धनराशि का उपयोग उसी मद में किया जायेगा जिस मद हेतु धनराशि की व्यवस्था की गयी है। निदेशक, महिला कल्याण द्वारा समस्त औपचारिकितायें एवं वित्तीय नियमों का अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा।

10 मेगावाट क्षमता की सौर पावर परियोजना की स्थापना हेतु प्रतापगढ़ में कृषकों से 30 वर्ष के लिए 20 हेक्टेयर भूमि पट्टे पर ली गयी

लखनऊः (आरएनएस)प्रदेश सरकार ने मेरार्स क्लीन रिन्यूवेयबल एनर्जी (बीकानेर) प्रा0 लि0 साउथ दिल्ली को 10 मेगावाट क्षमता की सौर पावर परियोजना की स्थापना हेतु कृषकों से 30 वर्ष के लिए 20 हेक्टेयर भूमि पट्टे पर लिये जाने की अनुमति कतिपय शर्तों एवं प्रतिबन्धों के अधीन प्रदान की है। यह भूमि जनपद प्रतापगढ़ के ग्राम ईसीपुर एवं सराय कल्यानदेव, तहसील–सदर के कृषकों से ली गई हैं। राजस्व विभाग ने इस हेतु अधिसूचना जारी कर दी है। इसके अनुसार इस संस्था द्वारा विदेशी पूंजी निवेश से संबंधित भारत सरकार के तथा रिजर्व बैंक इण्डिया के नियमों तथा एफ0डी0आई0 व एफ0आई0पी0बी0 के मानकों का अनुपालन प्रशासनिक विभाग–अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत द्वारा सुनिश्चित किया जायेगा। संस्था के क्रेंडेंशियल से संबंधित उत्तरदायित्व प्रशासनिक विभाग–अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत का होगा। पट्टे पर प्राप्त की गयी भूमि का उपयोग निर्धारित प्रयोजन हेतु ही किया जायेगा। निर्धारित प्रयोजन से भिन्न उपयोग बिल्कुल भी नहीं यिका जायेगा। कृषकों से भूमि आपसी सहमति से पट्टे पर प्राप्त की जायेगी।

एचडीएफसी बैंक ने उत्तर प्रदेश में 'मेगा आटोलोन मेला' की घोषणा की

लखनऊ (आरएनएस) भारत का अग्रणी निजी क्षेत्र का बैंक, एचडीएफसी बैंक, 19 जुलाई, 2024 को एक्सप्रेस कार लोन को बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश में 'मेगा ऑटो लोन मेला' का अपना नया संस्करण शुरू करने जा रहा है।उत्तर प्रदेश भर में 500 से अधिक क्षेत्रीय शाखाएँ इस पहल मेंभाग लेंगी। एचडीएफसी बैंक का 'एक्सप्रेस कार लोन', एक अत्याधुनिक डिजिटल एपीआई प्लेटफॉर्म है जो कार लोन को मात्र 30 मिनटमें वितरित करने की प्रक्रिया को सक्षम बनाता है। एक्सप्रेस कारलोन भारत का एकल–सबसे बड़ा डिजिटल लोन प्लेटफॉर्म बनगया है, जो हजारों खुश ग्राहकों के साथ ऋण की शुरुआत और वितरण करता है।एचडीएफसी बैंक ने इस पहल में अग्रणी ऑटोमोबाइल डीलरशिप के साथ भागीदारी की है। इस लोन मेले में कार डीलर नवीनतम ऑटो मोबाइल मॉडल प्रदर्शित करेंगे और ग्राहकोंको वाहनों की टेस्ट ड्राइव लेने की अनुमति देंगे। बैंक पात्र ग्राहकों को सीमित कागजी कार्रवाई के साथ मौके पर ही ऋण स्वीकृत करेगा ।

महानिदेशक स्कूल शिक्षा ने शिक्षक, शिक्षामित्र, अनुदेशक एवं कर्मचारी संयुक्त मोर्चा संगठनों की मांगों एवं समस्याओं के संबंध में की बैठक

संयुक्त मोर्चा द्वारा हाफ डे, ई0एल0, कैशलेश चिकित्सा सहित विभिन्न मांगे प्रस्तुत की गई

लखनऊ (आरएनएस) मुख्य सचिव, उ0प्र0 शासन मनोज कुमार सिंह के निर्देशानुसार गत दिवस महानिदेशक स्कूल शिक्षा कंचन वर्मा द्वारा शिक्षक, शिक्षामित्र, अनुदेशक व कर्मचारी संयुक्त मोर्चा के समस्त घटक संगठनों की एक आवश्यक बैठक उनकी माँगो एवं समस्याओं के समाधान हेतु निशातगंज स्थित महानिदेशक कार्यालय लखनऊ में आहूत की गई। महानिदेशक स्कूल शिक्षा कंचन वर्मा ने बताया कि बैठक में संयुक्त मोर्चा के मांगपत्र पर गम्भीरता पूर्वक बिंदुवॉर चर्चा एवं विचार विमर्श किया गया। इसमें हाफ डे, ई. एल., कैशलेश चिकित्सा, शिक्षामित्रों, अनुदेशकों को सम्मानजनक मानदेय दिए जाने, गैर शैक्षणिक कार्यों से मुक्त किए जाने, पदोन्नति प्राप्त शिक्षकों का वेतन निर्धारण एवं उसका नियमानुसार समाधान निकालने तथा प्रोन्नति वेतनमान नियमानुसार निर्गत किए जाने हेतु सभी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को आदेश जारी करने की माँग संयुक्त मोर्चा द्वारा की गई। उन्होंने यह भी बताया कि संयुक्त मोर्चा द्वारा यह भी मांग की गई कि हमारे अवकाश तालिका में जयंती व रविवार को पड़ने वाले अवकाश को भी दर्शा कर समाज में शिक्षकों के ज्यादा अवकाश मिलने की बात कही जाती है जबकि शिक्षक समस्त जयंती व राष्ट्रीय पर्व मनाने के लिए विद्यालय जाता ही है ऐसे में इन जयंतियों को अवकाश तालिका से हटाया जाए तथा जो कमेटी शासन स्तर पर बनेगी उसमे संयुक्त मोर्चा के प्रतिनिधियों को भी सम्मिलित किया जाय। बैठक में ऑनलाइन शिक्षक उपस्थिति के संबंध में शासन स्तर से हुए निर्णय से अवगत कराते हुए इन बिंदुओं पर विचार विमर्श किया गया तथा इस बात पर सहमति बनी कि जो भी बिंदु महानिदेशक स्तर से निस्तारित किए जाने योग्य है उनका निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर कराया जाएगा, जिनका समाधान शासन स्तर से संभव है या नीतिगत प्रकरणों पर निर्णय हेतु शासन को संदर्भ प्रेषित किए जाएँगे तथा जिन बिंदुओं में बृहद विचार विमर्श की आवश्यकता है उसे प्रस्तावित समिति के समक्ष रखा जाएगा तथा प्रस्तावित समिति में प्रतिनिधियों को सम्मिलित एवं विचार विमर्श किए जाने के संबंध में आवश्यक प्रयास किए जाने का आश्वासन भी दिया गया। इस पर मोर्चा के प्रतिनिधियों द्वारा सहमति व्यक्त की गई। बैठक में निदेशक गनेश कुमार एवं मोर्चा के संयोजक मंडल योगेश त्यागी, सुशील पांडेय, संतोष तिवारी, दिलीप चौहान, विवेकानंद, सुशील यादव, हरिनाम सिंह, विक्रमादित्य मौर्या, विश्वनाथ मौर्या, सुधेश पांडेय, रणविजय सिंह, प्रभाकांत, पंकज अवस्थी आदि उपस्थित रहे।

पौराणिक शिव मंदिर गोला गोकर्णनाथ में लाइट एण्ड साउण्ड शो के लिए 15 करोड़ रूपये की धनराशि व्यय की जायेगी

विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए उ0प्र0 के ऐतिहासिक स्थलो को नये सिरे से सजाया एवं संवारा जा रहा है-जयवीर सिंह

लखनऊ (आरएनएस) पर्यटन विभाग द्वारा लखीमपुर स्थित गोला गोकर्णनाथ के पौराणिक शिव मंदिर परिसर में 15 करोड़ रुपये की लागत से मंदिर का सौन्दर्यीकरण एवं यात्री सुविधाओं का विस्तार तथा लाइट एण्ड साउण्ड शो की व्यवस्था की जायेगी। पर्यटन विभाग धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सभी प्राचीन मंदिरों को संवारने एवं सजाने का कार्य कर रहा है। पर्यटन सेक्टर में धार्मिक पर्यटन तेजी से उभर रहा है। जिसकी वजह से स्थानीय लोगों को रोजी-रोटी मिलने के साथ ही हास्पिटेलिटी सेक्टर को भी रोजगार मिल रहा है। लखीमपुर का गोला गोकर्णनाथ मंदिर अति प्राचीन धरोहर है। सालभर श्रद्धालु यहां दर्शन पूजन के लिए आते रहते हैं। इस दृष्टिकोण से बुनियादी सुविधाओं में बढ़ोत्तरी की जा रही है।यह जानकारी प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि मंदिर परिसर में लाइट एण्ड शो के माध्यम से श्रद्धालुओं को यहां की पौराणिक मान्यताओं, परम्पराओं तथा मंदिर की महत्ता के बारे में जानकारी दी जायेगी। इसके साथ ही मंदिर से जुड़े इतिहास एवं अध्यात्म के बारे में भी बताया जायेगा। उन्होंने बताया कि इस मंदिर में दर्शन के लिए दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं। सावन के महीने और अन्य दिनों में श्रद्धालुओं की संख्या ज्यादा बढ़ जाती है। इस प्राचीन शिव मंदिर को छोटा काशी भी कहा जाता है। जयवीर सिंह ने बताया कि प्रदेश में पर्यटन सुविधाओं का सतत विकास किया जा रहा है, जिससे प्रदेश में भ्रमण पर आने वाले पर्यटकों को बेहतर अनुभव प्राप्त हो सके। गोला गोकर्णनाथ स्थित शिव मंदिर की पौराणिक मान्यता है। यहां श्रद्धालु दूर-दूर से आते हैं। हमारा प्रयास है कि यहां आने वाले पर्यटक सुखद स्मृति लेकर लौटें। उन्होंने बताया कि काशी, प्रयागराज, अयोध्या, मथुरा तथा गोला गोकर्णनाथ के प्रति लोगों की अगाध आस्था है। श्रद्धालु एवं पर्यटक आस्था के प्रतीक इन धार्मिक स्थलों पर पधारकर सुख एवं शांति की कामना करते हैं। पर्यटन मंत्री ने बताया कि पर्यटन सेक्टर बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है कई देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन पर टिकी हुई है। पर्यटन सेक्टर का देश की जीडीपी में अहम योगदान है। उ0प्र0 धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में पहले स्थान पर बना हुआ है। अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर बन जाने से उ0प्र0 पूरी दुनिया के मानचित्र पर स्थान बना रहा है। यहां पर देशी एवं विदेशी श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इस प्रकार देखा जाए तो धार्मिक पर्यटन से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को गति मिल रही है। राज्य सरकार विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अवस्थापना सुविधाओं का लगातार विस्तार कर रही है।

कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ' जन अभियान-2024 की तैयारियों की समीक्षा

कृषि विभाग 2.80 करोड़ पौधे लगायेगा

सभी आवश्यक तैयारियां समय पर सुनिश्चित करते हुए पौधों के संरक्षण पर भी ध्यान दिया जाए

लखनऊ (आरएनएस) प्रदेश के कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही ने सोमवार को कृषि भवन स्थित सभा कक्ष में 'पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ' जन अभियान-2024 के तहत आगामी वृक्षारोपण लक्ष्य की प्राप्ति के संबंध में विभागीय अधिकारियों के साथ एक वर्चुअल बैठक की। बैठक में उन्होंने बताया कि योगी सरकार ने वर्ष 2024-25 में जनसहभागिता से 36.50 करोड़ पौध रोपण का लक्ष्य रखा है। इसमें से कृषि विभाग द्वारा 2.80 करोड़ पौधे इस वर्ष लगाए जाने हैं। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि सभी आवश्यक तैयारियां समय पर सुनिश्चित कर ली जाएं और अभियान के तहत लगाए जा रहे पौधों का संरक्षण का भी ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि विभाग के लिए निर्धारित लक्ष्य के 20 प्रतिशत फलदार वृक्ष अवश्य लगाएं जाने चाहिए। इसके साथ ही हर खेत पर मेड़, हर मेड़ पर पेड़ के संकल्प को ध्यान में रखते हुए किसानों को इस अभियान में अधिक से अधिक भागीदार बनाया जाए। एग्री जंक्शन तथा एफपीओ के सदस्यों को भी इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। इसके साथ ही पौधरोपण के लिए कृषि विश्वविद्यालयों एवं कृषि विज्ञान द्वारा भी व्यापक पौधारोपण कार्य किया जाय। कृषि मंत्री ने इस अभियान की महत्ता पर जोर देते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण और हरियाली बढ़ाने के लिए यह पहल अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनसहभागिता को बढ़ावा देने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु जनजागृति के अभियान चलाये जाएं और जनता को वृक्षारोपण के लाभों तथा कार्बन क्रेडिट के बारे में जागरूक किया जाए। बैठक के दौरान सचिव कृषि श्री अनुराग यादव ने कहा कि वृक्षारोपण के समय की गई सभी गतिविधियों का डॉक्यूमेंटेशन अवश्य किया जाए। उसे 2 दिन के भीतर शासन को उपलब्ध कराया जाए। अधिकारियों ने इस संबंध में अपनी तैयारियों और योजनाओं की जानकारी दी और अभियान को सफल बनाने के लिए विभिन्न रणनीतियों पर चर्चा की। बैठक में कृषि निदेशक सहित कृषि विभाग के कई उच्चाधिकारी उपस्थित रहे। इसके साथ ही कृषि विभाग के मंडलीय तथा जनपद स्तरीय अधिकारियों ने वर्चुअल रूप से भागीदारी की।

'सम्भव' के तहत मंत्री स्तर पर होने वाली जिला एवं तहसील स्तर की पहली जनसुनवाई मऊ जिले में होगी

नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री श्री ए0के0 शर्मा 19 जुलाई को मऊ के बड़ागांव स्थित मंगलम बहुउद्देशीय भवन में करेगें जनसुनवाई

ऊर्जा एवं नगर विकास विभाग से सम्बन्धित शिकायतों के निस्तारण के लिए लोग अपनी शिकायतें दर्ज कराएं

लखनऊः (आरएनएस)उत्तर प्रदेश के नगर विकास एवं ऊर्जा विभाग में जनशिकायतों के प्रभावी निस्तारण के लिए विभागीय मंत्री ए0के0 शर्मा जी के प्रयासों से आधुनिक तकनीक युक्त 'सम्भव' नाम की व्यवस्था बनाई गयी है। यह मल्टी मॉडल तकनीक आधारित व्यवस्था विगत 02 वर्षों से मंत्री स्तर से लेकर स्थानीय अधिकारियों के स्तर पर संचालित है। लोकसभा चुनावों की अवधि को छोड़कर इस व्यवस्था के तहत दोनों विभागों में लगातार सभी स्तरों पर जनसुनवाई की जा रही है। इसके तहत दोनों विभागों में सभी प्रकार की शिकायतों का निस्तारण तत्काल किया जा रहा। प्रदेश की यह पहली ऐसी ऑनलाइन जनसुनवाई व्यवस्था है, जिसकी लोगों ने काफी प्रशंसा की है। लोगों को अब अपनी शिकायतों के समाधान के लिए अधिकारियों के दफ्तरों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते हैं।

'सम्भव' की इस व्यवस्था के तहत दोनों विभागों में अधिकारी स्तर पर साप्ताहिक एवं मन्त्री स्तर पर मासिक जनसुनवाई की जा रही है। लोगों की पहुँच को और आसान बनाने के लिए मंत्री स्तर की व्यवस्था को राज्य स्तर के साथ अब जिला एवं तहसील स्तर पर ले जाने के प्रयास किये गये है। अब मंत्री स्तर से होने वाली जिला/तहसील/क्षेत्रीय स्तर की जनसुनवाई के लिये पहले से ही अलग से तिथि निर्धारित की जायेगी। 'सम्भव' की इस व्यवस्था के तहत अब मंत्री स्तर का प्रथम स्थानीय कार्यक्रम मऊ जिले की सदर एवं मोहम्मदाबाद गोहना तहसील की जन शिकायतों के निस्तारण के लिए मऊ-आजमगढ़ रोड स्थित बड़ागांव के मंगलम बहुउद्देशीय भवन पर 19 जुलाई, 2024 दिन शुक्रवार को मंत्री द्वारा जनसुनवाई की जायेगी। जनसुनवाई में प्रत्यक्ष रूप से भागीदार बनने वाले शिकायतकर्ताओं की शिकायतों का पंजीकरण 19 जुलाई को सुबह 09 बजे से 11 बजे तक किया जायेगा। अपराह्न 11 बजे से 03 बजे तक सम्बन्धित अधिकारियों को उन शिकायतों पर कार्यवाही करने का समय दिया जायेगा। 19 जुलाई को ही अपराह्न 03 बजे से मंत्री जी द्वारा शिकायतकर्ताओं की उपस्थिति में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से शिकायतो के निस्तारण हेतु चर्चा एवं सुनवाई की जायेगी। जनसुनवाई में जो शिकायकर्ता प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं हो सकते, उन्हे ऑनलाइन उपस्थित रहने की सुविधा प्रदान की जायेगी। मंत्री स्तर पर होने वाली इस जनसुनवाई में ऊर्जा एवं नगर विकास विभाग से सम्बन्धित शिकायतों के निस्तारण के लिए लोग इस अवसर का लाभ उठायें। जनसुनवाई में ऑनलाइन अथवा प्रत्यक्ष रूप से शिकायतों को लेने की भी व्यवस्था की गयी है।

शिकायतकर्ता अपनी शिकायतें मंत्री जी के तेज पोर्टल जमरदमज.पद पर भी दर्ज करा सकते हैं अथवा ईमेल `उईंअचतहध्हउंपस.बवउ के माध्यम से भी भेज सकते हैं।

निदेशक व जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारियों के रिक्त पदों के सापेक्ष 19 अधिकारियों की नियुक्ति आदेश जारी

लखनऊ (आरएनएस) मुख्यमंत्री के अनुमोदन से निदेशालय सैनिक कल्याण एवं जिला सैनिक कल्याण अधिकारियों के 19 रिक्त पदों पर नियुक्ति आदेश जारी कर दिए गए हैं यह जानकारी अतिरिक्त निदेशक (पुनर्वास)ध्विंग कमाण्डर जितेन्द्र कुमार चौहान (अ0प्रा0) ने दी हैं।बताया है कि इस भर्ती प्रक्रिया को प्ररम्भ करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा हाल ही में उ0प्र0 में जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारियों के रिक्त पदों पर नियुक्ति किये जाने के लिये केन्द्रीय सैनिक बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा सशस्त्र सेनाओं के तीनों अंगों के सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारियों का पैनल तैयार करवाकर गत 11 जून से 13 जून 2024 को 134 अफसरों का साक्षात्कार लिया गया था। पैनल की अध्यक्षता समाज एवं सैनिक कल्याण के प्रमुख सचिव, डा0 हरिओम आई.ए.एस. द्वारा की गयी थी। अतिरिक्त निदेशक (पुनर्वास) ने बताया कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार सैनिकों और उनके परिवारजनों के कल्याण एवं पुनर्वास के लिये प्रतिबद्ध है तथा सैनिकों के प्रति संवेदनशील और सजग होकर निरन्तर कार्य कर रही है। उ0प्र0 सरकार ने यह सुनिश्चित् किया है कि पूर्व सैनिकों की समस्याओं को जिले स्तर पर त्वरित व प्राथमिकता पर निस्तारण कराया जाए, साथ ही साथ राज्य स्तर पर सैनिक कल्याण विभाग के रिक्त हो रहे निदेशक पद के लिये चयन प्रक्रिया जून माह में मुख्य सचिव की अध्यक्षता में पूर्ण की गई तथा माननीय मुख्यमंत्री जी के अनुमोदन से ब्रिगेडियर अतुल कुमार,सेना मेडल (अ0प्रा0)का चयन हुआ और उनके द्वारा 28 जून 2024 को निदेशक,सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास,उ0प्र0 का कार्यभार ग्रहण किया गया। उत्तर प्रदेश सबसे बड़ी जनसंख्या वाला प्रदेश है और लगभग 5 लाख पूर्व सैनिर्क इस राज्य में निवास कर रहे है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों में जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय स्थापित है।

20 यूपी गर्ल्स बटालियन एनसीसी ने 60वां स्थापना दिवस मनाया

लखनऊ (आरएनएस)। 1964 को 20 यूपी गर्ल्स बीएन एनसीसी की स्थापना हुई थी। 20 यूपी गर्ल्स बीएन एनसीसी, लखनऊ शुरू में 51 यूपी रिफ बीएन, लखनऊ में था, जिसे बाद में 1 यूपी गर्ल्स बीएन एनसीसी और 2 यूपी गर्ल्स बीएन एनसीसी के रूप में दो अलग-अलग बटालियनों में पुनर्गठित किया गया था। 2 यूपी गर्ल्स बटालियन एनसीसी को नया स्वरूप दिया गया और 20 यूपी गर्ल्स बटालियन के रूप में यूनिट में छह सीनियर विंग कम्पनी और तीन जूनियर विंग ट्रूप्स शामिल हैं। कुल 975 सीनियर विंग कैडेट और 255 जूनियर विंग कैडेट बटालियन के लिए अधिकृत हैं। आज की तारीख में बटालियन द्वारा कुल 20 संस्थानों को कवर किया जा रहा है। 18 जुलाई 2024 को 20 यूपी गर्ल्स बटालियन का स्थापना दिवस यूनिट परिसर में केक काटा कर मनाया गया। जिसमें सभी कॉलेज की एएनओ तथा सीटीओ भी शामिल हुए। सीओ कर्नल रत्नाकर त्रिवेदी ने एनसीसी स्टॉफ को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बटालियन ने गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 60 वर्ष पूरे किए हैं। एकता और अनुशासन की शिक्षा देते हुए सीओ ने एनसीसी कैडेट्स को जीवन में हमेशा आगे बढ़ते रहने के लिए लक्ष्य निर्धारित करने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि इस वर्ष एनसीसी दिवस मनाने की जिम्मेदारी 20 यूपी गर्ल्स बटालियन को दी गई है जिसे हम सब मिलकर बहुत अच्छे तरीके से पूरा करेंगे। इस मौके पर बटालियन के सुबेदार मेजर बल बहादुर राणा, ओम प्रकाश यादव के साथ अन्य पीआई स्टॉफ, सिविल स्टॉफ मौजूद रहें।

कृषि मंत्री ने किसान क्रेडिट कार्ड और फसल बीमा योजनाओं की समीक्षा बैठक की

लखनऊ (आरएनएस)रू उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही गुरुवार को प्रदेश में कार्यरत बैंक, बीमा कम्पनी और सीएससी के अधिकारियों के साथ किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) और फसल बीमा योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की।बैठक में किसान क्रेडिट कार्ड की समीक्षा करते हुए बैंक प्रतिनिधियों को निर्देश दिये गये कि 22 से 30 जुलाई 2024 तक विशेष अभियान चलाकर अधिक से अधिक किसानों के केसीसी बनवाए जाएं। इसके लिए बैंक शाखाओं पर बैनर और पोस्टर के माध्यम से किसानों को जागरूक किया जाएगा। सभी पात्र केसीसी धारक किसानों, जिन्होंने आप्ट-आउट फार्म नहीं भरा है, उनके खाते से 31 जुलाई 2024 तक प्रीमियम की कटौती करते हुए डेटा फसल बीमा पोर्टल पर अपलोड कराने को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। जिन किसानों के खाते से प्रीमियम की कटौती की गई है, उनकी सूची बैंक शाखा स्तर पर चस्पा की जाएगी। बैंक और बीमा कम्पनी आपस में समन्वय स्थापित करते हुए अधिक से अधिक किसानों को फसल बीमा योजना के अंतर्गत शामिल करने को कहा गया, ताकि किसी भी प्राकृतिक आपदा से फसल को नुकसान होने पर बीमा लाभ प्राप्त कर सकें। बीमा कम्पनियों के अधिकारियों को निर्देश दिये गये कि वे 22 से 30 जुलाई 2024 तक विशेष अभियान चलाकर अधिक से अधिक गैर ऋणी किसानों को बीमा के प्रति आकर्षित करते हुए उनका बीमा कराएं। इस बैठक में एसएलबीसी, संस्थागत वित्त, बैंक, सीएससी और बीमा कम्पनियों के अधिकारियों के साथ अपर मुख्य सचिव कृषि, डॉ. देवेश चतुर्वेदी, सचिव कृषि, अनुराग यादव, कृषि निदेशक, निदेशक, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, निदेशक, कृषि सांख्यिकी एवं फसल बीमा, और कृषि एवं उद्यान विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

वृक्षारोपण अभियान का हिस्सा बनकर सफल बनाएं

सभी लोग 'एक पेड़ मां के नाम' से लगाए धर्मपाल सिं

लखनऊ (आरएनएस) उत्तर प्रदेश के पशुधन,दुग्ध विकास एवं राजनीतिक पेंशन विभाग के कैबिनेट मंत्री धर्मपाल सिंह ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में 20 जुलाई को वृहद वृक्षारोपण जन अभियान 2024 का हिस्सा बनकर इसे सफल बनाएं। कहा कि इस वर्ष 'एक पेड़ मां के नाम' लगाए जाने का आह्वाहन प्रधानमंत्री द्वारा किया गया है और इस अभिनव संकल्प को हमें मिलकर पूरा करना है। हर नागरिक पौधरोपण करे और उसके रखरखाव की भी जिम्मेदारी उठाए। पशुधन मंत्री ने कहा कि पशुधन विभाग के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वह वृक्षारोपण हेतु विभाग के लिए निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप पौधरोपण कराना सुनिश्चित करें। प्रदेश में इस वर्ष का वृक्षारोपण का लक्ष्य 36.50 करोड़ रखा गया है। अभियान के तहत 7.26 लाख पौधे पशुपालन विभाग द्वारा लगाए जाएंगे। कहा कि हमें मात्र पौधे लगाकर ही जिम्मेदारी पूरी नहीं करनी है बल्कि लगाए गए पेड़ की देखभाल भी करनी है। श्री सिंह ने कहा कि पशु, पक्षी एवं पेड़ हमारी प्रकृति का अभिन्न अंग है और मानव जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। बढ़ती जनसंख्या और ग्लोबल वार्मिंग से तेजी से जलवायु परिवर्तन हो रहा है जिससे अनेक समस्या उत्पन्न हो रही हैं और अधिक से अधिक पेड़ लगाना ही एकमात्र उपाय और बचाव है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष वृक्षारोपण कार्यक्रम का अभियान मानव एवं प्रकृति के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण और सार्थक प्रयास है और इससे वनावरण में वृद्धि होगी

20 जुलाई को मुख्यमंत्री द्वारा किये जाने वाले पौधरोपण स्थल का वन मंत्री ने किया स्थलीय निरीक्षण

लखनऊ (आरएनएस)रूआगामी 20 जुलाई को प्रदेश भर में 36.46 करोड़ पौधों का रोपण किया जायेगा। इस महाभियान की शुरूआत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा लखनऊ के अकबर नगर में सौमित्र वन में पौधरोपण कर किया जायेगा। इस कार्यक्रम के दृष्टिगत प्रदेश के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्यमंत्री(स्वतंत्र प्रभार) डा0 अरूण कुमार सक्सेना ने आज अकबर नगर में आयोजित होने वाले कार्यक्रम का स्थलीय निरीक्षण किया और कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने हेतु अधिकारियों को उचित निर्देश भी दिए। वन मंत्री ने निरीक्षण के दौरान वन विभाग द्वारा रोपे जाने वाले पौधों को देखा तथा अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसी भी दशा में पौधों को रोपण के बाद पौधों की सुरक्षा के व्याजक इंतजाम किये जायें जहां आवश्यकता हो वहां ट्री गार्ड लगाकर पौधों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाये, किसी भी दशा में एक पौधा सूखना व नष्ट होना नहीं चाहिए। उन्होंने सौमित्र वन में आंवला, इमली, नीम, महुआ, पीपल, पाकड़, सागौन इत्यादि के पौधों को प्राथमिकता के आधार पर रोपित करने का निर्देश दिया।

उन्होंने कहा कि सौमित्र वन में जनता द्वारा दस हजार पौधो रोपित किये जायेगें, जिनकी सुरक्षा व देखभाल का पुख्ता इंतजाम वन विभाग के अधिकारियों द्वारा किया जायेगा। साथ ही पौधों को सिंचाई का भी विशेष ध्यान रखा जाये। निरीक्षण के दौरान मुख्य वन संरक्षक श्रीमती रेनू सिंह, प्रभागीय वनाधिकारी लखनऊ शितांशु पाण्डेय सहित वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

भाजपा सामाजिक सद्भाव की दुश्मन है अखिलेश यादव

लखनऊ (आरएनएस) समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सामाजिक सद्भाव की दुश्मन है। समाज का भाईचारा बिगाड़ने का वह कोई न कोई बहाना ढूंढ़ती रहती है। भाजपा का उद्देश्य समाज को बांटना और परस्पर सौहार्द को क्षति पहुंचाना होता है। भाजपा की इन्हीं विभाजनकारी नीतियों के चलते प्रदेश का सामाजिक वातावरण प्रदूषित हो रहा है।कांवड़ यात्रा को लेकर मुजफ्फरनगर पुलिस ने नया फरमान जारी किया है कि ठेले-ढाबे सहित सभी दुकानदार अपना नाम बाहर जरूर लिखें। इसके पीछे सरकार की मंशा अल्पसंख्यक वर्ग को समाज से अलग बांटने और उन्हें शक के दायरे में लाने की है। जिसका नाम गुड्डू, मुन्ना, छोटू या फत्ते है उसके नाम से क्या पता चलेगा? भाजपा सत्ता का दुरुपयोग हर स्तर पर करने में कतई संकोच नहीं करती है। वैसे भाजपा की नीति और नीयत दोनों विभाजनकारी हैं जिससे जनता पूरी तरह परिचित हो चली है। अब भाजपा की चालाकी को जनता अच्छी तरह पहचानने लगी है। वह चाहे जो हथकंडा अपना ले अब उसकी साजिशें कामयाब नहीं हो सकती है।

प्राइम डे से पहले, अमेजन ने अपने लोकल शाप्स प्रोग्राम के तहत पेश किये नए फीचर

'लखनऊ (आरएनएस)', उत्तर प्रदेश, 18 जुलाई, 2024रू अमेजन इंडिया ने लोकल शॉप्स प्रोग्राम में विक्रेताओं के जुड़ने की प्रक्रिया को सरल बनाने और अमेजन मोबाइल ऐप पर स्टोरफ्रंट आधारित दृष्टिकोण के साथ ग्राहकों के लिए खरीदारी के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए दो नए फीचर लॉन्च किए हैं। ये दो नए फीचर ठीक समय पर आए हैं, ताकि स्थानीय दुकानों के विक्रेताओं को भारत में अमेजन के 8वें प्राइम डे सेल समारोह के लिए तैयार होने में मदद मिल सके, जो 20 जुलाई और 21 जुलाई को आयोजित होने वाला है। हजारों स्थानीय दुकानों के विक्रेता आगामी प्राइम डे के लिए शानदार डील, क्यूरेटेड चयन और नए लॉन्च की पेशकश करने के लिए तैयार हो रहे हैं।अमेजन सेलर मोबाइल ऐप पर 1-क्लिक 'लोकल शॉप्स ऑन अमेजन' विक्रेता ऑनबोर्डिंग अनुभव एक महत्वपूर्ण कमी को दूर करता है, जिसका सामना विक्रेताओं को पहले करना पड़ता था यानी, इस लॉन्च से पहले, विक्रेताओं को प्रोग्राम में नामांकन के लिए अपने डेस्कटॉप पर सेलर सेंट्रल पर जाना पड़ता था। इस लॉन्च के साथ, उत्तर प्रदेश और पूरे भारत में नए विक्रेता अब बस एक क्लिक के जरिए मोबाइल ऐप के जरिए प्रोग्राम में शामिल हो सकते हैं, जिससे उनके शहर में 2-दिन की डिलीवरी संभव हो सकेगी। यह सुविधा उन विक्रेताओं के लिए भी उपलब्ध है, जिन्होंने पहले इस कार्यक्रम से बाहर निकलने का विकल्प चुना था और अब वे अपने शहर में ग्राहकों को अपने उत्पाद बेचना चाहते हैं। 1-क्लिक बटन अब ऐप पर हेल्प झ लोकल शॉप्स के अंतर्गत हमेशा उपलब्ध है, जिससे इसे ढूंढना आसान हो जाता है।दूसरे अपग्रेड से अमेजन.इन मोबाइल ऐप पर सेलर स्टोरफ्रंट बेहतर बना है। बेहतर सेलर स्टोरफ्रंट, अमेजन. इन पर सभी विक्रेताओं के लिए उपलब्ध है और उन्हें अपना स्थान (इलाका और शहर) दिखाने और सोशल शेयरेबिलिटी बटन के साथ फेसबुक, व्हाट्सऐप और इन्स्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म पर अपने स्टोरफ्रंट को साझा करने में मदद करता है, ताकि ज्यादा ट्रैफिक आए। ग्राहक अपनी पसंदीदा दुकानों को दोस्तों और परिवार के साथ भी साझा कर सकते हैं, जिससे उन्हें अमेजन पर अनोखी स्थानीय दुकानें खोजने में मदद मिलती है। स्टोरफ्रंट प्रत्येक ग्राहक के लिए सेलेक्शन को गतिशील रूप से क्यूरेट करता है, हर विक्रेता की पेशकश के आधार पर उत्पादों को रेकोमेंडेड, लेटेस्ट अरायवल और बेस्ट सेलर जैसी श्रेणियों में छांटता है। विक्रेता अपनी दुकान का नाम, इलाकाध्शहर भी कस्टमाइज कर सकते हैं

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, शुक्रवार 19 जुलाई 2024
sheelshukla100@gmail.com

कावड़ यात्रा को लेकर तैयारियाँ पूर्ण, श्रद्धालुओं के लिए सड़क पूरी तरीके से तैयार।

सुल्तानपुर –कांवड़ यात्रा 22 जुलाई से 2 अगस्त तक शुरू होनी है।जिसको लेकर योगी सरकार के निर्देश के बाद कांवड़ यात्रा को सुगम और सुरक्षित बनाने के लिए सभी जनपदों में प्रशासन ने रोड मैप तैयार किया हैं। इसके लिए प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश जारी किए हैं। इसी को लेकर सुल्तानपुर जनपद में पीडब्ल्यूडी विभाग खंड तीन भी कावड़ यात्रा को लेकर पूरा मुस्तैद हैं। पीडब्ल्यूडी खंड तीन के अधिशासी अभियंता रवींद्र सिंह आर्य का कहना है कि बनारस रोड़ गड्ढा मुक्त हैं। कही कोई भी समस्या नही है सड़क पूरी तरीके से साफ सुथरी हैं और कावड़ यात्रा पर श्रद्धालुओं के लिए पूरी तरीके से तैयार है।

शिक्षक शिक्षा मित्र कर्मचारी संयुक्त मोर्चा से जिलाधिकारी ने की वार्ता

मथुरा जैसा कि विदित है कि शिक्षक शिक्षा मित्र अनुदेशक कर्मचारी संयुक्त मोर्चा द्वारा डिजिटाइजेशन एवं ऑनलाइन उपस्थिति के विरोध में किए जा रहे हैं आंदोलन की श्रंखला में 15 जुलाई को जनपद के हजारों शिक्षकों ने अभूतपूर्व प्रदर्शन कर जिलाधिकारी को दिए गए ज्ञापन के कार्यक्रम से सरकार को झुकना पड़ा तथा शासन के निर्देश पर जिलाधिकारी द्वारा संयुक्त मोर्चा के सभी पदाधिकारी को वार्ता हेतु पत्र निर्गत कर आमंत्रित किया गया। संयुक्त मोर्चा के सभी शिक्षक प्रतिनिधि जिलाधिकारी की वार्ता में उपस्थित हुए जिसमें संयुक्त मोर्चा द्वारा जिलाधिकारी महोदय को स्पष्ट किया गया कि शिक्षक दो महीने की ऑनलाइन उपस्थिति के स्थगित आदेश पर अपने आंदोलन को समाप्त नहीं करेंगे क्योंकि शिक्षकों की मुख्य समस्या ऑनलाइन उपस्थिति नहीं है। यूनाइटेड टीचर्स एसोसिएशन, यूटा के जिलाध्यक्ष अंशुल गौतम ने कहा कि शिक्षकों को अर्जित अवकाश हाफ डे अवकाश प्रधानाध्यापक के पदोन्नति,अंतर्जनपदीय स्थानांतरण,शिक्षामित्र और अनुदेशकों को समान कार्य के लिए समान वेतन देने शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्यों से मुक्त करने विद्यालयों में समस्त संसाधन उपलब्ध कराए जाने तथा पुरानी पेंशन बहाल करने और ऑनलाइन उपस्थिति के पूर्णतया अव्यवहारिक अध्यापक सेवा नियमावली के विपरीत अध्यापकों को प्रताड़ित करने के उद्देश्य से जारी किए गए तुगलकी आदेश को निरस्त होने तक संयुक्त मोर्चा द्वारा अनवरत आंदोलन जारी रखा जाएगा।

जिलाधिकारी ने शिक्षकों से कहा कि आपकी सभी मांगे जायज हैं और इनमें से कुछ मांगों को पूर्ण करने का प्रयास मेरे द्वारा किया जाएगा शेष मांगों के लिए शासन को अवगत कराया जाएगा। उन्होंने शिक्षकों से कहा कि मेरा कभी विद्यालयों में आकस्मिक निरीक्षण कर अध्यापकों को प्रताड़ित करने का उद्देश्य नहीं होता सभी अध्यापक मथुरा जनपद में अच्छा शिक्षण कार्य कर रहे हैं साथ ही उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया के शिक्षा के लिए वे और बेहतर प्रयास करें जिससे हमारे विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को संस्कार युक्त एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके उन्होंने संयुक्त मोर्चा के समक्ष ही संबंधित अधिकारियों को शिक्षकों की सीसीएल स्वीकृत करने रुके हुए वेतन को निर्गत करने तथा मुड़िया पूर्णिमा के दिन गोवर्धन विकासखंड में अवकाश करने के निर्देश प्रदान किए।

जिलाधिकारी वार्ता में संयुक्त मोर्चा के में शामिल यूनाइटेड टीचर्स एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष अंशुल गौतम,जिलामंत्री प्रशान्त सारस्वत,उत्तर प्रदेशीय जूनियर हाई स्कूल शिक्षक संघ के प्रांतीय उपाध्यक्ष देवेंद्र सारस्वत जिला अध्यक्ष अतुल सारस्वत जिला मंत्री लक्ष्मी नारायण जिला कोषाध्यक्ष मनोज शर्मा राजीव पचौरी हरीश चौधरी राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की अध्यक्ष अंजना शर्मा कार्यवाहक अध्यक्ष हेमराज सिंह मंत्री इंद्रपाल सिंह टी एस सी टी के योगराज सिंह चाहर जिला अध्यक्ष गोविंद सिंह चौहान मंत्री गिरीश कौशिक प्राथमिक शिक्षक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष गौरव यादव मंत्री बलबीर सिंह विशिष्ट बीटीसी वेलफेयर एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष रविंद्र चौधरी उपाध्यक्ष बृजेश शर्मा शिक्षामित्र संघ के जिला अध्यक्ष खेम सिंह चौधरी दुष्यंत सारस्वत दीपक गुप्ता अनुसूचित जाति शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष अशोक प्रियदर्शी अटेवा की जिला संयोजक प्रदीपिका फौजदार यूटा के जिलाध्यक्ष चंद्र शेखर सहित अन्य संघ के अनेकों पदाधिकारी उपस्थित रहे ।

कर्बला मे जुल्म की इम्तेहा हुई–मौलाना

सुल्तानपुर(आरएनएस)। गोसाईंगंज वक्फ्फ इमाम बाड़ा हयातनगर मे 11मोहर्रम की मजलिस कायम मेंहदी की जानिब से हुई मजलिस को खेताब करते हुये मौलाना बाकर सज्जाद जैदी ने कहा 11मोहर्रम के दिन असीराने हरम को शोहदा के लाशों से गुजारा गया और बीबियो के हाथ रस्सीयो से बंधे हुये थे और इमाम हुसैन की बेटी सकीना जो 4साल की थी जिसे अपने बाबा के सीने के बगैर नींद नहीं आती थी उस बच्ची को ऊंट की पीठ पर रस्सीयों से जकड़कर बांध दिया गया था और जालिमो ने बच्ची पर रहम ना किया सकीना पुकारती रही बाबा बचा लो भैया बचा लो लेकिन एक भाई है जो बहन की आवाज सुनकर तड़प गया लेकिन वो इतना मजबूर है जिसके हाथों मे हाथकड़ी और पैरो मे बेड़ी और कमर मे खारदार तौक है इस तरिके से बीमारे कर्बला को शोहदा के लाशों गुजारकर कुफा ले जाया गया मौलाना मे कहा कर्बला मे जुल्म की इम्तेहा हुई मजलिस के बाद अंजुमन जाफरिया कोटवा, और अंजुमन असगरिया ने नौहा मातम किया।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष से पवन यादव ने की भेंट

सुल्तानपुर(आरएनएस)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव एवं अयोध्या से सांसद अवधेश प्रसाद से समाजवादी पार्टी लखनऊ में समाजवादी पार्टी के युजन सभा के प्रदेश सचिव पवन यादव लम्भुआ 190 विधानसभा के बारे में चर्चा करने के सम्बन्ध गये थे और कुछ खास चर्चा किये। और भेंट करके आशीर्वाद लिये और लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को उत्तर प्रदेश में

मिली सबसे बड़ी जीत की बधाई एवं शुभकामनाएं दिये। हम सभी समाजवादी पार्टी के साथियों का विस्वास एवं भरोसा है आगामी 2027 के उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव आपके नेतृत्व में समाजवादी पार्टी फिर से सरकार बनायेगी और उत्तर प्रदेश की करोड़ें जनता की उम्मीदें को पूरा करेंगी सपा सरकार और उत्तर प्रदेश में बहुत बड़ी बेरोजगारी बढ़ी हुई है और आये दिन सारे भार्ती के पेपर लीक पर लीक हो रहें है। इस तरह से युवाओं का भविष्य खराब हो जा रहा है और ओवर ऐज होते चले जा रहें हैं। उनके बारे में कोई सोचने का नाम भी नहीं ले रहा है ।

पुलिस–प्रशासन ने कृपा निधान तिवारी को लखनऊ जाने से रोका

-सीओ अयोध्या को सौंपा ब्राह्मण उत्पीड़न का मुख्यमन्त्री को सम्बोधित ज्ञापन

अयोध्या (आरएनएस)। अखिल भारतीय चाणक्य परिषद के राष्ट्रीय संरक्षक एवं श्री श्री परशुराम सेवा ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष देशभर के ब्राह्मण संगठनो अखिल भारतीय संयुक्त ब्राह्मण संघर्ष समिति के संयोजक कृपा निधान तिवारी अपने आवास पर 17 जुलाई की रात 9:00 बजे से पुलिस द्वारा हाउस अरेस्ट कर लिए गए और जैसे ही वह अपने पूर्व निर्धारित लखनऊ के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक के आवास पर पहुंच कर प्रदेश के ब्राह्मण के उत्पीड़न के खिलाफ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को सम्बोधित ज्ञापन देने की तैयारी में घर से अपनी टीम और वाहनो के साथ निकले तो थाना पूरा कलंदर पुलिस ने रोक लिया। देश में ब्राह्मणों का झंडा बुलंद कर उनकी आवाज बने पंडित कृपा निधान तिवारी हाथरस मे ब्राह्मण योगेश उपाध्याय की हत्या के बाद परिवार की मदद और इसमें सहयोग करने वाले प्रदेश के पुलिस अधिकारी डीआईजी जुगल किशोर तिवारी के निलंबन सहित पांच मांगों को लेकर लखनऊ जाने की तैयारी में थे। उनकी मांगो को मांगने और विचार करने को कौन कहे प्रदेश प्रशासन द्वारा उनकी आवाज दबाने का अनुचित प्रयास किया जा रहा है। जिसकी देश का ब्राह्मण समाज घोर निंदा कर रहा है।पूरे देश में वर्तमान केंद्र व प्रदेश की सरकार द्वारा ब्राह्मणों के लगातार उत्पीड़न के प्रभाव से भी सरकार सबक नहीं लेना चाह रही है। यदि जल्द ही उपरोक्त मांगों पर विचार नहीं किया गया तो पूरे प्रदेश का ब्राह्मण एकजुट होकर इस दमनात्मक रवैया का जबरदस्त विरोध करेगा। ब्राह्मण नेता के औपचारिक पुलिस अरेस्ट से देश के ब्राह्मण संगठनों मे आक्रोश व्याप्त हो गया है और इस तरह से लोकतंत्र में जनता की आवाज दबाने की सर्वत्र एक स्वर से निंदा हो रही है। ब्राह्मणों का बढ़ता विरोध देखकर पुलिस प्रशासन ने आनन फानन में सीओ अयोध्या आशुतोष तिवारी ने ब्राह्मणो के नेता पंडित कृपा निधान तिवारी का ज्ञापन लिया। इस अवसर पर चाणक्य परिषद के राष्ट्रपति पुरस्कृत शिक्षक चाणक्य द्वारा के संपादक डॉक्टर राम तेज पांडे पूर्व जिला कोषाध्यक्ष बाबूराम पांडे जिला महामंत्री लखपति त्रिपाठी जिला लेखा परीक्षक उमाशंकर तिवारी जिला संगठन मंत्री विक्रमजीत तिवारी मसेढ़ा बालक अध्यक्ष अशोक तिवारी महामंत्री कृष्ण कुमार तिवारी पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष विनोद तिवारी जिला कार्यकारी सदस्य देवी प्रसाद दुबे देवेंद्र पांडे अजना श्रीकांत पाठक अश्वनी तिवारी रामकृष्ण तिवारी जयप्रकाश तिवारी अंगद तिवारी अजीत तिवारी आदि भारी संख्या में परिषद के नेता वह कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कांग्रेसियों का विरोध प्रदर्शन बोकस राजनीति की तरफ दे रहा इशारा–सर्वेश

गोवंशो के मौत मामला लेकर कांग्रेसियों का हुआ प्रदर्शन

सुल्तानपुर(आरएनएस)। कांग्रेसी अपनी राजनीति चमकाने के लिए बोकस हथकंडा अपना रहे हैं। जब राष्ट्रीय गौ रक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ पहले ही गौशाला में लापरवाही से गोवंश के मौत का मामला जिला प्रशासन के सामने रखकर कार्यवाही करवा दिया है। संगठन ने जिला प्रशासन के सहयोग से रात में ही शव का दफन कराकर लापरवाह गौशाला संरक्षक, क्षेत्रीय प्रधान, सफाई कर्मी, केयरटेकर के खिलाफ कार्यवाही करवा दिया, तो अब कांग्रेस की राजनीति नहीं तो क्या है।मामला लंभुआ विकासखंड के खुनशेखपुर से जुड़ा है। राष्ट्रीय गौ रक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ के प्रदेश प्रभारी सर्वेश कुमार सिंह ने गौ संरक्षण के प्रति कांग्रेस के विरोध प्रदर्शन को बोगस की राजनीति बताया है, बिना मुद्दे की राजनीतिक पार्टी कांग्रेस अपना आवाज मुखर कर रही है। उन्होंने अपने दो टूक शब्दों में कहा कि अगर कांग्रेस के मुखिया राहुल गाधी सच्चे सनातन धर्म की रक्षा करना चाहते हैं और गौ माता को जीवन दायिनी मानते हैं तो सदन में क्यूं नहीं गौ माता को राष्ट्र माता घोषित करने की आवाज उठाएं। और गौ माता के साथ अत्याचार करने वालों को फांसी दी जाए कांग्रेस पार्टी इसकी आवाज उठाए,साथ ही गौ माता का सम्मान सदा बना रहे। गौमाता सनातन की देवी है इसलिए उनका पूजन भी किया जाए। प्रदेश प्रभारी सर्वेश कुमार सिंह ने कहा की गौ रक्षा वाहिनी के प्रयास से ही चिकित्सा विभाग द्वारा मजबूर होकर डॉक्टर की 24 घंटे ड्यूटी लगाई गई, जिससे बेजुबान पशुओं को कोई दिक्कत ना हो। गौ माता और नंदी महाराज को कोई दिक्कत ना हो, साथ ही वोदरा, हयात नगर, खुनशेखपुर में मृत गौमाता को मौके पर पहुंचकर गौ रक्षा वाहिनी ने गौमाता को समाधि भी दिलाई और यहां भी प्रशासन से मांग की कोई भी गौमाता मृत होती है उनको तुरंत प्रभाव से समाधि दिलाई जाए। उनका सम्मान किया जाए क्योंकि गौ माता सनातन की देवी है उनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है उन्होंने कहा गौमाता की सेवा होनी चाहिए न की राजनीति, उन्होंने कहा कि हम कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा का सम्मान करते है क्योंकि वो हर मुद्दे पर सक्रिय रहते हैं। कांग्रेसियों ने जिला प्रशासन पर आरोप लगाते हुए कहा है कि गौ शाला की लापरवाही चरम पर है गोवन्शो की मौत को छिपाया जाता है। अभी हाल में कई गोवंश इस गौशाला में मृत पाए गए, लेकिन औपचारिकता पूरी करते हुए जिम्मेदार अफसर की जबावदेही तय नहीं हुई। कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा की अगुवाई मे डीएम को ज्ञापन भी दिया। वर्तमान समय में जनपद की समस्त गौशालाओं में गायों की हो रही मौत व गौ माता के ऊपर हो रहे अत्याचार को लेकर जिला मुख्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव व जोनल प्रभारी योगेंद्र मिश्रा और उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव अर्जुन पासी भी शामिल रहे। कांग्रेसियों ने कहा कि डीएम को गौ शालाओं का निरीक्षण कर व्याप्त खामियों पर कार्यवाही करनी चाहिए। अन्यथा गोवंशों की मौत का सिलसिला रुकने नहीं वाला है। महामंत्री राष्ट्रीय गौ रक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ के महामंत्री जयशंकर दुबे ने कांग्रेसियों के विरोध प्रदर्शन पर तीखा सवाल दागा है। उन्होंने कहा कि सिर्फ राजनीति चमकाने का यह कांग्रेसियों का विरोध प्रदर्शन हो रहा है। जिला प्रशासन ने गौ रक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ की शिकायत पर पहले ही लापरवाह गौशाला के कर्मचारियों पर कार्रवाई कर चुका है। यह विरोध प्रदर्शन महज कांग्रेसियों का एक दिखावा है।

उत्तर प्रदेश प्रधानाचार्य परिषद की नवीन कार्यकारिणी गठित

अयोध्या (आरएनएस)। उत्तर प्रदेश प्रधानाचार्य परिषद के सत्र 2024–25 की प्रथम आम सभा बैठक गुरुवार को शहर के एसएसवी इंटर कॉलेज में संपन्न हो गई। बैठक में नवीन कार्यकारिणी का गठन करने के साथ ही कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई।बैठक की अध्यक्षता निवर्तमान जिला अध्यक्ष डॉ. राम सुरेश मिश्र ने की। बैठक में सर्वसम्मति से जिला अध्यक्ष पद पर डॉ. मणि शंकर तिवारी और जिला मंत्री पद पर एक बार फिर से रामप्रिय शरण सिंह को चुना गया। इसके साथ कार्यकारी अध्यक्ष पद प्रदीप कुमार वर्मा, कोषाध्यक्ष पद डॉ. उदय भान सिंह, संगठन मंत्री पद अशोक कुमार तिवारी, आय व्यय निरीक्षक पद अखिलेश कुमार उपाध्याय और संरक्षण मंत्री पद जितेंद्र कुमार राव को सौंपा गया। नवीन कार्यकारिणी में छह उपाध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण मिश्रा (सदर), डॉ. केके यादव (रुदौली), डॉ. रमेश कुमार मिश्रा (मिल्कीपुर), सुनील कुमार द्विवेदी (गोसाईंगंज), श्रीमती नीलम श्रीवास्तव (महिला पद), डॉ. रामकृष्ण पांडेय (सोहावल), भोपाल सिंह (बीकापुर) सहित संयुक्त मंत्री संजीव चतुर्वेदी, रूही पाल, राम मूर्ति पटेल, डॉ राजेश कुमार सिंह, व रियाल अहमद बनाए गए हैं। कार्यकारिणी में श्रीमती ममता निषाद, गोविंद माधव त्रिपाठी, पीएन सिंह, अमित कुमार सिंह, राजेश कुमार, सरोज कुमार दुबे, रामकृपाल व उदयभान तिवारी को सदस्य के तौर पर शामिल किया गया है। सलाहकार समिति का दायित्व हरीबक्श सिंह, देवी प्रसाद वर्मा, तिलकधारी सिंह व अशोक कुमार तिवारी संभालेंगे जबकि डॉ. वीरेंद्र कुमार त्रिपाठी और डॉ. राम सुरेश मिश्रा को कार्यकारिणी का संरक्षक बनाया गया है। मीडिया प्रभारी का उत्तरदायित्व अवनींद्र कुमार श्रीवास्तव व संजीव कुमार द्विवेदी को दिया गया। बैठक में अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य के विदाई समारोह पर भी विस्तार से चर्चा हुई। 24 अगस्त की तिथि का निर्धारण किया गया। निर्णय लिया गया कि एसएसवी इंटर कॉलेज में नेशनल हायर सेकेंडरी स्कूल रुदौली के अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य अनिल श्रीवास्तव, भरत इंटर कॉलेज नंदीग्राम के अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य अवधेश प्रताप तिवारी, किसान इंटर कॉलेज बनकटा के अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य भानु प्रताप यादव सहित पंडित माता प्रसाद त्रिपाठी राजकरण वैदिक पाठशाला के नवनियुक्त प्रधानाचार्य डॉ. शिवकुमार मिश्र, भरत इंटर कॉलेज नंदग्राम के प्रधानाचार्य मनोज कुमार वर्मा, किसान इंटर कॉलेज बनकटा के प्रधानाचार्य राम तीरथ यादव और नेशनल हायर सेकेंडरी स्कूल रुदौली के प्रधानाचार्य रामकृष्ण वर्मा का स्वागत और सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। बैठक में संगठन एवं प्रधानाचार्यों की समस्याओं पर भी विचार विमर्श हुआ। विकास शुल्क, शिक्षण शुल्क, सरकार के आदेश सहित कई प्रमुख बिंदुओं पर विमर्श हुआ। निर्णय लिया गया कि जल्द ही प्रदेश सरकार के मुखिया से मिलकर परिषद उन्हें प्रधानाचार्यों की समस्या से अवगत कराएगा।

सी.एम.एस. छात्र को 1,20,000 अमेरिकी डॉलर की स्कॉलरशिप

लखनऊ, 18 जुलाई। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, राजाजीपुरम प्रथम कैम्पस के छात्र नित्यम सिंह को उच्चशिक्षा हेतु अमेरिका की सेंट लुईस यूनिवर्सिटी द्वारा 1,20,000 अमेरिकी डॉलर की स्कॉलरशिप से नवाजा गया है। नित्यम को यह स्कॉलरशिप चार वर्षीय उच्चशिक्षा की अवधि के दौरान प्रदान की जायेगी। सी.एम.एस. छात्र ने इस सफलता का श्रेय विद्यालय के अपने शिक्षकों व विद्यालय के शान्तिपूर्ण शैक्षिक वातावरण को दिया है। सी.एम.एस. प्रबन्धक, प्रो. गीता गाँधी किंगडन ने सी.एम.एस. छात्र की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उसके उज्जवल भविष्य की कामना की है। सी.एम.एस. एस.ए.टी. (सैट) एवं एडवान्स प्लेसमेन्ट (ए.पी.) टेस्ट सेन्टर भी है जो उत्तर प्रदेश एवं आसपास के अन्य राज्यों के छात्रों को विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में स्कॉलरशिप के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध करा रहा है।प्रतिवर्ष भारी संख्या में सी.एम.एस. छात्र विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में उच्चशिक्षा हेतु चयनित होते हैं। इस वर्ष अभी तक सी.एम.एस. के 90 से अधिक छात्रों ने अमेरिका, इंग्लैण्ड, कैनडा, आस्ट्रेलिया, जापान, सिंगापुर, जर्मनी आदि विभिन्न देशों के ख्यातिप्राप्त विश्वविद्यालयों जैसे कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, कैलीफोर्निया इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (कैलटेक), मैसाचुसेट्स इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एम.आई.टी.), स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी, कार्नेल यूनिवर्सिटी, मेलबर्न यूनिवर्सिटी एवं नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर आदि में स्कॉलरशिप के साथ चयनित होकर लखनऊ का नाम रोशन किया है।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय आज आयेंगे अयोध्या

अयोध्या (आरएनएस)। शुक्रवार 19 जुलाई को कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय का अयोध्या आगमन होगा।उक्त जानकारी देते हुए जिला कांग्रेस प्रवक्ता सुनील कृष्ण गौतम ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष अजय राय फैजाबाद जेल में निरुद्ध जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अखिलेश यादव से मुलाकात करने आ रहे हैं। जिला प्रवक्ता सुनील कृष्ण गौतम ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष अजय राय दोपहर 12:30 बजे फैजाबाद जेल पहुंचेंगे, उसके बाद 1:30 बजे पूर्व सांसद डॉक्टर निर्मल खत्री के बजाजा स्थित आवास पर पहुंच कर उनसे मुलाकात करेंगे।

युवती को सांप ने डंसा, इलाज के दौरान मौत

मिल्कीपुर–अयोध्या (आरएनएस) । शाहगंज पुलिस चौकी क्षेत्र के पंडरी पूरे जालिम गांव में रात में तख्त पर सो रही 18 वर्षीय युवती नेहा पाल पुत्री जग मिलन पाल को सांप ने काट लिया। जानकारी होने के बाद परिजन इलाज के लिए जिला अस्पताल ले गए। जहां पर इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतक युवती के परिजनों की माने तो रात करीब 2:30 नेहा तख्त पर सो रही थी तभी किसी जंतु ने काट लिया। नेहा चिल्ला कर उठी तो बगल में सो रही छोटी बहन मोनिका के पास सांप जा पहुंचा जिसको देखकर मोनिका तख्त से कूद गई और चिल्लाने लगी। जब तक परिवार के अन्य सदस्य उठे तब तक सांप दीवार में घुस गया। परिवार के सदस्य नेहा को उपचार के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया जहां पर डॉक्टरों द्वारा इलाज शुरू किया गया। लेकिन मौत हो गई डॉक्टरों का कहना था कि काफी समय हो गया जिसके चलते जहर पूरे शरीर में फैल गया था। घटना के बाद से परिवार में कोहराम मचा हुआ है। परिजनों के अनुसार विषैला सांप अभी घर में ही मौजूद है जिसे परिवार में भय का माहौल बना हुआ है।

युवती ने फांसी लगाकर की आत्महत्या, पुलिस जांच में जुटी

मिल्कीपुर–अयोध्या (आरएनएस)। खंडासा थाना क्षेत्र के अंजरौली गांव में 19 वर्षीय युवती का शव उसके घर के ही कमरे में फांसी पर लटका पाया गया है घटना की जानकारी पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने युवती का शव फंदे से नीचे उतरवा कर पंचायत नामा कराने के उपरांत पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया है। अंजरौली गांव निवासी रामचरण पासी बुधवार को डेयरी पर दूध देने गए थे। उनकी पत्नी और घर के बच्चे खेत में धान रोपाई कर रहे थे। घर पर उनकी 19 वर्षीय बेटी कुमारी रीना ही मौजूद थी। वह डेयरी पर दूध देकर लगभग 10:00 बजे अपने घर वापस लौटे तो देखा कि कमरे की छत में लगे फैन हुक से रस्सी के सहारे उनकी बेटी रीना फांसी पर लटकी हुई है। उन्होंने गुहार लगाते हुए रोना चिल्लाना शुरू कर दिया। थोड़ी ही देर में भारी संख्या में ग्रामीण मौके पर एकत्र हो गए और 112 नंबर डायल कर पीआरबी पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने युवती का शव फंदे से नीचे उतरवाया, किंतु उसकी मौत हो चुकी थी। घटना की जानकारी पाकर थानाध्यक्ष विवेक कुमार सिंह भी पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे और उन्होंने युवती का शव कब्जे में लेकर विधिक कार्यवाही शुरू कराई। पुलिस ने कमरे में गहन छानबीन की, किंतु कुछ भी पुलिस के हाथ नहीं लग सका है। फिलहाल पुलिस घटना की गहन जांच पड़ताल में जुटी है। हालांकि पुलिस घटना को प्रथम दृष्टया आत्महत्या मानकर चल रही है।

चार युवक गिरफ्तार, दो पिस्टल व दो देसी तमंचा बरामद

मिल्कीपुर–अयोध्या (आरएनएस)। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा सक्रिय अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत खंडासा पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। थानाध्यक्ष विवेक कुमार सिंह के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने चार शातिर युवकों को दो पिस्टल एवं दो अवैध तमंचों के साथ रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए चारों युवकों के खिलाफ पुलिस ने मुकदमा दर्ज करते हुए उन्हें जेल भेज दिया है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक खंडासा थाने के उपनिरीक्षक सुधीर कुमार पुलिस टीम के साथ चेकिंग कर रहे थे इसी बीच संदिग्ध व्यक्ति वाहन में दिखाई दिए। थाना क्षेत्र स्थित जाफरनगर तिराहे के पास पुलिस टीम ने उन्हें पकड़ लिया उनकी तलाशी ली। पुलिसिया पूछताछ के दौरान पकड़े गए युवकों ने अपना नाम सिरताज अहमद पुत्र मो दरगाही निवासी अस्थाना पूरे रसौली, दीपचंद पुत्र मिश्रीलाल निवासी नंदपुर थाना को अयोध्या, सलमान खान पुत्र मो जावेद निवासी मेहदौना और अरशद पुत्र नजर मोहम्मद निवासी मेहदौना बताया।

पूछताछ में दोनों युवकों ने दूकान में चोरी की वारदात को किया कबूल

अयोध्या (आरएनएस)। जिले की थाना महराजगंज के पुलिस चौकी पूराबाजार की पुलिस ने भोर में गस्त के दौरान राजेपुर के पास भागीरथी महाविद्यालय के मोड़ पर संदिग्ध अवस्था में मुंह छुपा कर भाग रहे दो युवकों को धर दबोचा। पुलिसिया पूछताछ के बाद दोनों युवकों ने 13–14 जुलाई की रात्रि विष्णु गुप्ता के दुकान के शटर तोड़ कर किए गए चोरी की वारदात को कबूल किया।

संपादकीय

आम लोगों को तगड़ा झटका

खुदरा महंगाई के बाद अब थोक महंगाई ने भी आम लोगों को तगड़ा झटका दिया है। जून महीने में खुदरा महंगाई दर बढ़कर 5.08 फीसद पर पहुंच गई थी जो चार महीने का उच्चतम स्तर है।अब थोक महंगाई ने भी लगातार चौथे महीने बढ़त दिखाई है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि थोक महंगाई बढ़ने की मुख्य वजह खाद्य पदाथरे, कच्चे तेल तथा प्राकृतिक गैस, खनिज तेल तथा अन्य विर्निमित वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि रही। गौरतलब है कि थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित महंगाई मई में 2.61 फीसद के स्तर पर थी। जून, 2023 में यह शून्य से 4.18 फीसद नीचे रही थी। फरवरी, 2023 में यह 3.85 फीसद थी।

खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर जून में 10.86 फीसद बढ़ी जबकि मई माह में यह 9.82 फीसद थी। सब्जियों की महंगाई दर जून में 38.76 फीसद रही जो मई माह में 32.42 फीसद थी। प्याज की महंगाई दर 66.37 फीसद रही जबकि आलू की महंगाई दर 66.37 फीसद रही। दालों में भी 21.64 फीसद की बढ़त दर्ज की गई। फलों, अनाज, दूध आदि अन्य खाद्य पदाथरे के दामों में भी बढ़त का रुझान रहा। दरअसल, जून माह में थोक दामों में बढ़ोतरी व्यापक रही।

ईधन और बिजली को छोड़कर सभी प्रमुख क्षेत्रों में दाम बढ़े। बेशक, जुलाई माह में कुछ राहत मिलने के अनुमान है। अनुकूल तुलनात्मक आधार के साथ–साथ वैश्विक जिंस कीमतों में कुछ नरमी के कारण जुलाई माह में थोक महंगाई में दो फीसद तक नरमी आने की उम्मीद अर्थशास्री जतला रहे हैं। अलबत्ता, नरमी की संभावना को कच्चे तेल के दामों में अस्थिरता से झटका लग सकता है।

जुलाई माह में कच्चे तेल के दामों में अस्थिरता के चलते मांग–आपूर्ति के मद्देनजर मासिक आधार पर कच्चे तेल में वृद्धि का रुझान देखने को मिला तो थोक महंगाई पर दबाव बढ़ सकता है। बेशक, थोक महंगाई में बढ़त का रुझान केंद्रीय बैंक को उतना चिंता में नहीं डालता जितना खुदरा महंगाई का रुझान।

भारतीय रिजर्व बैंक मौद्रिक नीति तैयार करते समय मुख्य रूप से खुदरा मुद्रास्फीति को ध्यान में रखता है। लेकिन यह भी सच है कि थोक दामों का असर भी खुदरा महंगाई पर कुछ समय बाद दिखलाई पड़ने लगता है। फिर, धारणा से भी निश्चित ही आर्थिक गतिविधियां प्रभावित होती हैं, जिससे इनकार नहीं किया जा सकता। बहरहाल, कर संग्रह आदि आर्थिक संकेतक मजबूत हैं, जिससे दामों के सीजनल दबावों से पार पाने में मदद मिलेगी।

छोटे किसानों के हितों की रक्षा

न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी की कानूनी गारंटी और कृषि ऋण माफी सहित अन्य मांगों को लेकर किसान आंदोलन फिर शुरू किया जाएगा।संयुक्त किसान मोर्चा में शामिल अलग–अलग किसान संगठनों का कहना है कि वे प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता, लोक सभा और राज्य सभा के सदस्यों को ज्ञापन सौंपेंगे। इस बार दिल्ली कूच करने की बजाय देशव्यापी विरोध की तैयारी कर रहे हैं। महाराष्ट्र, झारखंड, जम्मू–कश्मीर और हरियाणा को वे प्रमुखता देंगे।

इन राज्यों में जल्द ही विधानसभा चुनाव होने हैं। फसल बीमा, किसानों को पेंशन बिजली के निजीकरण को बंद करने के साथ सिंधु और टिकरी सीमा पर शहीद किसानों का स्मारक बनाने की मांग भी कर रहे हैं। समर्थन मूल्य को लेकर यह आंदोलन 2020 में शुरू हुआ था।

यूं तो इसे बड़े किसानों का आंदोलन कहा जा रहा है लेकिन किसानों का एक वर्ग मोदी सरकार की कृषि नीतियों से संतुष्ट नहीं है। सरकार की तरफ से मिले आासन और आम चुनाव के दौरान आंदोलन कुछ वक्त के लिए ठहर सा गया था। देश में छोटे किसानों की तादाद बहुत है। दूसरे वे लोग हैं, जो कृषि कायरे के जरिए जीवन यापन करते हैं।

उन सबको इन आंदोलनों या मांगों से ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। हालांकि अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार हर देशवासी को है। वह सरकार के समक्ष अपनी कोई भी मांग रखने को आजाद है। मगर पिछले आंदोलन के दरम्यान प्रदर्शनकारियों के कारण कई स्थानों पर जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया था। आगजनी और पथराव हुआ था।

सबसे बड़ा पाप गद्दारी

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने बहुत बड़ी बात कह दी। सब धर्माचार्यों को इस तरह सच बोलने का साहस दिखाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिदू धर्म में पाप पुण्य का कॉन्सेप्ट है। और इसमें सबसे बड़ा पाप विश्वासघात है। बहुत सही बात। सभी धर्मों में अलग अलग शब्दों में यही कहा गया है। अहसान फरामोशी, अमानत में खयानत इस्लाम में बहुत बुरा माना गया है। शेक्सपियर का यह वाक्य तो दुनिया में सबसे ज्यादा दोहराया जाने वाला है यू टू ब्रूटस! तुम भी! ईसाइयों में ईसा मसीह को धोखा देने वाले यहूदा को कभी माफ नहीं किया। पूरा मानव इतिहास भरा पड़ा है इस एक बुराई पाप की निंदा में। सेना में सुरक्षा बलों में सबसे ज्यादा गंभीर अपराध डबल क्रॉस को माना जाता है। दोनों तरफ के अधिकारी इसे कभी माफ नहीं करते हैं। अगर आप चाहें तो एक सच्ची घटना सुनाएं। जम्मू कश्मीर के कुछ पत्रकार दोस्तों को मालूम है। मिलिटेंसी में पत्रकारों की भी मशरूम ग्रोथ होती है। अखबारों को जरूरत होती है तो वह किसी भी स्थानीय आदमी को रख लेते हैं। जरूरी नहीं कि उन्हें लिखना पढ़ना भी आता हो। एक नाम बाईलाइन में डालकर वे यह बताते थे कि हमारा संवाददाता भी फील्ड में है। उसे पहचान पत्र दे देते थे। और वह सब जगह घूमना शुरू कर देता था। कुछ खबर बताना हो तो फोन पर बोलकर बता देता था। तो ऐसे तमाम लोग आतंकवाद ग्रस्त क्षेत्रों में पत्रकार बन जाते थे। पंजाब में बने। जम्मू कश्मीर में। ज्यादातर तो अखबार में नाम छपने और अधिकारियों से संपर्क बनाने में खुश रहते थे। मगर सुरक्षा एजेंसियां इन पर कड़ी नजर रखती थीं। इनसे सूचना लेने का काम भी करती थीं। लेकिन जैसा विश्वास वे प्रोफेशनल पत्रकारों पर करती थीं वैसा नहीं।तो हां हम आपको जो बात बता रहे थे वह यह कि ऐसे ही एक बड़े हिंदी अखबार के संवाददाता पर एक सुरक्षा बल को संदेह था। एक बार ज्यादा नाराज हो गए। सीमावर्ती इलाके का टूर था। सेना और अन्य सुरक्षा बल करवाते रहते थे। नियत्रंण रेखा पर थोड़ा सा पाकिस्तान के कब्जे वाले इलाके में भी घुमा लाते थे। उस दिन केवल एक पत्रकार को उस तरफ ले जा रहे थे। सुरक्षा बल के सभी बड़े अधिकारी उन दिनों दोस्त थे। काम की कद्र करते थे। तो थोड़ा अजीब लगा। उनसे पूछा। तो जो जवाब मिला वह दिल दहला देने वाला था। उन्हें उसके डबल एजेंट होने पर कुछ सबूत मिले थे। यह तो हम सहित दूसरे कुछ पत्रकारों को मालूम था कि उस पर निगाह है। और सुरक्षा बल उससे कुछ काम भी करवाते हैं। उसके उधर होने पर भी कुछ लोगों को संदेह था। जम्मू का स्थानीय निवासी था। पहले कभी पत्रकार नहीं रहा था।

भारत में प्रतिवर्ष सृजित हो रहे हैं रोजगार के 2 करोड़ नए अवसर

केंद्र सरकार द्वारा कौशल विकास के क्षेत्र में लगातार किए जा रहे प्रयासों एवं निजी एवं सरकारी क्षेत्र में रोजगार के अधिक से अधिक अवसर सृजित करने के लिए दिए जाने वाले विभिन्न प्रोत्साहनों का असर भी अब धरातल पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। आजकल विदेशी वित्तीय एवं आर्थिक संस्थान भारत के आर्थिक मामलों में अक्सर अपनी राय देने से चूकते नहीं हैं। अभी हाल ही में सिटीग्रुप इंडिया ने भारत की अपने बढ़ते कार्यबल के लिए पर्याप्त मात्रा में नौकरियां सृजित करने की क्षमता के मामले में चिंता जताई थी और एक प्रतिवेदन में कहा था कि भारत को आगामी दशक में प्रतिवर्ष 1. 2 करोड़ नौकरियां सृजित करने की आवश्यकता है, जबकि वह प्रतिवर्ष केवल 80–90 लाख नौकरियां ही सृजित करने की राह पर आगे बढ़ता दिखाई दे रहा है। यह विदेशी वित्तीय एवं आर्थिक संस्थान अपनी आधी अधूरी जानकारी के आधार पर भारतीय अर्थतंत्र के बारे अपनी राय जारी करते दिखाई देते हैं क्योंकि हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भी एक प्रतिवेदन जारी किया गया है जिसके के अनुसार वित्तीय वर्ष 2023–24 में भारत में रोजगार के नए अवसर सृजित होने के मामले में 6 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुई है और इस दौरान लगभग 4.7 करोड़ रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं और देश में कार्य करने वाले नागरिकों की संख्या अब 64.33 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई है, जबकि पिछले वर्ष यह वृद्धि दर 3.2 प्रतिशत की रही थी। अब कहां सिटीग्रुप इंडिया की भारत में केवल 80–90 लाख नौकरियों के अवसर सृजित होने की राह पर की बात की है और कहां भारतीय रिजर्व बैंक की भारत में 4.7 करोड़ रोजगार के अवसर सृजित होने की बात है, दोनों संस्थानों के आंकलन में भारी अंतर दिखाई देता है। सिटीग्रुप इंडिया के भारत में रोजगार सृजित होने के संदर्भ में जारी उक्त प्रतिवेदन के जवाब में भारत सरकार के श्रम मंत्रालय द्वारा भी पिरीआडिक लेबर फोर्स सर्वे (च्स्थ्ै) एवं भारतीय रिजर्व बैंक के ज्ञस्म्डै डाटाबेस के आंकड़ों का प्रयोग करते हुए बताया गया है कि भारत में वर्ष 2017–18 से 2021–22 के बीच 8 करोड़ रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं, जो कि वर्ष 2020–21 में कोविड–19 महामारी के कारण होने वाले वैश्विक आर्थिक व्यवधानों के बावजूद प्रतिवर्ष औसतन 2 करोड़ से अधिक नौकरियां बनती है। इस जानकारी के उपयुक्त होने को च्स्थ्ै डाटा से भी बल मिलता है जिसके अनुसार भारत में पिछले पांच वर्षों में रोजगार के अवसरों की संख्या, श्रमबल में नए प्रवेशकों की संख्या से अधिक रही है, जिससे देश में बेरोजगारी दर में लगातार कमी आ रही है। इन आंकड़ों के अनुसार, भारत में बेरोजगारी की दर वर्ष 2017–18 में 6 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2022–23 में 3.2 प्रतिशत पर नीचे आ गई है। वित्त वर्ष 2023–24 में भारत में 466,59,221 रोजगार के अवसर निर्मित हुए एवं वित्त वर्ष 2023–24 में देश में कुल रोजगार बढ़कर 64.33 करोड़ के स्तर को पार कर गया जो वर्ष 2022–23 में 59.66 करोड़ के स्तर पर था एवं वर्ष 2019–20 में 53.44 करोड़ के स्तर पर था। उक्त आंकड़ों की सत्यता एवं विश्वसनीयता को और भी अधिक बल मिलता है जब इस संदर्भ में विभिन्न अनुपातों पर नजर डालते हैं। इससे ध्यान में आता है कि भारत में श्रमिक जनसंख्या अनुपात (ॅवतामत च्वचनसंजपवद त्ंजपव) वर्ष 2017–18 के 46.8 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022–23 में 56 प्रतिशत हो गया है। इसी प्रकार भारत में श्रमिक सहभागिता दर (स्ंइवनत थ्वतबम च्ंतजपबपचंजपवद त्ंजम) भी वर्ष 2017–18 के 49.8 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022–23 में 57.9 प्रतिशत हो गई है। जिसके चलते देश में बेरोजगारी की दर (न्दमउचसवलउमदज त्ंजम) भी वर्ष 2017–18 में 6 प्रतिशत से गिरकर वर्ष 2022–23 में 3.2 प्रतिशत तक नीचे आ गई है। कृषि, आखेट, वानिकी, मछली पालन के क्षेत्र में वर्ष 2022–23 में 25.3 करोड़ व्यक्ति रोजगार प्राप्त कर रहे हैं, जबकि वर्ष 2021–22 में 24.82 करोड़ व्यक्ति इन क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर रहे थे। इसी प्रकार वर्ष 2022–23 में निर्माण, व्यापार, यातायात एवं भंडारण के क्षेत्र मुख्य रोजगार प्रदाता क्षेत्रों में गिने जा रहे थे। के सर्वे में भी भारत में 56.8 करोड़ नागरिकों को रोजगार प्राप्तकर्ता बताया गया है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार वर्ष 2004 से वर्ष 2014 के दशक के बीच में केवल 2.9 करोड़ रोजगार उपलब्ध कराए जा सके थे जबकि वर्ष 2014 से वर्ष 2023 के दशक के बीच 12.5 करोड़ रोजगार उपलब्ध कराए गए हैं। विनिर्माण एवं सेवा के क्षेत्रों में वर्ष 2004–2014 के दशक में 6.6 करोड़ रोजगार उपलब्ध कराए गए थे जो वर्ष 2014 से 2023 के दशक में बढ़कर 8.9 करोड़ हो गए हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग के क्षेत्र में भी कुल 20 करोड़ रोजगार उपलब्ध कराए जा रहे हैं। विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में कृषि के क्षेत्र में महिलाओं के लिए रोजगार के अधिक अवसर सृजित हो रहे हैं और यह संख्या 60 से 70 प्रतिशत प्रतिवर्ष तक पहुंच रही है, क्योंकि पुरुष वर्ग अब रोजगार के लिए शहरी क्षेत्रों की ओर आकर्षित हो रहा है जहां उन्हें विनिर्माण एवं सेवा जैसे क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। दूसरे, कृषि के क्षेत्र में हो रही लगभग 4 प्रतिशत प्रतिवर्ष की औसत विकास दर के कारण भी कृषि के क्षेत्र में रोजगार के अधिक अवसर सृजित हो रहे हैं। भारत के लिए एक अच्छी खबर यह भी है कि केंद्र सरकार द्वारा वित्तीय एवं आर्थिक क्षेत्रों में लिए गए कई महत्वपूर्ण निर्णयों के चलते अब देश में धीरे धीरे अनऔपचारिक अर्थव्यवस्था का आकार कम होकर, औपचारिक अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ रहा है जिसके चलते अब भारत में औपचारिक क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर अधिक मात्रा में निर्मित हो रहे हैं। म्च्थ्व् द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2023–24 में 1.3 करोड़ कामगारों ने म्च्थ्व् की सदस्यता ग्रहण की है जबकि वित्तीय वर्ष 2018–19 में केवल 61.12 लाख कामगारों ने ही म्च्थ्व् की सदस्यता ग्रहण की थी। पिछले लगभग साढ़े छह वर्षों में, सितंबर 2017 से मार्च 2024 के बीच, 6.2 करोड़ कामगारों ने म्च्थ्व् की सदस्यता ग्रहण की है। म्च्थ्व् के आंकड़ों में लगातार होने वाली वृद्धि से आशय यह है कि देश में कम आय वाले रोजगार की तुलना में अधिक आय वाले रोजगार अब तेजी से बढ़ रहे हैं और यह अब अधिकतम औपचारिक क्षेत्र में ही सृजित हो रहे हैं। अनऔपचारिक क्षेत्र के कम आय के रोजगार ही अधिक संख्या में सृजित होते हैं। ।न्म् सर्वे के अनुसार अब देश की अर्थव्यवस्था में औपचारिक श्रमिकों की संख्या 55 प्रतिशत तक पहुंच गई है जबकि च्स्थ्ै सर्वे के अनुसार यह 61 प्रतिशत पर पहुंच गई है। केंद्र सरकार द्वारा कौशल विकास के क्षेत्र में लगातार किए जा रहे प्रयासों एवं निजी एवं सरकारी क्षेत्र में रोजगार के अधिक से अधिक अवसर सृजित करने के लिए दिए जाने वाले विभिन्न प्रोत्साहनों का असर भी अब धरातल पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। अब तो कई अन्य देश भी भारत से डाक्टरों, इंजीनियरों, आदि की मांग करने लगे हैं। जापान ने 2 लाख भारतीय इंजीनियरों की मांग की है तो इजराईल एवं ताईवान ने भी एक–एक लाख भारतीय इंजीनियरों की मांग की हैं। आस्ट्रेलिया, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी आदि विकसित देशों में तो पहिले से ही भारतीय डॉक्टर, इंजीनियर एवं एमबीए के क्षेत्र में कौशल हासिल भारतीयों की भारी मांग है। अब तो अरब देश भी भारतीय डॉक्टर, इंजीनियर एवं एमबीए के क्षेत्र में पारंगत भारतीयों पर अपनी नजर गढ़ाए हुए हैं।कई निजी संस्थान दरअसल भारत में रोजगार से सम्बंधित आकड़ें प्रस्तुत करने में प्रामाणिक एवं विश्वसनीय सूत्रों का उपयोग नहीं करते हैं एवं अपने निजी हित साधने के उद्देश्य से उपलब्ध आंकड़ों से अपना निजी निष्कर्ष निकालकर जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं, जो कई बार वस्तुस्थिति से भिन्न निष्कर्ष देते हुए दिखाई देता हैं। जबकि कुछ विश्वसनीय सूत्र जहां प्रामाणिक आंकड़े उपलब्ध हैं, में शामिल हैं, भारतीय रिजर्व बैंक, म्च्थ्व् एवं च्स्थ्ै आदि, इन संस्थानों द्वारा जारी की गई जानकारी के अनुसार भारत में पिछले पांच वर्षों से बेरोजगारी की दर लगातार कम हो रही है। इसका आशय यह भी है कि देश में प्रतिवर्ष रोजगार की मांग से रोजगार के अधिक अवसर सृजित हो रहे हैं, इसी के चलते ही तो बेरोजगारी की दर में कमी आ रही है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भारत में ही उपलब्ध डाटाध्जानकारी का उपयोग करके वित्तीय वर्ष 2023–24 के लिए देश में उत्पादकता का एक अनुमान लगाने का प्रयास किया गया है और जो 27 उद्योगों में उत्पादकता एवं रोजगार के आकलन पर आधारित है। इन उद्योगों को छह व्यापक क्षेत्रों में बांटा गया है,

कृषि, माइनिंग और मछली पकड़ना, खनन और उत्खनन, विनिर्माण, बिजली, गैस और जल आपूर्ति, निर्माण और सेवाएं। इस विश्लेषण के लिए नैशनल स्टेटिस्टिकल ऑफिस (छैव्), नैशनल सैम्पल सर्वे ऑफिस

(छैैव्) एवं ऐन्यूअल सर्वे ओफ इंडुस्ट्रीज (।ैप्) सहित विभिन्न स्त्रोतों से आकड़ों को संकलित किया गया है, जो पूंजी (ब्ंचपजंस–ज्ञ), श्रम (स्ंइवनत–स्), ऊर्जा (म्दमतहल–म्), सामग्री (डंजमतपंस–ड) एवं सेवा (ैमतअपबमे–ै) ज्ञस्म्डै डाटाबेस का निर्माण करता है।

आज का राशिफल

मेष राशि आज का दिन शानदार रहने वाला है। आज अधिकतम समय आप धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों में व्यस्त रहेंगे। आज आपके चारों ओर का वातावरण सुखमय व खुशनुमा बना रहेगा। अगर घर में कोई सुधार संबंधी योजना बन रही है, तो वास्तु संबंधी नियमों का पालन करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

वृष राशि आज आपके हर परेशानी का हल चुटकियों में निकल जायेगा। सरकारी कार्यों में आपको बड़े लाभ की संभावना है।

मिथुन राशिआज का दिन आपके लिए अच्छे परिणाम लाने वाला होगा। ऑफिस मे सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा, जूनियर आपसे काम सीखना चाहेंगे। आज सकारात्मक रहने से आप अपने कार्यों को बेहतरीन तरीके से अंजाम देंगे।

कर्क राशि आज आपका दिन उत्तम रहने वाला है। आज आप किसी बात को लेकर उलझन में रहेंगे, जिसे आप अपने किसी खास मित्र से शेयर भी करेंगे आपको राहत मिलेगी। आज दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करने की बजाय अपने कामों पर ही ध्यान देंगे। बाहरी गतिविधियों में ज्यादा आवाजाही से परहेज करेंगे तो बेवजह आपका समय खराब नही होगा।

सिंह राशि आज का दिन ठीक–ठाक रहने वाला है। आज ऑफिस में वर्कलोड बढ़ सकता है। जिसके लिए आपको ओवर टाईम करना पड़ेगा। आज व्यवस्थित दिनचर्या रखने से हर काम समय पर होगा इससे आप अन्य गतिविधियों की तरफ भी ध्यान देने में सफल होंगे, साथ ही आप खुद को ऊर्जा से भरपूर महसूस करेंगे।

कन्या राशि आज आपका दिन बेहतर रहेगा। आपकी पहले से चली आ रही समस्याओं का समाधान मिलेगा, जिससे आपका मन प्रसन्न रहेगा। आज सामाजिक गतिविधियों में आपका योगदान रहेगा, जिससे पहचान का दायरा बढ़ेगा, व्यवहारिक सोच रखने से अपनी कार्यकुशलता में निखार आयेगा।

तुला राशि आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। आज प्रॉपर्टी अथवा वाहन की खरीदारी से संबंधित कुछ योजनाएं बनायेंगे। कुछ समय आध्यात्मिक कार्यों में बिताएंगे, इससे आत्म बल और सुकून बना रहेगा। आज आपके ससुराल पक्ष से कोई शुभ समाचार सुनने को मिलेगा। समाज में आपका मान–सम्मान बढ़ेगा। आज बड़े निर्णय लेने के लिए दिन अच्छा है।

वृश्चिक राशि आज आपका दिन अच्छे मूड से शुरू होने वाला है। कुछ दिनो से चल रही समस्याएं आज माता–पिता की सलाह से खत्म होगी। आज आप दूसरों के मामले में ज्यादा हस्तक्षेप करने से परहेज करेंगे। दोस्तों के साथ मिलकर कहीं घूमने की प्लानिंग करेंगे। आज किसी से लिए उधार से छुटकारा मिलेगा, आपकी टेंशन खत्म होंगी।

धनु राशि आज आपका दिन मिला–जुला रहेगा। एकाग्र मन से किया गया काम लाभदायक साबित होगा। लवमेट के लिए आज का दिन बढ़िया है। आज अधिक कार्यभार की वजह से पूरे दिन व्यस्त रहेंगे। आज बच्चों पर अधिक रोक– टोक ना लगाएं, इससे उनके आत्मबल में कमी आ सकती है।

मकर राशि आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। घर खरीदने का विचार कर रहे लोगों के लिए आज का दिन शुभ है। आज आपका मन घरेलू काम काज में लगेगा। आज बिजनेस का कोई फैसला जल्दबाजी में न लें। अपने काम करने के तरीको में थोड़ा बदलाव लाने की भी जरूरत है।

कुंभ राशि आज आपका दिन खुशियों से भरा रहने वाला है। आपके दोस्त आपसे मदद की गुहार करेंगे, आप उन्हें निराश नहीं करेंगे। आज निवेश करते समय किसी अनुभवी की सलाह लेना आपको भविष्य में लाभ दे सकता है। सकारात्मक नजरिया रखने से विपरीत परिस्थितियां अपने आप ही सामान्य हो जाएंगी। आज बच्चों की किसी विषय को लेकर चल रही समस्या भी दूर होगी। बिजनेस कर रहे लोगों को अच्छा मुनाफा होगा।

मीन राशि आज परिवार का पूरा साथ मिलेगा। जो लोग बैंक में कार्य करते हैं वह आज अपना काम बहुत जल्द निपटा लेंगें। लवमेट आज साथ में समय बितायेंगे। आज कार्यस्थल पर अपनी कार्य प्रणाली में परिवर्तन लाने से स्थिति में कुछ सुधार आएगा। कुछ नए कार्यों के प्रति भी रूचि रहेगी। आपका व्यापारिक दृष्टिकोण आपकी तरक्की में सहायक रहेगा। कुछ राजनीतिक लोगों के साथ लाभदायक मुलाकात होगी। घर में धार्मिक कार्य करने की योजना बन सकती है। आज दोस्तों के साथ फोन पर बात करके समय बितायेंगें।

डिजिटल मोड जनता की पहली पसंद

अमित भनोट

आज हम एक ऐसे देश में रह रहे हैं जहां चाय, ब्रेड, दूध आदि जैसे रोजमर्रा के खचरे और खरीदारी के लिए डिजिटल मोड जनता की पहली पसंद बन चुका है। अमेजॉन के एक सर्वे में यह बात सामने आई है कि ऑनलाइन खरीदारी के लिए जहां 90 प्रतिशत भुगतान डिजिटली किया जा रहा है वहीं स्टोर्स में भी डिजिटल भुगतान 50 प्रतिशत जनता की पहली पसंद बन गया है।देश में डिजिटल क्रांति ने जीवन के हर पहलू को न सिर्फ छुआ है, बल्कि बदल कर रख दिया है। ऐसे में जब हम ऐसी खबरें सुनते हैं कि उत्तर प्रदेश में योगी सरकार द्वारा परिषदीय स्कूलों में लागू की गई डिजिटल अटेंडेंस व्यवस्था का प्रदेश के शिक्षकों द्वारा यह कहते हुए विरोध हो रहा है कि यह श्अव्यावहारिक्य है, तो निश्चिय ही आश्चर्य होता है। कोई बड़ी बात नहीं कि विरोध कर रहे शिक्षकों के मोबाइल में भुगतान करने के लिए श्भीम एप्य, मनोरंजन के लिए ओटीटी ऐप, खाना ऑर्डर करने के लिए श्डिलीवरी एप्य, खरीदारी के लिए भी विभिन्न ऐप पहले से ही मौजूद हों। ऐसे में सिर्फ डिजिटल अटेंडेंस का विरोध करना खुद ही व्यावहारिक नहीं लगता। योगी सरकार ने 8 जुलाई से सभी परिषदीय स्कूलों में मौजूद सभी 12 रजिस्टरों को डिजिटल करने का फैसला लिया है, और सभी बेसिक शिक्षा अधिकारियों को इसे सख्ती से लागू करवाने का निर्देश दिया है।इन्हीं रजिस्टरों में शिक्षकों की अटेंडेंस का रजिस्टर भी शामिल है, जिसमें फेस रिकग्निशन के जरिए स्कूल परिसर में ही स्कूल खुलने और बंद होने के 15 मिनट पहले और बाद में हर शिक्षक को अपनी उपस्थिति टैब के जरिए डिजिटली दर्ज करानी है।नई व्यवस्था के विरोध को देखते हुए प्रदेश सरकार ने इसमें 30 मिनट का ग्रेस टाइम भी दे दिया है। इसी व्यवस्था का विरोध यह कहते हुए हो रहा है कि इसमें व्यावहारिक दिक्कतें हैं, वहीं बरसात में मौसम और आकस्मिक स्थिति में शिक्षक द्वारा इस व्यवस्था का अनुसरण करना संभव नहीं होगा। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या यह विरोध सिर्फ इसलिए है कि इसमें कुछ दिक्कतें आएंगी या फिर किसी और चीज की पर्दादारी है। प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था की स्थिति किसी से छुपी नहीं है। एक ओर तो प्रदेश के 133035 प्राथमिक, कंपोजिट और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी हमेशा ही बनी रहती है वहीं जो शिक्षक हैं भी, उनमें से कई, स्कूलों में नहीं आते हैं, या सिर्फ एक बार रजिस्टर में उपस्थिति दर्ज कर, निकल लेने की फिराक में रहते हैं। राज्य के शिक्षा मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार 2022–23 में प्रदेश में कुल 453594 शिक्षक थे जबकि 126028 पद रिक्त हैं, ऐसे में यदि मौजूद शिक्षक भी विद्यालय न आएं तो शिक्षा की स्थिति समझी जा सकती है। यह सीधे–सीधे बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। यदि हमें प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था चाक–चौबंद करनी है तो सरकार को व्यवस्था में अमूलचूल परिवर्तन करने होंगे। डिजिटल रजिस्टर उसी दिशा में उठाया गया कदम जान पड़ता है। इसके लिए शिक्षा विभाग द्वारा परिषदीय प्राथमिक, कंपोजिट विद्यालयों के शिक्षकों के उपयोग के लिए 2,09,863 टेबलेट्स उपलब्ध कराए गए हैं। परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के लिए टेबलेट उपलब्ध कराए जाने की प्रक्रिया जारी है।निर्देशों के अनुसार समस्त अध्यापक 1 अप्रैल से 30 सितम्बर तक आगमन उपस्थिति प्रातरू 7.45 से 8 बजे तक और प्रस्थान दोपहर 2.15 से 2.30 बजे तक लगाएंगे। एक अक्टूबर से 31 मार्च तक आगमन उपस्थिति सुबह 8.45 बजे से सुबह नौ बजे तक और प्रस्थान उपस्थिति 3.15 बजे से 3.30 बजे तक दर्ज कर सकेंगे। एक प्रश्न हमें और शिक्षकों को खुद से भी पूछना चाहिए। यदि पुरानी फिजिकल रजिस्टर वाली व्यवस्था दुरुस्त थी तो प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षा की स्थिति ऐसी क्यों है? 2023–24 में 2022–23 की तुलना में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और कंपोजिट स्कूलों में छात्रों की संख्या में 24 लाख से अधिक की गिरावट दर्ज की गई, जो चौंकाने वाला आंकड़ा है।2023–24 में इन स्कूलों में छात्रों की संख्या 16784645 थी जो पिछली बार से 24 लाख कम है। यह तब है जब कोरोना काल में घटती आमदनी के चलते सरकारी स्कूलों में छात्रों का पंजीकरण खासा बढ़ा था। घटती संख्या के पीछे मुख्य कारण यह भी है कि शिक्षक पढ़ाने आते ही नहीं। ऐसे में डिजिटल अटेंडेंस की व्यवस्था इसमें अपेक्षित सुधार ला सकती है। डिजिटल व्यवस्था के विरोध में एक बात और कही जा रही है कि यह ऐप कई बार शिक्षक की लोकेशन स्कूल से अलग कहीं और दिखाता है। डिजिटल दुनिया में शुरुआती समय में कई बार ऐसा होता है लेकिन यह कमी किसी भी ऐप में समय के साथ ठीक की जा सकती है, लेकिन इसके लिए पूरी व्यवस्था को अव्यावहारिक कह कर नकार देना कतई सही नहीं है। सॉफटवेयर और हार्डवेयर, दोनों स्तरों में लगातार सुधार जारी हैं, वहीं जरूरत के अनुसार नियमों में रियायतें भी दी जा रही हैं। आधे घंटे का श्ग्रेस्य इसी दिशा में उठाया गया कदम है।

अगर समग्र रूप से देखें तो किसी भी राज्य की शिक्षा व्यवस्था सीधे हमारे मानव संसाधन के भविष्य से जुड़ाव रखती है, और समय के साथ इसमें बदलाव विकसित भारत के सपने को साकार करने में अहम है। यदि प्रदेश का शिक्षा तंत्र और शिक्षक अपने ध्येय का बखूबी पालन करते हैं, तो इसका सकारात्मक असर सीधे प्रदेश की प्रोडक्टिविटी पर तो होगा ही, वहीं हम बेहतर नागरिकों का निर्माण भी करेंगे। इसे देखते हुए एक समाज के तौर पर हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को पूरी गंभीरता से लेना चालिए। हमें ऐसे शिक्षा के मंदिरों का निर्माण करना है जहां स्कूल में हमारे बच्चों के लिए सभी मूलभूत सुविधाएं हों, शौचालयों की व्यवस्था हो, मिड डे मील के रूप में भोजन की उचित व्यवस्था हो, पक्का स्कूल हो, बैठने के लिए डेस्क हो, कॉपी–किताबें हों और सबसे महत्त्वपूर्ण उचित संख्या में शिक्षक हों, जो विद्यालय में समय से आएं और बच्चों को शिक्षित कर विकसित भारत का निर्माण करने में सहयोग करें जिसके लिए डिजिटल प्रक्रिया क्रांतिकारी कदम है। सभी शिक्षकों को आगे आकर डिजिटल प्रक्रिया का स्वागत करना चाहिए, वहीं प्रदेश सरकार को भी चाहिए कि शिक्षकों की मांग पर ध्यान दे और इस ऐप में सभी व्यावहारिक स्थितियों जैसे कनेक्टिविटी, टैगिंग, जीपीएस लोकेशन संबंधी समस्याओं से निपटने के लिए जरूरी बदलाव लगातार करे।

केवल 4 फीट की हो, नजर भी नहीं आती, जार्जिया मेलोनी पर किया ऐसा कमेंट, अब देना पड़ेगा 5 हजार यूरो का फाइन

दिवंगत फासीवादी नेता बेनिटो मुसोलिनी की तस्वीर के साथ उनकी एक फेक पिक्चर पब्लिश की। कॉर्टिस ने अन्य ट्वीट्स के साथ लिखा जॉर्जिया मेलोनी आप मुझे डराओ मत। आखिरकार, आप केवल 1.2 मीटर (4 फीट) लंबे हो। मैं आपको देख भी नहीं सकता। मिलान की एक अदालत ने एक पत्रकार को सोशल मीडिया पोस्ट में इतालवी प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी का मजाक उड़ाने के लिए उन्हें 5,000 यूरो का हर्जाना देने का आदेश दिया है। पत्रकार गिउलिया कॉर्टेज को मेलोनी की हाईट को लेकर एक्स पर टिप्पणी के लिए के जुर्माना लगाया है। इस टिप्पणी को बॉडीशेमिंग के रूप में लिया गया। सोशल मीडिया पर दो महिलाओं के बीच झड़प के बाद मेलोनी ने कॉर्टेज के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की। ये तब की घटना है जब मेलोनी की दक्षिणपंथी ब्रदर्स ऑफ इटली

पार्टी उस समय विपक्ष में थी। कॉर्टेज ने तब दिवंगत फासीवादी नेता बेनिटो मुसोलिनी की तस्वीर के साथ उनकी एक फेक पिक्चर पब्लिश की। कॉर्टिस ने अन्य ट्वीट्स के साथ लिखा जॉर्जिया मेलोनी आप मुझे डराओ मत। आखिरकार, आप केवल 1.2 मीटर (4 फीट) लंबे हो। मैं आपको देख भी नहीं सकता। कितनी है मेलोनी की हाईट विभिन्न मीडिया वेबसाइटों पर मेलोनी की ऊंचाई 1.58 मीटर से 1.63 मीटर के बीच बताई गई है। कॉर्टिस सजा के खिलाफ अपील कर सकते हैं और मेलोनी के वकील ने कहा कि प्रधानमंत्री अंततः प्राप्त होने वाले किसी भी नुकसान को दान में देंगी। रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स द्वारा इस वर्ष पत्रकारों के खिलाफ बड़ी संख्या में मुकदमों का हवाला दिया गया था, जिसने 2024 विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में इटली को पांच स्थान नीचे गिराकर 46वें स्थान पर ला दिया था। मेलोनी के लिए पत्रकारों को अदालत तक ले जाना कोई नई बात नहीं है। पिछले साल रोम की एक अदालत ने सबसे ज्यादा बिकने वाले लेखक रॉबर्टो सविआनो पर 1,000 यूरो और कानूनी खर्च का जुर्माना लगाया था, क्योंकि उन्होंने अवैध आप्रवासन पर उनके सख्त रुख को लेकर 2021 में टेलीविजन पर उनका अपमान किया था।

यूएन में भारत के लिए अमेरिका से भिड़ गया रूस, पीएम मोदी पर टिप्पणी करने को लेकर जेलेंस्की को भी धमका दिया

लावरोव ने कहा कि मुझे लगता है कि भारत एक महान शक्ति है जो अपने राष्ट्रीय हित खुद तय करता है, अपने राष्ट्रीय हित खुद निर्धारित करता है और अपने साझेदार खुद चुनता है। हम जानते हैं कि भारत पर भारी दबाव पड़ रहा है, अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में यह पूरी तरह से अनुचित दबाव है। उनकी यह टिप्पणी प्रधानमंत्री मोदी की हालिया मॉस्को यात्रा और रूस के साथ ऊर्जा सहयोग को लेकर भारत के विरोध के बारे में एक सवाल का जवाब देते वक्त आई।रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा है कि भारत एक महान शक्ति है जो अपने राष्ट्रीय हितों को निर्धारित करता है और अपने साझेदार चुनता है। संयुक्त राष्ट्र में एक संवाददाता सम्मेलन में बोलते हुए, लावरोव ने मॉस्को के साथ ऊर्जा सहयोग के कारण नई दिल्ली पर भारी दबाव को पूरी तरह से अनुचित बताया।

लावरोव ने कहा कि मुझे लगता है कि भारत एक महान शक्ति है जो अपने राष्ट्रीय हित खुद तय करता है, अपने राष्ट्रीय हित खुद निर्धारित करता है और अपने साझेदार खुद चुनता है। हम जानते हैं कि भारत पर भारी दबाव पड़ रहा है, अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में यह पूरी तरह से अनुचित दबाव है। उनकी यह टिप्पणी प्रधानमंत्री मोदी की हालिया मॉस्को यात्रा और रूस के साथ ऊर्जा सहयोग को लेकर भारत के विरोध के बारे में एक सवाल का जवाब देते वक्त आई। यूक्रेन संघर्ष शुरू होने के बाद पीएम मोदी की यह पहली रूस यात्रा थी। पीएम मोदी की रूस यात्रा से पश्चिमी देश खुश जर नहीं आए। वहीं यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने इसकी आलोचना करते हुए एक्स पर एक पोस्ट में कहा था कि एक रूसी मिसाइल ने यूक्रेन के सबसे बड़े बच्चों के अस्पताल पर हमला किया, जिसमें युवा कैंसर रोगियों को निशाना बनाया गया। कई लोग मलबे के नीचे दब गए। जेलेंस्की ने मोदी–पुतिन की मुलाकात के बारे में कहा था, दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नेता को ऐसे दिन मॉस्को में दुनिया के सबसे खूनी अपराधी को गले लगाते देखना एक बड़ी निराशा और शांति प्रयासों के लिए एक विनाशकारी झटका है। जेलेंस्की की टिप्पणियों का जिक्र करते हुए, लावरोव ने कहा कि तो यह बहुत अपमानजनक था और यूक्रेनी राजदूत को बुलाया गया और भारतीय विदेश मंत्रालय ने ष्उनसे बात की कि उन्हें कैसे व्यवहार करना चाहिए। कुछ अन्य यूक्रेनी दूतों द्वारा की गई टिप्पणियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि राजदूत वास्तव में ऐसा व्यवहार कर रहे थे जैसे कि वे गुंडे हों। जेलेंस्की ने मोदी–पुतिन की मुलाकात के बारे में कहा था दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नेता को ऐसे दिन मॉस्को में दुनिया के सबसे खूनी अपराधी को गले लगाते देखना एक बड़ी निराशा और शांति प्रयासों के लिए एक विनाशकारी झटका है।

रेस से खुद ही हटने वाले हैं बाइडेन ? क्यों कहा– एक बार फिर से विचार करूंगा

लगातार बाइडेन पर बढ़त बनाए हुए ट्रंप खुद पर जानलेवा हमले के बाद भी मजबूती से मैदान में डटे हुए हैं। इसी बीच बाइडेन की तरफ से राष्ट्रपति उम्मीदवारी से हटने को लेकर बड़ा बयान सामने आया है।अमेरिका के राष्ट्रपति कोविड पॉजिटिव पाए गए हैं। व्हाइट हाउस का प्रेस सचिव कैरिन जीन–पियरे ने इस बात की जानकारी दी है। लास वेगास में अपने पहले कार्यक्रम के बाद राष्ट्रपति बाइडन का कोरोना टेस्ट कराया गया था। जिसमें बाइडेन कोविड पॉजिटिव पाए गए हैं। अभी उनको थकान और खांसी की शिकायत है। ये कोरोना के हल्के लक्षण माने जाते हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति और रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप के साथ डिबेट में फ्लॉप शो के बाद जो बाइडेन पर साथी डेमोक्रेट्स की ओर से राष्ट्रपति पद की रेस से हटने का दबाव है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के खिलाफ वन टू वन मुकाबले में पिछड़ रहे हैं। जिससे उन्हें 2024 के चुनाव अभियान पर पुनर्विचार करने की जरूरत पड़ सकती है?

वहीं दूसरी तरफ लगातार बाइडेन पर बढ़त बनाए हुए ट्रंप खुद पर जानलेवा हमले के बाद भी मजबूती से मैदान में डटे हुए हैं। इसी बीच बाइडेन की तरफ से राष्ट्रपति उम्मीदवारी से हटने को लेकर बड़ा बयान सामने आया है। बीईटी न्यूज के साथ एक इंटरव्यू में जो बाइडेन से पूछा गया कि ऐसा क्या है इसके जवाब में राष्ट्रपति और डेमोक्रेट पार्टी के उम्मीदवार जो बाइडेन ने कहा कि अगर मेरी मेडीकल कंडीशन ठीक नहीं रहती है। डॉक्टर मेरी सेहत संबंधित समस्या का उल्लेख करते हैं। हालांकि किस समस्या की ओर बाइडेन इशारा कर रहे थे ये साफ नहीं किया। उन्होंने कहा कि अगर स्वास्थ्य संबंधित दिक्कतें आती हैं तो मैं चुनाव से पीछे हटने को लेकर पुनर्विचार कर सकता हूं। इसके साथ ही बाइडेन ने ये भी साफ किया कि वो सेकेंड टर्म और 4 साल का कार्यकाल को पूरा करने के लिए बिल्कुल फिट हैं। बाइडेन ने जोर देकर कहा कि वो ट्रंप को हराने के लिए सबसे योग्य उम्मीदवार हैं। ट्रंप के साथ हुए डिबेट की गलती को बाइडेन ने एक बार फिर से स्वीकार किया। बता दें कि प्रेसिडेंशियल इलेक्शन डिबेट में ट्रंप के सामने बोलते हुए बाइडेन बार–बार अटकते नजर आए थे। ऐसा लगा था कि वो बार बार कुछ भूल रहे हैं। बता दें कि बाइडेन के कोविड पॉजिटिव पाए जाने से पहले ही कैलिफोर्निया के प्रतिनिधि और सबसे हाई–प्रोफाइल डेमोक्रेट्स में से एक एडम शिफ ने उन्हें से राष्ट्रपति पद की रेस से बाहर होने का आग्रह किया था। उन्होंने लॉस एंजिल्स टाइम्स को बताया कि उन्हें इस बात को लेकर संशय है ।

कैंपेन के बीच अब कोविड पाजिटिव पाए गए बाइडेन, क्या ट्रंप के फेवर में जा रहा है पूरा चुनाव

प्रेस सचिव ने कहा कि व्हाइट हाउस राष्ट्रपति की स्थिति के बारे में नियमित जानकारी उपलब्ध कराता रहेगा। बाइडेन क्वारंटाइन रहते हुए भी अपने कार्यालय के दायित्वों का निर्वहन जारी रखेंगे।अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन लास वेगास के दौरे के दौरान कोविड–19 से संक्रमित पाए गए हैं। जारी बयान में कहा गया है कि 81 वर्षीय बाइडेन हल्के लक्षणों का अनुभव करने के बाद खुद को क्वारंटाइन कर रहे हैं। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरिन जीन–पियरे ने एक बयान में कहा कि आज लास वेगास में अपने पहले कार्यक्रम के बाद राष्ट्रपति बाइडन के कोविड–19 से संक्रमित होने की पुष्टि हुई है। उन्हें कोविड–19 रोधी टीका लगा हुआ है और उन्होंने बूस्टर डोज भी ले रखी है। उनमें हल्के लक्षण नजर आ रहे हैं। बाइडन डेलावेयर लौटेंगे, जहां वह एकांतवास में रहेंगे। हालांकि, इस दौरान वह अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे। लास वेगास में था कार्यक्रमप्रेस सचिव ने कहा कि व्हाइट हाउस राष्ट्रपति की स्थिति के बारे में नियमित जानकारी उपलब्ध कराता रहेगा। बाइडेन क्वारंटाइन रहते हुए भी अपने कार्यालय के दायित्वों का निर्वहन जारी रखेंगे। राष्ट्रपति का 17 जुलाई दोपहर लास वेगास में यूनीडोस कार्यक्रम में अभिभाषण था। व्हाइट हाउस ने कहा कि बाइडेन में हल्के लक्षण हैं। उनकी श्वसन दर 16, शरीर का तापमान 97.8 डिग्री फारेनहाइट और पल्स ऑक्सीमेट्री 97 प्रतिशत है, जिसे सामान्य माना जाता है। राष्ट्रपति को पैक्सलोविड की पहली खुराक दे दी गई है। वो रेहोबोथ में अपने आवास पर एकांतवास में रहेंगे। बाइडेन के कैंपेन में आएगा बदलाव अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति और रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप के साथ डिबेट में फ्लॉप शो के बाद जो बाइडेन पर साथी डेमोक्रेट्स की ओर से राष्ट्रपति पद की रेस से हटने का दबाव है। हालाँकि, उन्होंने ऐसी किसी भी संभवान से इनकार किया है और खुद को इस रेस में बरकरार रखने की बात प्रमुखता से कही है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के खिलाफ वन टू वन मुकाबले में पिछड़ रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ लगातार बाइडेन पर बढ़त बनाए

हुए ट्रंप खुद पर जानलेवा हमले के बाद भी मजबूती से मैदान में डटे हुए हैं। बता दें कि बाइडेन के कोविड पॉजिटिव पाए जाने से पहले ही कैलिफोर्निया के प्रतिनिधि और सबसे हाई–प्रोफाइल डेमोक्रेट्स में से एक एडम शिफ ने उन्हें से राष्ट्रपति पद की रेस से बाहर होने का आग्रह किया था। उन्होंने लॉस एंजिल्स टाइम्स को बताया कि उन्हें इस बात को लेकर संशय है कि क्या बाइडेन ट्रम्प को हरा सकते हैं।क्या पीछे हटेंगे बाइडेन एडम शिफ ने एक बयान में कहा कि हालांकि अभियान से हटने का विकल्प केवल राष्ट्रपति बाइडेन के पास है। मेरा मानना है कि यह उनके लिए एक मिशाल कायम करने का वक्त है। उन्होंने कहा कि बाइडेन के राष्ट्रपति पद की दौड़ से बाहर होने से उनकी नेतृत्व की विरासत सुरक्षित रहेगी और डेमोक्रेट्स को डोनाल्ड ट्रम्प को हराने में मददगार साबित होगी। पूर्व अमेरिकी हाउस स्पीकर नैंसी पेलोसी के करीबी होने के कारण एडम शिफ के बयान पर नजर रहेगी। एबीसी न्यूज ने सप्ताहांत में सीनेट के बहुमत नेता चक शूमर के साथ उनके डेलावेयर बीच हाउस में बाइडेन की निजी बैठक के बारे में नई जानकारी दी कि सीनेटर ने अमेरिकी राष्ट्रपति से कहा कि अगर वह हट जाते हैं तो यह डेमोक्रेटिक पार्टी के लिए और देश के लिए बेहतर होगा।

बंगलादेश में आरक्षण को लेकर हो गया ऐसा बवाल, भारत को जारी करनी पड़ी एडवाइजरी

बांग्लादेश में मौजूदा स्थिति को देखते हुए, बांग्लादेश में रहने वाले भारतीय समुदाय के सदस्यों और भारतीय छात्रों को सलाह दी जाती है कि वे यात्रा से बचें और अपने रहने वाले परिसर से बाहर कम से कम आवाजाही करें। किसी भी तात्कालिकता या सहायता की आवश्यकता के मामले में कृपया उच्चायोग और हमारे सहायक उच्चायोगों से संपर्क करें। भारत ने गुरुवार को बांग्लादेश में अपने नागरिकों और छात्रों को एक सलाह जारी की है। एडवाइजरी में उनसे अपने रहने वाले परिसर के बाहर आवाजाही को प्रतिबंधित करने का आग्रह किया गया। यह सलाह देश के कुछ हिस्सों में चल रही कोटा हिंसा के मद्देनजर आई है। भारत ने कुछ 24 घंटे के आपातकालीन नंबर भी जारी किए। बांग्लादेश में मौजूदा स्थिति को देखते हुए, बांग्लादेश में रहने वाले भारतीय समुदाय के सदस्यों और भारतीय छात्रों को सलाह दी जाती है कि वे यात्रा से बचें और अपने रहने वाले परिसर से बाहर कम से कम आवाजाही करें। किसी भी तात्कालिकता या सहायता की आवश्यकता के मामले में कृपया उच्चायोग और हमारे सहायक उच्चायोगों से संपर्क करें। सरकारी नौकरियों में कोटा प्रणाली में सुधार की मांग कर रहे छात्र प्रदर्शनकारियों ने बुधवार को सुरक्षा बलों की कार्रवाई के जवाब में गुरुवार (आज) को पूर्ण राष्ट्रव्यापी बंद लागू करने की योजना की घोषणा की। झड़पों में देश भर में चार छात्रों सहित कम से कम छह लोग मारे गए। आंदोलन के एक प्रमुख समन्वयक, आसिफ

महमूद ने एक फेसबुक पोस्ट में कहा, अस्पतालों और आपातकालीन सेवाओं को छोड़कर सभी प्रतिष्ठान बंद रहेंगे, और केवल एम्बुलेंस सेवाओं को संचालित करने की अनुमति दी जाएगी। रिपोर्टों के अनुसार, मृतकों में से कम से कम तीन छात्र थे, जबकि मंगलवार को हिंसा में लगभग 400 अन्य घायल हो गए, क्योंकि कोटा प्रणाली में सुधार की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन बांग्लादेश के प्रमुख शहरों में फैल गया, एक सप्ताह के सड़क प्रदर्शन के बाद इसने हिंसक रूप ले लिया। देश भर के सार्वजनिक विश्वविद्यालय परिसरों में रात भर दंगा भड़काने के बाद अधिकारियों ने आज चार प्रमुख शहरों में अर्धसैनिक बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (बीजीबी) के जवानों को बुला लिया। इस बीच, बढ़ती हिंसा के बीच सरकार ने स्कूलों और कॉलेजों को अगले आदेश तक बंद करने का आदेश दिया है।

अमेरिकी हथियारों की ब्रिकी पर बौखलाया चीन, ताइवान से लाइफ इंश्योरेंस जैसा प्रीमियम भुगतान क्यों चाहते हैं ट्रंप ?

ताइवान के संकट को बढ़ाते हुए, पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हाल ही में ब्लूमबर्ग बिजनेसवीक के साथ एक साक्षात्कार में ताइवान के लिए भविष्य के अमेरिकी समर्थन पर संदेह जताया।संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बीच हालिया घटनाक्रम के मद्देनजर ताइवान मुश्किल स्थिति में नजर आ रहा है। बीजिंग ताइवान में अमेरिकी हथियारों की बिक्री पर अपना विरोध बढ़ा रहा है। इस बीच, पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भविष्य में अमेरिकी समर्थन के लिए वित्तीय स्थितियों के बारे में बात की है।अमेरिका–ताइवान हथियार सौदे पर बौखलाया हुआ है चीन चीन ने संयुक्त राज्य

अमेरिका के साथ नवजात परमाणु–हथियार–नियंत्रण वार्ता को रोक दिया, है। चीनी विदेश मंत्रालय ने कहा कि वाशिंगटन द्वारा ताइवान को बार–बार हथियारों की बिक्री ने हथियार–नियंत्रण परामर्श जारी रखने के लिए राजनीतिक माहौल से गंभीर रूप से समझौता किया है। औपचारिक राजनयिक संबंधों के अभाव के बावजूद, अमेरिका ताइवान का सबसे महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय समर्थक और हथियार आपूर्तिकर्ता बना हुआ है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने जोर देकर कहा कि चीन अंतरराष्ट्रीय हथियार नियंत्रण पर संचार बनाए रखने के लिए खुला है, अमेरिका को चीन के मूल हितों का सम्मान करना चाहिए और बातचीत के लिए आवश्यक शर्तें बनानी चाहिए। बीजिंग ताइवान को अपना क्षेत्र होने का दावा करता है और बार–बार मांग करता रहा है कि लोकतांत्रिक रूप से शासित द्वीप पर अमेरिकी हथियारों की बिक्री बंद हो। ताइवान पिछले चार वर्षों में द्वीप के पास बढ़ी हुई चीनी सैन्य गतिविधि के बारे में मुखर रहा है, जिसमें चीनी युद्धक विमानों और युद्धपोतों द्वारा लगभग दैनिक मिशन शामिल हैं। अमेरिका में सरकार बदलने पर क्या बदलेगा ताइवान को लेकर रुखताइवान के संकट को बढ़ाते हुए, पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हाल ही में ब्लूमबर्ग बिजनेसवीक के साथ एक साक्षात्कार में ताइवान के लिए भविष्य के अमेरिकी समर्थन पर संदेह जताया। जून के अंत में आयोजित और मंगलवार को प्रकाशित साक्षात्कार में ट्रम्प ने ताइवान की अमेरिकी रक्षा की तुलना एक बीमा पॉलिसी से की। ताइवान को हमें रक्षा के लिए भुगतान करना चाहिए। आप जानते हैं, हम एक बीमा कंपनी से अलग नहीं हैं। ताइवान हमें कुछ नहीं देता। ट्रम्प की टिप्पणियाँ महत्वपूर्ण हो जाती हैं क्योंकि नवंबर के राष्ट्रपति चुनाव से पहले उनकी मतदान संख्या बढ़ जाती है जिससे दूसरे कार्यकाल में ताइवान के प्रति उनके संभावित दृष्टिकोण के बारे में गंभीर सवाल खड़े हो जाते हैं। विश्लेषकों का सुझाव है कि ट्रम्प ताइवान को राष्ट्रपति बिडेन के तहत स्वीकृत नई विदेशी सैन्य सहायता में कटौती करने पर विचार कर सकते हैं और ताइवान पर अपना सैन्य खर्च बढ़ाने के लिए दबाव डाल सकते हैं। ताइवान की प्रतिक्रिया ताइवान के प्रधानमंत्री चो जंग–ता... ने आश्वस्त किया कि ताइपे अपनी आत्मरक्षा के लिए अधिक जिम्मेदारी लेने को तैयार है। ताइवान के एक बयान में चो ने रक्षा खर्च में धीरे–धीरे वृद्धि, एक साल की अनिवार्य सैन्य सेवा बहाल करने और विभिन्न चुनौतियों के लिए सामाजिक ताने–बाने को मजबूत करके अपनी आत्मरक्षा क्षमताओं को बढ़ावा देने के ताइवान के प्रयासों पर जोर दिया।

नेपाल के नव नियुक्त प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली रविवार को विश्वास मत हासिल करेंगे

के पी शर्मा ओली 21 जुलाई को संसद में संविधान के अनुसार आवश्यक विश्वास मत हासिल करेंगे। मीडिया में आयी एक खबर में उनकी पार्टी के मुख्य सचेतक के हवाले से बुधवार को यह जानकारी दी गयी। ओली (72) ने सोमवार को चौथी बार इस हिमालयी देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। काठमांडू । नेपाल के नव नियुक्त प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली 21 जुलाई को संसद में संविधान के अनुसार आवश्यक विश्वास मत हासिल करेंगे। मीडिया में आयी एक खबर में उनकी पार्टी के मुख्य सचेतक के हवाले से बुधवार को यह जानकारी दी गयी। ओली (72) ने सोमवार को चौथी बार इस हिमालयी देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। 'मायरिपब्लिका' समाचार पोर्टल ने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल–यूनीफाइड मार्क्सिस्ट लेनिनिस्ट (सीपीएन–यूएमएल) के मुख्य सचेतक महेश बरतौला के हवाले से बताया कि प्रधानमंत्री ओली ने रविवार को विश्वास मत हासिल करने का फैसला किया है। नेपाल के संविधान के अनुसार, ओली को नियुक्ति के 30 दिन के भीतर संसद से विश्वास मत हासिल करना होगा। संभावना है कि ओली ऐसा आसानी से कर लेंगे, क्योंकि 275 सदस्यीय प्रतिनिधि सभा में सरकार बनाने के लिए न्यूनतम संख्या 138 है। नेपाल की सबसे बड़ी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता को रविवार को राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने प्रधानमंत्री नियुक्त किया। ओली संसद में सबसे बड़ी पार्टी नेपाली कांग्रेस (एनसी) तथा अन्य छोटे दलों के साथ गठबंधन सरकार का नेतृत्व करेंगे। उन्होंने पुष्प कमल दाहाल 'प्रचंड' की जगह ली है जो पिछले सप्ताह प्रतिनिधि सभा में विश्वास मत हासिल नहीं कर पाये थे जिसके बाद नयी सरकार का गठन हुआ। सीपीएन–यूएमएल अध्यक्ष अब नयी गठबंधन सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं जिसके सामने इस हिमालयी देश में राजनीतिक स्थिरता प्रदान करने की चुनौती है।

दक्षिण–पश्चिमी चीन के एक शापिंग माल में आग लगने से आठ लोगों की मौत

एजेंसी ने बताया कि बचाव कार्य जारी है और अभी यह पता नहीं चल पाया है कि इमारत में कितने लोग थे, आग कब लगी या आग लगने का कारण क्या था। इमारत में एक डिपार्टमेंटल स्टोर, कार्यालय, रेस्तरां और एक फिल्म थियेटर है। दक्षिण–पश्चिमी चीनी शहर जिगोंग में बुधवार को एक शॉपिंग मॉल में आग लगने से आठ लोगों की मौत हो गई। सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी। सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ के अनुसार, शाम छह बजे के कुछ देर बाद 14 मंजिला वाणिज्यिक इमारत में आग लगने की सूचना मिलने पर अग्निशमन और बचाव दल ने मौके पर पहुंचकर 75 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। उसने बताया कि इस घटना में आठ लोगों की मौत हो गई। एजेंसी ने बताया कि बचाव कार्य जारी है और अभी यह पता नहीं चल पाया है कि इमारत में कितने लोग थे, आग कब लगी या आग लगने का कारण क्या था।

सूर्यकुमार यादव आईसीसी टी20 रैंकिंग में दूसरे स्थान पर बरकरार, जायसवाल छठे स्थान पर

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की टी 20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में बल्लेबाजों की सूची में आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव दूसरे स्थान पर बरकरार हैं जबकि युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायवाल छठे स्थान पर पहुंच गए। रुतुराज गायकवाड़ टी20 बल्लेबाजों की सूची में एक स्थान के नुकसान से आठवें पायदान पर हैं।दुबई । आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव जारी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की टी20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में बल्लेबाजों की सूची में दूसरे स्थान पर बरकरार हैं जबकि युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायवाल छठे स्थान पर पहुंच गए। रुतुराज गायकवाड़ टी20 बल्लेबाजों की सूची में एक स्थान के नुकसान से आठवें पायदान पर हैं। जिंबाब्वे के खिलाफ टी20 श्रृंखला में भारत की 4–1 की जीत के बाद रैंकिंग को अपडेट किया गया है। श्रृंखला में 141 रन बनाने वाले जायसवाल को चार स्थान का फायदा हुआ है।ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर चल रहे हैं। सीनियर खिलाड़ियों की गैरमौजूदगी में जिंबाब्वे दौरे पर भारतीय टीम की अगुआई करने वाले शुभमन गिल पांच पारियों में 170 रन बनाकर श्रृंखला के शीर्ष स्कोरर रहे। वह 36 स्थान की लंबी छलांग के साथ 37वें स्थान पर हैं। टी20 अंतरराष्ट्रीय गेंदबाजों की रैंकिंग में कोई भारतीय शीर्ष 10 में नहीं है। जिंबाब्वे के खिलाफ श्रृंखला से अक्षर पटेल को ब्रेक दिया गया था और वह चार स्थान के नुकसान से 13वें स्थान पर खिसक गए हैं। तेज गेंदबाज मुकेश कुमार और वाशिंगटन सुंदर को रैंकिंग में फायदा हुआ है। तीन मैच में आठ विकेट चटकाने वाले मुकेश 36 स्थान के फायदे से 46वें स्थान पर पहुंच गए हैं। पांच मैच में आठ विकेट हासिल करने वाले सुंदर 21 स्थान की छलांग के साथ 73वें स्थान पर हैं। इंग्लैंड के आदिल राशिद टी20 अंतरराष्ट्रीय गेंदबाजों की सूची में शीर्ष पर हैं। दक्षिण अफ्रीका के एनरिच नोर्किया और श्रीलंका के वानिंदु हसरंगा का नंबर उनके बाद आता है। टी20 अंतरराष्ट्रीय ऑलराउंडर की सूची में भारत के हार्दिक पंड्या चार स्थान के नुकसान से छठे स्थान पर खिसक गए जबकि अक्षर एक स्थान के नुकसान से 13वें स्थान पर हैं। सुंदर और शिवम दुबे आठ और 35 स्थान के फायदे से क्रमशरू 41वें और 43वें स्थान पर हैं। श्रीलंका के हसरंगा ऑलराउंडरों की सूची में शीर्ष पर चल रहे हैं।

आईसीसी ने छह देशों को आईसीसी डेवलपमेंट पुरस्कार के लिए चुना, टी20 वर्ल्ड कप 2024 में खेले थे ये देश

आईसीसी ने बुधवार को आईसीसी डेवलपमेंट पुरस्कार 2023 के वैश्विक विजेताओं की घोषणा जिसमें छह उभरते हुए देश मेक्सिको, ओमान, नीदरलैंड, यूएई, नेपाल और स्कॉटलैंड शामिल हैं। पिछले कैलेंडर वर्ष के दौरान शानदार प्रदर्शन के अलावा महत्वपूर्ण पहल के लिए 21 उभरते हुए देशों में से छह को पुरस्कारों के लिए चुना गयाअंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने बुधवार को आईसीसी डेवलपमेंट पुरस्कार 2023 के वैश्विक विजेताओं की घोषणा जिसमें छह उभरते हुए देश मेक्सिको, ओमान, नीदरलैंड, यूएई, नेपाल और स्कॉटलैंड शामिल हैं। पिछले कैलेंडर वर्ष के दौरान शानदार प्रदर्शन के अलावा महत्वपूर्ण पहल के लिए 21 उभरते हुए देशों में से छह को पुरस्कारों के लिए चुना गया और इनका चयन एक प्रतिष्ठित पैनल द्वारा किया गया।आईसीसी की विज्ञप्ति के अनुसार इस साल विजेताओं का चयन अप्रैल में घोषित क्षेत्रीय पुरस्कार विजेताओं की सूची से किया गया जिसे आईसीसी के पूर्ण सदस्य अधिकारियों, पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों और आईसीसी वैश्विक भागीदारों के एक प्रतिष्ठित पैनल द्वारा चुना गया जिसमें प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया की वरिष्ठ खेल पत्रकार मोना पार्थसारथी भी शामिल हैं।आईसीसी डेवलपमेंट (विकास) पुरस्कार 2002 में शुरू किये गये थे जो एसोसिएट सदस्य देशों में खेल को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए किये गये काम के लिए दिये जाते हैं। मेक्सिको क्रिकेट संघ को अग्रणी परियोजानओं के लिए 'आईसीसी डेवलपमेंट इनिशिएटिव ऑफ द ईयर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिसने भारत में 'स्ट्रीट चाइल्ड क्रिकेट विश्व कप' में हिस्सा लेने के लिए अपनी एक टीम भेजी थी। साथ ही उन्होंने मेक्सिको में कैदियों के पुनर्वास और उनके जीवन में बदलाव के लिए क्रिकेट सत्र आयोजित किये।ओमान क्रिकेट को 'क्रिकेट4हर कार्यक्रम' के लिए '100: क्रिकेट फीमेल क्रिकेट इनिशिएटिव ऑफ द ईयर' पुरस्कार दिया गया जो महिलाओं और लड़कियों को अवसर प्रदान करता है। नीदरलैंड को भारत में आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने और प्रतिस्पर्धा करने के शानदार प्रयास के लिए 'आईसीसी एसोसिएट मेंबर पुरुष परफोरमेंस ऑफ द ईयर' का पुरस्कार दिया गया। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने 'एसोसिएट मेंबर वुमैन्स परफोरमेंस ऑफ द ईयर' पुरस्कार जीता जिसने मलेशिया में आईसीसी महिला टी20 विश्व कप 2024 एशिया क्वालीफायर में शानदार प्रदर्शन किया था। नेपाल क्रिकेट संघ ने अपने सोशल चौनल में विकास के लिए 'आईसीसी डिजिटल फैन एंगेजमेंट ऑफ द ईयर' पुरस्कार हासिल किया। क्रिकेट स्कॉटलैंड को 'क्रिकेट 4 गुड सोशल इम्पैक्ट इनिशिएटिव ऑफ द ईयर' वर्ग का विजेता चुना गया।

श्रीलंका के खिलाफ वनडे सीरीज में खेल सकते हैं रोहित शर्मा, विराट कोहली और बुमराह नहीं होंगे उपलब्ध

रोहित शर्मा इन तीनों वनडे मैचों में नजर आ सकते हैं। वे फिलहाल यूएस में अपनी छुट्टियां मना रहे हैं। उम्मीद है कि वह बीसीसीआई को अपनी उपलब्धता के बारे में जल्द सूचित करेंगे। संभवतरू बुधवार को ऑनलाइन होने वाली बैठक से पहले वह बोर्ड को अपना भेज देंगे। अगर रोहित वनडे सीरीज में खेलने का फैसला करते हैं तो वह निस्संदेह टीम की अगुवाई करेंगे।भारतीय टीम ने जून में टी20 वर्ल्ड कप 2024 का खिताब जीता और जुलाई केपहले और दूसरे हफ्ते में टीम जिम्बाब्वे के खिलाफ टी20 सीरीज खेली। वहीं अब टीम इंडिया को अगला दौरा श्रीलंका का करना है। जहां दोनों टीमों के बीच तीन मैचों की टी20 सीरीज और इतने ही मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी। टी20 सीरीज के लिए स्पष्ट है कि रोहित शर्मा और विराट कोहली क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट से संन्यास ले चुके हैं जबकि जसप्रीत बुमराह नहीं खेलेंगे। टीम इंडिया के हेड कोच गौतम गंभीर ने साफ कर दिया है कि हर खिलाड़ी को तीनों फॉर्मेट के लिए उपलब्ध रहना होगा। ऐसे में क्या रोहित, विराट और बुमराह पर वनडे सीरीज खेलने का दबाव है? तो इसका जवाब है नहीं, क्योंकि बोर्ड ने इन तीनों दिग्गजों को रियायत दी है। हालांकि, रोहित शर्मा की ओर से कुछ संकेत मिल रहे हैं कि वह अगस्त में श्रीलंका के खिलाफ होने वाले तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए अपने आप को उपलब्ध करा सकते हैं। इस बात को देखते हुए कि फरवरी–मार्च 2025 में होने वाली चौंपियंस ट्रॉफी से पहले बहुत कम वनडे मैच टीम इंडिया को खेलने हैं। क्रिकबज की रिपोर्ट की मानें तो इसकी वजह है कि रोहित शर्मा इन तीनों वनडे मैचों में नजर आ सकते हैं। वे फिलहाल यूएस में अपनी छुट्टियां मना रहे हैं। उम्मीद है कि वह बीसीसीआई को अपनी उपलब्धता के बारे में जल्द सूचित करेंगे। संभवतरू बुधवार को ऑनलाइन होने वाली बैठक से पहले वह बोर्ड को अपना भेज देंगे। अगर रोहित वनडे सीरीज में खेलने का फैसला करते हैं तो वह निस्संदेह टीम की अगुवाई करेंगे। लेकिन जसप्रीत बुमराह और विराट कोहली जैसे खिलाड़ियों को श्रीलंका सीरीज के लिए आराम दिया गया है और उनके टीम में शामिल होने की संभावना कम ही है। कोहली और बुमराह आईपीएल 2024 के बाद टी20 वर्ल्ड कप में खेले थे और अब जल्द वे बांग्लादेश और न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाली टेस्ट सीरीज में भी खेलते हुए नजर आएंगे। टेस्ट सीरीज भी वर्ल्ड टेस्ट चौंपियनशिप के लिहाज से काफी मायने रखती है। वहीं, इनकी जगह अन्य खिलाड़ियों को आजमाया जा सकता है, इनमें श्रेयस अय्यर का नाम भी शामिल हैं इसलिए उनकी वापसी हो सकती है।

टी20 कप्तानी के लिए हार्दिक पंड्या एव सूर्यकुमार आईपीएल में भी हार्दिक पंड्या को हो सकता है बड़ा नुकसान

रोहित शर्मा ने क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप को अलविदा कह दिया। इसके बाद भारतीय क्रिकेट टीम को टी20 इंटरनेशनल में नए कप्तान की तलाश है। कुछ दिन तक हार्दिक पंड्या इसके प्रबल और एकमात्र दावेदार लग रहे थे लेकिन श्रीलंका दौरे के लिए टीम चयन से पहले सूर्या इस रेस में शामिल हो गए हैं। टी20 वर्ल्ड कप 2024 का खिताब जीतते ही रोहित शर्मा ने क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप को अलविदा कह दिया। इसके बाद भारतीय क्रिकेट टीम को टी20 इंटरनेशनल में नए कप्तान की तलाश है। कुछ दिन तक हार्दिक पंड्या इसके प्रबल और एकमात्र दावेदार लग रहे थे लेकिन श्रीलंका दौरे के लिए टीम चयन से पहले सूर्या इस रेस में शामिल हो गए हैं। पंड्या के चोटिल रहने के ट्रैक रिकॉर्ड के कारण ज्ञल के कप्तान बनने की संभावना है। सूर्यकुमार यादव को कमान मिलने से हार्दिक पंड्या केवल भारतीय टीम की कप्तानी नहीं गंवाएंगे, बल्कि इंडियन प्रीमियर लीग में भी उनके लिए मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। हार्दिक और सूर्यकुमार एक ही फ्रेंचाइजी मुंबई इंडियंस का हिस्सा हैं। आईपीएल 2025 से पहले मेगा ऑक्शन होना है। इससे पहले मुंबई की टीम जरूर सूर्यकुमार यादव को रिटेन करना चाहेगी। कम से कम टी20 में सूर्या को तो यूं ही नहीं जाने दिया जा सकता। वहीं अगर सूर्या को मुंबई इंडियंस रिटेन करना चाहती है और वह भारतीय टीम के कप्तान बनते हैं तो क्या वह आईपीएल में बतौर खिलाड़ी खेलेंगे? क्या भारत का टी20 कप्तान अपने ही देश की फ्रेंचाइजी लीग में किसी और की कप्तानी में खेलेगा? जैसे रोहित शर्मा जब टी20 कप्तान थी तो उन्होंने हार्दिक पंड्या की कप्तानी में आईपीएल 2024 में खेला था। फिलहाल ऐसा तो पहली ही बार हुआ था। टी20 वर्ल्ड कप 2022 के बाद रोहित शर्मा सालभर टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट नहीं खेले थे। उनकी जगह हार्दिक पंड्या ने टीम की कमान संभाली थी। इसके बाद पिछले साल के आखिर में मुंबई इंडियंस ने हार्दिक पंड्या को गुजरात टाइटंस से ट्रेड किया और कप्तान बना दिया। रोहित शर्मा 2024 की शुरुआत में अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज में खेले। इसके बाद जय शाह द्वारा कन्फर्म किया गया कि रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम इंडिया टी0 वर्ल्ड कप 2024 खेलेगी।

आईसीसी रैंकिंग में सुभम गील को बड़ा फायदा, यशस्वी ने लगाई छलांग

हाल ही में खत्म हुई भारत और जिम्बाब्वे के बीच खेली गई पांच मैचों की टी20 सीरीज के बाद शुभमन गिल को बड़ा फायदा हुआ है। इस दौरान गिल ने 36 स्थान की लंबी छलांग लगाई है। उनके अलावा टीम के ओपनर यशस्वी जायसवाल को भी आईसीसी की रैंकिंग में फायदा हुआ है। आईसीसी ने टी20 की ताजा रैंकिंग जारी की है। हाल ही में खत्म हुई भारत और जिम्बाब्वे के बीच खेली गई पांच मैचों की टी20 सीरीज के बाद शुभमन गिल को बड़ा फायदा हुआ है। इस दौरान गिल ने 36 स्थान की लंबी छलांग लगाई है। उनके अलावा टीम के ओपनर यशस्वी जायसवाल को भी आईसीसी की रैंकिंग में फायदा हुआ है। दरअसल, जिम्बाब्वे के खिलाफ खेली गई पांच मैचों की टी20आई सीरीज के बाद आईसीसी टी20 रैंकिंग में शुभमन गिल ने 36 स्थान की छलांग लगाई है। शुभमन गिल आईसीसी टी20 बैटिंग रैंकिंग में 37वें पायदान पर पहुंचे हैं। वहीं गिल भारत की तरफ से चौथे हाइएस्ट प्लेयर बने हैं, जिन्होंने रोहित शर्मा को पछाड़ दिाय है। रोहित शर्मा टी20 रैंकिंग में 42वें स्थान पर है, जबकि विराट कोहली 51वें पायदान पर है। इन दोनों ही दिग्गज ने टी20 विश्व कप 2024 का खिताब जीतने के बाद टी20 से विदाई ले ली है। इसके साथ ही यशस्वी जायसवाल ने जिम्बाब्वे के खिलाफ ने पांच मैचों की टी20 सीरीज में 125 के स्ट्राइक रेट से 170 रन बनाए। पहले दो टी20 मैच को मिस करने के बाद उन्होंने शानदार तरीके से वापसी की।

इस पूर्व कप्तान की पत्नी और बच्चों के सामने गोली मारकर हत्या, जांच में जुटी पुलिस

दरअसल, श्रीलंकाई मीडिया के अनुसार, श्रीलंका की अंडर–19 क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान धम्मिका निरोशन (41) को गॉले जिले के एक छोटे से शहर अम्बालांगोडा के कांडा मावथा में उनके आवास पर गोली मारकर हत्या कर दी गई। स्थानीय पुलिस के अनुसार, धम्मिका निरोशन पत्नी और दो बच्चों के साथ थे, तभी एक अज्ञात व्यक्ति ने उन पर गोली चलाई।श्रीलंका के पूर्व कप्तान धम्मिका निरोशन की मंगलवार रात को किसी अज्ञात हत्यारे द्वारा हत्या कर दी गई। दरअसल, श्रीलंकाई मीडिया के अनुसार, श्रीलंका की अंडर–19 क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान धम्मिका निरोशन (41) को गॉले जिले के एक छोटे से शहर अम्बालांगोडा के कांडा मावथा में उनके आवास पर गोली मारकर हत्या कर दी गई। स्थानीय पुलिस के अनुसार, धम्मिका निरोशन पत्नी और दो बच्चों के साथ थे, तभी एक अज्ञात व्यक्ति ने उन पर गोली चलाई। वहीं पुलिस अब तक संदिग्ध को पकड़ नहीं पाई है। फिलहाल गहन जांच जारी है, लेकिन अपराध के पीछे का मकसद अब तक स्पष्ट नहीं है। धम्मिका निरोशन को कथित तौर पर 12 बोर की राइफल से गोली मारी गई। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज धम्मिका निरोशन को उनके खेल के दिनों में एक उभरती हुई प्रतिभा के रूप में जाना जाता था। धम्मिका निरोशन ने 2001 से 2004 तक गॉले क्रिकेट क्लब के लिए 12 प्रथम श्रेणी और 8 लिस्ट ए मैच खेले। उसमें उन्होंने 300 से ज्यादा रन बनाए और 19 विकेट लिए। उन्होंने 2000 में श्रीलंकाई अंडर–19 टीम के लिए डेब्यू किया और दो साल तक अंडर–19 टेस्ट और वनडे क्रिकेट खेला।

एक्सरसाइज के दौरान या तुरंत बाद सिरदर्द होना गंभीर बीमारी के हैं संकेत, नई रिसर्च में हुआ बड़ा खुलासा

आजकल फिट रहना अपने आप में एक बहुत बड़ा चौलेंज है. फिट रहने के लिए एक्सरसाइज, वर्कआउट, जिम इंटेंस वर्कआउट के दौरान के कारण तेज पसीना आता है. वर्कआउट के दौरान सिरदर्द, सांस फूलना और गला सूखने जैसी समस्या होने लगती है. ऐसे कई लोग हैं जिन्हें वर्कआउट के दौरान सिरदर्द से परेशान रहते हैं. हमेशा किसी फिजिकल एक्टिविटी जैसे वॉक, जॉगिंग या एक्सरसाइज करने के बाद तुरंत सिरदर्द होने लगता है. इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं.ऑक्सीजन की कमीरू वर्कआउट करते वक्त कई बार शरीर को ठीक से ऑक्सीजन तक नहीं मिल पाती है. इस कारण ब्रेन में ऑक्सीजन की कमी होने लगती है और सिरदर्द होने लगता है. जब आप इंटेंस फिजिकल एक्सरसाइज करते हैं सांस रोक कर रखते हैं. या हल्की सांस लेते हैं. इसके कारण दिमाग में ठीक से ऑक्सीजन नहीं पहुंच पाती है इसके कारण सिर दर्द हो सकता है. वर्कआउट के दौरान लंबी सांस लें.

बीपी का बढना एक्सरसाइज करते समय शरीर में पानी की कमी होने लगती है. जब शरीर पूरी तरह से हाइड्रेट नहीं होती है तो कंडीशन में सिरदर्द की समस्या हो सकती है. इसलिए वर्कआउट के दौरान पसीना निकले तो लिक्विड डाइट या पानी पीते रहें. शरीर को हाइड्रेट रखना बेहद जरूरी है.पानी की कमी एक्सरसाइज के दौरान शरीर में पानी की कमी होने लगती है. जब शरीर में पानी की कमी होने लगती है सिरदर्द की समस्या होने लगती है. इसलिए वर्कआउट के दौरान आपको बीच–बीच में पानी पीते रहना है.नींद पूरी न होनारू नींद पूरी न होने के कंडीशन जब आप वर्कआउट करेंगे तो सिरदर्द की समस्या हो सकती है. इससे शरीर में काफी ज्यादा थकान हो सकती है. इसके कारण भी कई बार सिरदर्द की समस्या हो सकती है. अगर आप जिम में हैवी वर्कआउट करते हैं तो आपको अपना स्लीप पैटर्न सही रखना होगा.

ब्लड शुगर कम होनारू जब आप हैवी वर्कआउट करते हैं तो आपके शरीर में ब्लड शुगर लेवल कम हो सकता है. वर्कआउट के दौरान ब्लड शुगर लेवल डाउन होने से हाइपोग्लाइसीमिया की बीमारी हो सकती है. जिसके कारण सिरदर्द के कारण भी हो सकता है.

वर्कआउट के दौरान ब्लड सर्कुलेशन के कारण शरीर की गर्मी बढ़ जाती है. इस कारण प्यास लगती है. ऐसे में शरीर में अगर पानी की कमी होगी तो आपको सिरदर्द की समस्या हो सकती है.

अगर आपको भी आ रही है ज्यादा नींद तो समझ जाएं इस विटामिन की हो गई है कमी

अगर आपको बहुत ज्यादा नींद आ रही है और आप हर समय थके हुए महसूस कर रहे हैं, तो यह विटामिन डी की कमी का संकेत हो सकता है. विटामिन डी हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी है, क्योंकि यह हमारी हड्डियों को मजबूत बनाता है और हमारी ऊर्जा को बनाए रखता है. इसके अलावा, यह हमारे इम्यून सिस्टम को भी मजबूत करता है.विटामिन डी की कमी के लक्षण' ज्यादा नींद आनारू अगर आप दिनभर थकान और नींद महसूस कर रहे हैं, तो यह विटामिन डी की कमी का संकेत हो सकता है.' हड्डियों में ददरू'विटामिन डी की कमी से हड्डियों में दर्द और कमजोरी हो सकती है.' मूड में बदलावरू डिप्रेशन और मूड स्विंग्स भी विटामिन डी की कमी से हो सकते हैं.' कमजोरी सामान्य काम करने में भी कमजोरी महसूस हो सकती है.

विटामिन डी की कमी के कारण

' धूप का अभावरू हमारा शरीर सूरज की किरणों से विटामिन डी बनाता है. अगर आप ज्यादा समय घर के अंदर बिताते हैं, तो आपको धूप कम मिलती है.

' फूड्स की कमीरू विटामिन डी युक्त खाद्य पदार्थ जैसे मछली, अंडे, और दूध का कम सेवन भी कमी का कारण बन सकता है.

' स्वास्थ्य समस्याएंरू कुछ स्वास्थ्य समस्याएं जैसे किडनी और लिवर की बीमारी भी विटामिन डी की कमी का कारण बन सकती हैं.

विटामिन डी की कमी से बचाव के तरीके

' धूप में समय बिताएंरू रोजाना कम से कम 15–20 मिनट धूप में बिताएं. सुबह की धूप सबसे अच्छी होती है.

' विटामिन डी फूड्स खाएंरू अपने डाइट में मछली, अंडे, दूध, और विटामिन डी डाइट शामिल करें. यह विटामिन डी की कमी को पूरा करने में मदद करता है, जिससे आपको ज्यादा नींद और थकान महसूस नहीं होगी. रोजाना धूप में भी कुछ समय बिताएं, ताकि शरीर को पर्याप्त विटामिन डी मिल सके.

' सप्लीमेंट लेंरू आप विटामिन डी सप्लीमेंट वीकली या रोजाना ले सकते हैं, जैसा डॉक्टर ने सलाह दी हो. यह आपकी विटामिन डी की कमी को पूरा करने में मदद करेगा. सप्लीमेंट की सही मात्रा और समय का पालन करना जरूरी है. हमेशा डॉक्टर की सलाह के अनुसार ही सप्लीमेंट लें.

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, शुक्रवार 19 जुलाई 2024
sheelshukla100@gmail.com

धनुष की 50वीं फिल्म रायन का दमदार ट्रेलर आउट, भरपूर एक्शन मोड में नजर आए अभिनेता

धनुष के निर्देशन में बनी बहुप्रतीक्षित फिल्म रायन का ट्रेलर रिलीज हो गया है। मूवी में धनुष के अलावा प्रकाश राज, संदीप किशन, कालिदास जयराम, दुशारा विजयन, एसजे सूर्या, वरलक्ष्मी सरथकुमार और अपर्णा बालमुरली मुख्य भूमिकाओं में हैं। ट्रेलर रिलीज के साथ ही दर्शकों का खासा ध्यान आकर्षित कर रहा है। आगामी गैंगस्टर ड्रामा की झलकियों ने प्रशंसकों के उत्साह को काफी ज्यादा बढ़ा दिया है।रायन के ट्रेलर की शुरुआत धनुष के शरीर पर लगे खून को धोते हुए एक शॉट से होती है। जल्द ही, कालिदास और संदीप के पात्रों को किसी बात पर स्पष्ट रूप से नाराज दिखाया जाता है। सूर्या को एक अलग रोशनी में दिखाया गया है, जबकि प्रकाश उनका पीछा करता हुआ प्रतीत होता है। धनुष के किरदार को विभिन्न लोगों पर हमला करते हुए दिखाया गया है। ऐसा लगता है कि उनकी प्रतिशोध की प्यास में कालिदास और संदीप भी शामिल हो गए हैं। हालांकि, अंतिम दृश्य उन्हें बिल्कुल विपरीत दिखाता है, जब वह एक पुलिसकर्मी से बात करते हैं तो वह बहुत शांत जर आते हैं।सन पिक्चर्स बैनर द्वारा निर्मित रायन 26 जुलाई को बड़े पर्दे पर दस्तक देने वाली है। फिल्म का लेखन और निर्देशन धनुष ने किया है, जो फिल्म में मुख्य भूमिका में हैं। रायन धनुष की दूसरी निर्देशित फिल्म है, जो पा पांडी के बाद बनी है। एआर रहमान फिल्म का संगीत तैयार कर रहे हैं। कालिदास और संदीप, रायन के भाई की भूमिका में हैं, जबकि दुशारा उनकी बहन के किरदार में हैं। तकनीकी दल में सिनेमैटोग्राफर ओम प्रकाश और संपादक प्रसन्ना जीके शामिल हैं।रायन धनुष की बतौर मुख्य अभिनेता 50वीं फिल्म है। एक गैंगस्टर के इर्द–गिर्द घूमती एक एक्शन ड्रामा फिल्म रायन ने सेंसर की औपचारिकताएं पूरी कर ली हैं और उसे ए सर्टिफिकेट मिल गया है। यह धनुष की वडा चेन्नई के बाद दूसरी ऐसी फिल्म है, जिसे यह रेटिंग मिली है। आने वाले दिनों में धनुष की एक और बड़ी रिलीज थंगालान है, जिसकी रिलीज डेट अभी तय नहीं हुई है।

कल्कि 2898 एडी की कमाई में फिर आई तेजी, 600 करोड़ से बस रह गई इतनी दूर

नाग अश्विन निर्देशित और प्रभास और दीपिका पादुकोण–स्टारर श्कल्कि 2898 एडीय दर्शकों के दिलों दिमाग पर छाई हुई है. ये फिल्म बाक्स आफिस पर रिलीज होने के साथ धुआंधार कमाई कर रही है. हालांकि फिल्म की कमाई में रिलीज के तीसरे हफ्ते में काफी गिरावट दर्ज की जा रही है. बावजूद इसके कल्कि 2898 एडीय बॉक्स ऑफिस पर अपनी पकड़ मजबूत बनाए हुए हैं. चलिए यहां जानते हैं इस फिल्म ने रिलीज के 20वें दिन कितना कलेक्शन किया है?कल्कि 2898 एडी बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रही है. यहां तक कि प्रभास स्टारर ये फिल्म तीसरे हफ्ते में भी लेटेस्ट रिलीज अक्षय कुमार की सरफिरा और कमल हासन की इंडियन 2 से ज्यादा कमाई कर रही है. दरअसल इस साइंस फिक्शन फिल्म का क्रेज दर्शकों के सिर चढ़कर बोल रहा है जिसके चलते कल्कि 2898 एडीय तीसरे हफ्ते में भी दर्शकों को सिनेमाघरों में खींच रही है. हालांकि अब फिल्म का बिजनेस भी कम हो रहा है.कल्कि 2898 एडीय की कमाई की बात करें तो इस फिल्म ने पहले हफ्ते में 414.85 करोड़ की कमाई की थी. दूसरे हफ्ते में श्कल्कि 2898 एडीय का कलेक्शन 128.5 करोड़ रहा. वहीं तीसरे हफ्ते के थर्ड फ्राइडे फिल्म ने 6 करोड़, तीसरे शनिवार फिल्म ने 14.35 करोड़, तीसरे रविवार 16. 45 करोड़ और तीसरे सोमवार 3. 85 करोड़ का कलेक्शन किया. वहीं अब फिल्म की रिलीज के 20वें दिन यानी तीसरे मंगलवार की कमाई के शुरुआती आंकड़े आ गए हैं.सैकनिल्क की अर्ली ट्रेंड रिपोर्ट के मुताबिक कल्कि 2898 एडी ने रिलीज के 20वें दिन यानी तीसरे मंगलवार को 4.25 करोड़ का कलेक्शन किया

है.इसी के साथ कल्कि 2898 एडीय का 20 दिनों का कुल कलेक्शन अब 588.25 करोड़ रुपये हो गया है. कल्कि 2898 एडी की कमाई में तीसरे मंगलवार एक बार फिर तेजी देखी गई है. वहीं प्रभास की इस फिल्म के कलेक्शन की रफ्तार को देखते हुए उम्मीद की जा रही है कि ये जल्द ही 600 करोड़ का आंकड़ा पार कर जाएगी और इसी के साथ ये फिल्म शाहरुख खान की श्जवानय के लाइफटाइम कलेक्शन 643.87 करोड़ का रिकॉर्ड तोड़ने के भी काफी नजदीक पहुंच गई है. बता दें कि कल्कि 2898 एडीय मल्टीस्टारर फिल्म है. 600 करोड़ की लागत से बनी इस फिल्म में प्रभास, दीपिका पादुकोण, अमिताभ बच्चन और कमल हासन सहित कई कलाकारों ने अहम रोल प्ले किया है.

समृद्धि शुक्ला ने अपनी वैनिटी वैन के खोले राज, बताया आखिर क्यों है उनके लिए खास

ये रिश्ता क्या कहलाता है में अभीरा के किरदार से एक्ट्रेस समृद्धि शुक्ला दर्शकों का दिल जीत रही हैं। उनके डेली रूटीन में वैनिटी वैन का क्या रोल है, इसको लेकर उन्होंने खुलकर बात की और कई राज खोले।अपने वैनिटी वैन के बारे में बात करते हुए समृद्धि ने कहा, मेरी वैनिटी के लिए मेरे कुछ प्वाइंट्स हैं, मैं अपना मेकअप किट खुद लेकर चलती हूं। मेरे साथ एक फूड बास्केट भी होता है जिसमें बहुत सारा खाना और बेवरेज होते हैं, जो मैं पूरे दिन पीती हूं।जरूरी मेकअप किट के अलावा, मेरी वैनिटी में एक स्पीकर भी है। अच्छा म्यूजिक सुनना सभी को पसंद होता है। म्यूजिक सुनते हुए चीजें करना और कॉफी पीने का मजा अलग होता है।

समृद्धि ने आगे बताया, मैं वैनिटी वैन में काफी सोती हूं। मैं आमतौर पर अपना खाली समय कुछ और करने के बजाय सोने में बिताती हूं।जब म्यूजिक की बात आती है, तो समृद्धि का कोई फेवरेट म्यूजिक नहीं है।उन्होंने कहा, मेरा कोई फेवरेट म्यूजिक नहीं है, लेकिन अगर मुझे कोई एक चुनना हो, तो मैं कहूंगी कि मुझे क्लासिकल जैज बेहद पसंद है। यह बहुत अच्छा है, लेकिन मैं हमेशा यही नहीं सुनती। इसमें हमेशा बहुत सी चीजों का मिक्सअप होता है। मैं रैप सुनती हूं, मैं जैज सुनती हूं, मैं पॉप सुनती हूं, यह मेरे मूड पर निर्भर करता है, लेकिन मुझे लगता है कि मैं जैज ज्यादा पसंद करती हूं।समृद्धि के लिए, उनका वैनिटी वैन मेकअप रूम तैयार होने वाली जगह से कहीं ज्यादा है। यह एक पर्सनल स्पेस है, एक क्रिएटिव हब है, और एक ऐसी जगह है जहां हंसी और खुशी भरपूर है।

चाहे वह सो रही हों या अपने पसंदीदा म्यूजिक पर डांस कर रही हों, उनकी वैनिटी डेली रूटीन का एक अहम हिस्सा है, जो सेट पर लंबे घंटों को आनंददायक बनाता है।

ये रिश्ता क्या कहलाता है का निर्माण राजन शाही ने अपने बैनर डायरेक्टर कट प्रोडक्शन के तहत किया है।ये रिश्ता क्या कहलाता है स्टार प्लस पर प्रसारित होता है।टीवी एक्ट्रेस के अलावा समृद्धि शुक्ला वॉयस ओवर आर्टिस्ट हैं। उन्होंने द किसिंग बूथ 2, गुंजन सक्सेना, माइटी लिटिल भीम जैसे प्रोजेक्ट में अपनी आवाज दी है। उन्होंने सावी की सवारी से टीवी डेब्यू किया, लेकिन लोकप्रियता ये रिश्ता क्या कहलाता है से मिली।

फिल्म स्त्री 2 का नया पोस्टर आया सामने, राजकुमार राव समेत सभी कलाकारों की दिखी झलक

श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव की हॉरर–कॉमेडी फिल्म स्त्री

को दर्शकों का खूब प्यार मिला था।यह फिल्म साल 2018 में सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी और अब 6 साल बाद स्त्री की दूसरी किस्त दर्शकों का मनोरंजन करने को तैयार है।स्त्री 2 का ट्रेलर कल यानी 18 जुलाई को रिलीज होगा।इससे पहले अब निर्माताओं ने फिल्म का नया पोस्टर साझा किया है, जिसमें राजकुमार से लेकर श्रद्धा समेत सभी कलाकारों की झलक दिखने को मिल रही है।श्रद्धा और राजकुमार के अलावा पंकज त्रिपाठी, अपारशक्ति खुराना और अभिषेक बनर्जी भी इस फिल्म का हिस्सा हैं। फिल्म का निर्देशन अमर कौशिक ने किया है।स्त्री 2 15 अगस्त, 2024 को सिनेमाघरों में दस्तक देने को तैयार है।बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म का सामना अक्षय कुमार–तापसी पन्नू की फिल्म खेल खेल में और अल्लू अर्जुन–रश्मिका मंदाना की फिल्म पुष्पारू द रूल से होगा।इसके अलावा जॉन अब्राहम की फिल्म वेदा भी 15 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। स्त्री 2 2024 की बहुप्रतीक्षित हॉरर कॉमेडी फिल्मों में से एक है। फिल्म का टीजर पहले ही दर्शको को काफी पसंद आया है। ऐसे में अब लोगों को फिल्म का बेसब्री से इंतजार है। फिल्म का टीजर 25 जून को रिलीज किया था। राजकुमार राव ने टीजर साझा कर लिखा था, इस बार चंदेरी में आजादी के दिन होगा आतंक! लीजेंड इस स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को वापस आ रहे हैं। टीजर की शुरुआत राजकुमार राव और अन्य लोगों द्वारा स्त्री की मूर्ति पर दूध चढ़ाने से होती है। टीजर में स्त्री के रूप में श्रद्धा कपूर की झलक दिखाई देती है। साथ ही तमन्ना भाटिया भी नजर आती हैं। फिल्म स्त्री 2 का निर्देशन अमर कौशिक ने किया है। इसके निर्माता जियो स्टूडियोज और दिनेश विजान हैं। फिल्म का पहला भाग साल 2018 में रिलीज हुआ था। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कारोबार किया था। यह फिल्म हिट हुई थी।

अर्जून कपूर से अलग होने के बाद फिर से प्यार में पड़ी मलाइका अरोरा रहस्यमयी शख्स के साथ साझा की तस्वीर ने दी अफवाहों को हवा

मलाइका ने अपनी बिकनी तस्वीरें साझा कर के पहले ही माहौल गर्म किया हुआ था, जिसे उन्होंने अपनी नयी तस्वीरों से और ज्यादा गर्म कर दिया है। तस्वीरों में, अभिनेत्री ने एक रहस्यमयी शख्स की झलक दिखाई, जिसका चेहरा उन्होंने ब्लर किया हुआ था। अभिनेत्री की तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल होते ही उनकी निजी जिंदगी सुर्खियों में आ गयी है।बॉलीवुड की हॉट दिवा मलाइका अरोड़ा बीते कुछ दिनों से स्पेन में छुट्टियां मना रही हैं। यहाँ से अभिनेत्री ने अपनी छुट्टियों की कुछ तस्वीरें साझा की हैं। इन तस्वीरों ने सोशल मीडिया पर अफवाह का एक नया दौर शुरू कर दिया है। दरअसल, मलाइका द्वारा शेयर की गयी तस्वीरों में लोगों को एक आदमी की भी झलक देखने को मिली, जिसके तुरंत बाद सोशल मीडिया पर अभिनेत्री के नए रिश्ते में होने की अफवाह उड़ने लगी है। मलाइका ने अपनी बिकनी तस्वीरें साझा कर के पहले ही माहौल गर्म किया हुआ था, जिसे उन्होंने अपनी नयी तस्वीरों से और ज्यादा गर्म कर दिया है। तस्वीरों में, अभिनेत्री ने एक रहस्यमयी शख्स की झलक दिखाई, जिसका चेहरा उन्होंने ब्लर किया हुआ था। अभिनेत्री की तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल होते ही उनकी निजी जिंदगी भी सुर्खियों में आ गयी है। मलाइका की तस्वीरों में रहस्यमयी शख्स कौन है, ये बात किसी को नहीं पता है, लेकिन सोशल मीडिया यूजर्स उसकी पहचान जानने के लिए बड़े उत्सुक हैं। अभिनेत्री की लव लाइफ इसलिए भी सुर्खियों में हैं क्योंकि उनका हाल ही में अभिनेता अर्जुन कपूर के साथ ब्रेकअप हुआ है। बॉलीवुड गलियारों में लंबे समय से दोनों के अलग होने की अफवाहें उड़ रही हैं। हालाँकि, दोनों ने अलग होने की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है।

कमल हासन की इंडियन 2 को नहीं मिल रहे दर्शक, पांचवें दिन कमाए 3 करोड़ रुपये

कमल हासन स्टारर इंडियन 2 12 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी. दिग्गज अभिनेता की ये फिल्म साल 2024 की मोस्ट अवेटेड फिल्म थी और ये रिकॉर्ड संख्या में स्क्रीन पर रिलीज हुई थी. हलांकि मच अवेटेड सीक्वल को सिनेमाघरों में दस्तक देने के बाद पॉजिटिव रिव्यू नहीं मिला लेकिन फिल्म की पहले दिन के लिए धुआंधार एडवांस बुकिंग हुई थी जिसके चलते इंडियन 2 ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी ओपनिंग की लेकिन फिर इसके बाद फिल्म की कमाई का ग्राफ गिरता चला गया. चलिए यहां जानते हैं इंडियन 2 ने रिलीज के पांचवें दिन यानी मंगलवार को कितना कलेक्शन किया हैकमल हासन की इंडियन 2 को लेकर रिलीज से पहले काफी बज था. दरअसल ये फिल्म एक्टर की ब्लॉकबस्टर 1996 में आई इंडियन का सीक्वल है. ऐसे में फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच काफी एक्साइटमेंट थी. वहीं सिनेमाघरों में दस्तक देने के बाद मेगा–बजट फिल्म की शुरुआत तो अच्छी रही लेकिन दूसरे दिन से ये थिएटर्स में दर्शकों के लिए तरसती हुई नजर आ रही है और इसी के साथ इंडियन 2 उम्मीद के मुताबिक बॉक्स ऑफिस पर परफॉर्म नहीं कर पा रही है. इंडियन 2 की कमाई की बात करें तो इस फिल्म ने रिलीज के पहले दिन 25.6 करोड़ से खाता खोला था. इसके बाद दूसरे दिन फिल्म ने 18.2 करोड़ कमाए. तीसरे दिन इंडियन 2 का कलेक्शन 15.35 करोड़ रहा. वहीं चौथे दिन फिल्म की कमाई 3 करोड़ रुपये हुई. वहीं अब इंडियन 2 की रिलीज के पांचवें दिन यानी मंगलवार की कमाई के शुरुआती आंकड़े आ गए हैं.सैकनिल्क की अर्ली ट्रेंड रिपोर्ट के मुताबिक इंडियन 2 ने रिलीज के 5वें दिन 3 करोड़ का कलेक्शन किया है. इसके बाद इंडियन 2 की पांच दिनों की कुल कमाई अब 65.15 करोड़ रुपये हो गई है. इंडियन 2 को दर्शकों से ठंडा रिस्पॉन्स मिल रहा है. इसकी एक वजह ये भी है कि इस फिल्म को प्रभास की ब्लॉकबस्टर कल्कि 2898 एडी से मुकाबला करना पड़ रहा है. कल्किन रिलीज के तीसरे हफ्ते में भी लेटेस्ट इंडियन 2 से ज्यादा कारोबार कर रही है. ऐसे में इंडियन 2 के लिए कल्कि के आगे टिकना मुश्किल हो रहा है.वहीं कल्कि ने हिंदी बेल्ट में भी अच्छा परफॉर्म किया है और 250 करोड़ से ज्यादा का कारोबार कर लिया है. वहीं इंडियन 2 को हिंदी भाषी क्षेत्रो में दर्शकों से बेहद ठंडा रिस्पॉन्स मिल रहा है. ऐसे में देखने वाली बात होगी कि क्या इंडियन 2 बॉक्स ऑफिस पर घटती कमाई के साथ शतक लगा पाती है या नहीं.शंकर द्वारा निर्देशित, इंडियन 2 में कमल हासन सेनापति की भूमिका में हैं. फिल्म में सिद्धार्थ, रकुल प्रीत सिंह, विवेक, बॉबी सिम्हा, प्रिया भवानी शंकर, नेदुमुदी वेणु और गुलशन ग्रोवर भी मुख्य भूमिका में हैं. अनिरुद्ध रविचंदर ने फिल्म का म्यूजिक दिया है.

बाक्स आफिस पर सरफिरा की दैनिक कमाई में मामूली बढ़त

सुधा कोंगारा के निर्देशन में बनी फिल्म सरफिरा में अक्षय कुमार की उम्दा अदाकारी की चारों और खूब तारीफ हो रही है, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म की कमाई के आंकड़े बेहद निराशाजनक हैं।12 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज हुई यह फिल्म टिकट खिड़की पर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सकी।शुरुआत से सरफिरा की कमाई में उतार–चढ़ाव देखने को मिल रहा है। हालांकि, रिलीज के पांचवें दिन फिल्म के कारोबार में मामूली उछाल आया है। बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, जहां सरफिरा ने चौथे दिन 1.45 करोड़ रुपये का कारोबार किया, वहीं रिलीज के पांचवें दिन यह फिल्म 1.95 करोड़ रुपये कमाने में सफल रही। इसी के साथ अब इस फिल्म का कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 15.4 करोड़ रुपये हो गया है।सरफिरा ने 2.50 करोड़ रुपये के साथ बॉक्स ऑफिस पर धीमी शुरुआत की थी।दूसरे दिन इस फिल्म ने 4.25 करोड़ रुपये और तीसरे दिन 5.25 करोड़ रुपये का कारोबार किया।सरफिरा में अक्षय की जोड़ी राधिका मदान के साथ बनी है, जिसे पहली बार देखा गया और खूब प्यार भी मिल रहा है।परेश रावल और सीमा बिस्वास भी फिल्म का अहम हिस्सा हैं। इस फिल्म को लगभग

100 करोड़ रुपये के बजट में बनाया गया है।सरफिरा दक्षिण भारतीय अभिनेता सूर्या की सुपरहिट फिल्म सोरारई पोट की आधिकारिक हिंदी रीमेक है, जो बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुई थी।अरुणा भाटिया, विक्रम मल्होत्रा, ज्योतिका और सूर्या इसके निर्माता हैं।

रिवीलिंग लहंगे में राशि खन्ना ने शेयर किया हाट लुक, लेटेस्ट तस्वीरों से नजरें हटानी हुई मुश्किल

साउथ और बॉलीवुड की फेमस एक्ट्रेस राशि खन्ना हमेशा अपनी बोल्ड तस्वीरें फैंस के बीच शेयर कर लोगों का सारा अटेंशन अपनी ओर खींच लेती हैं। उनका हर एक लुक सोशल मीडिया पर आते ही बवाल मचाने लगता है। अब हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं। इन तस्वीरों में उनका ग्लैमरस अंदाज थमने का नाम नहीं ले रहा है।

एक्ट्रेस राशि खन्ना ने अपनी एक्टिंग के दम पर लोगों के बीच अपनी अच्छी पहचान बनाई हैं।

वो भले ही ज्यादा फिल्मों ना दिखाई देती हों लेकिन आए दिन अपनी हॉट फोटोज और वीडियोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर फैंस का सारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं।

अब हाल ही में एक्ट्रेस राशि खन्ना ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट की हैं।

इन तस्वीरों में उनका ब्यूटिफुल एंड एलिगेंट लुक देखकर फैंस एक बार फिर से अपने होश खो बैठे हैं। साथ ही उनके लुक्स की तारीफ करते नहीं थक रहे हैं।

राशि खन्ना ने बेहद ही सिंपल व्हाइट और गोल्डन प्रिंट कलर का लहंगा पहना हुआ है, जिसमें वो बला की खूबसूरत नजर आ रही हैं।

कानों में इयररिंग्स, गले में नेकलेस, बालों को अच्छे से स्टाइल कर के साथ ही मिनिमल मेकअप करवा के एक्ट्रेस राशि खन्ना ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है।

बता दें कि एक्ट्रेस जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी हर एक फोटोज पर लाइक्स और कॉमेंट्स के जरिए अपनी–अपनी प्रतिक्रियाएं देती हैं।

जिलाधिकारी ने की आबकारी विभाग की समीक्षा बैठक।

ब्यूरो सिद्धार्थनगर
——आबकारी विभाग के प्रगति की समीक्षा बैठक जिलाधिकारी डा0 राजागणपति आर0 अध्यक्षता में गत दिवस देर रात्रि जिलाधिकारी कैम्प कार्यालय पर सम्पन्न हुइ 'जिलाधिकारी डा0 राजागणपति आर0 ने जिला आबकारी अधिकारी वीर अभिमन्यू कुमार से जनपद में आबकारी विभाग द्वारा शासन द्वारा निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व प्राप्ति के संबध में जानकारी प्राप्त की गयी। जिलाधिकारी ने आबकारी अधिकारी से जनपद में मॉडल शाप थोक एवं फुटकर दुकानो मदिराध्शराब की दुकानो के संबध में जानकारी ली गयी। जिलाधिकारी डा0 राजागणपति आर0 ने जिला आबकारी अधिकारी से जानकारी चाही कि जनपद में अवैध शराब की छापेमारी किस प्रकार की जाती

है, फोर्स उपलब्धता के संबंध में भी जानकारी ली। जिला आबकारी अधिकारी ने बताया कि जनपद के मिश्रौलिया थाना क्षेत्र के अन्तर्गत नदी के किनारे बसे लोगो द्वारा महुआ शराब बनाये जाने की सूचना प्राप्त होने पर स्थानीय थाने से पुलिस बल प्राप्त कर अवैध शराब पकड़कर उसे नष्ट कर दिया जाता है। अवैध शराब बनाने वाले जो लोग पकड़े जाते है उन्हे आबकारी एक्ट के अन्तर्गत कार्यवाही करते हुए जेल भेजा जाता है। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त आबकारी इंस्पेक्टर अवनीश पाण्डेय, संजय पाण्डेय, रितिक वर्मा, मोनी शुक्ला, अमरेन्द्र कुमार सिंह व अन्य संबधित कर्मचारी उपस्थित थे।

जिला पेयजल एवं स्वच्छता समिति द्वारा नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम का किया गया आयोजन।

ब्यूरो सिद्धार्थनगर—
सिद्धार्थनगर—जिला पेयजल एवं स्वच्छता समिति के अंतर्गत एजेंसी मेसर्श फैलकन मुंबई के द्वारा जनपद सिद्धार्थनगर के विकासखंड नौगढ़ की ग्राम पंचायत तलपुरवा में नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें ग्राम पंचायत में पेयजल के बारे मे जागरूक किया गया सभी को टंकी का पानी पीने के लिए और खाना बनाने के लिए प्रयोग करना है पेयजल को हमे बर्बाद नही करना है हर हाल में इसे बचाना है कोई भी दूषित पानी पीकर बीमार न हो इसके लिए हमे स्वच्छ पानी ही पीना हैं और खुले में

शौच नही जाना है ठोस एवं तरल अपशिष्ट कूड़े कचरे को डस्टबिन में डालना आदि जानकारियां दी गई कार्यक्रम में उपस्थित ग्राम प्रधान रामपाल पंचायत सहायक ग्राम पंचायत अधिकारी संदीप संतोष योगेंद्र स्वीटी उपद्धयाय एवं समस्त ग्रामवासी सम्मिलित हुए

आधार संबन्धित सेवाओं के लिए शुल्क निर्धारित

ब्यूरो देवरिया
देवरिया। अधीक्षक डाकघर देवरिया परिमंडल देवरिया अजय पाण्डेय ने बताया है कि डाक विभाग द्वारा देवरिया मण्डल के अंतर्गत देवरिया जनपद के प्रधान डाकघर देवरिया एवं विभिन्न उप डाकघरों में (बरहज, भागलपुर, भटनी, भाटपार रानी, खुखुन्दू, लार, लार रोड, मदनपुर, मझौली राज, गौरी बाजार, नई बाजार, रामपुर, रुद्रपुर, सलेमपुर, गौरा जयनगर, चकरा गोसाई, प्रतापपुर) तथा कुशीनगर जनपद के प्रधान डाकघर पड़रौना एवं विभिन्न उप डाकघरों में (सुकरौली, फाजिलनगर, हाटा, हेतिमपुर, कसया, लक्ष्मीगंज, रामकोला, 20 जुलाई 2024 को विशेष अभियान के तहत आम नागरिको का नया आधार कार्ड एवं आधार कार्ड में संशोधन किया जाएगा। विशेष अभियान का लाभ लेने हेतु आवश्यक दस्तावेज के साथ उपस्थित होकर जन सामान्य अपना आधार कार्ड बनवा अथवा संशोधन करा सकते है। आधार संबन्धित सेवाओं के लिए अधिकतम शुल्क के विवरण में उन्होंने बताया है कि आधार नामांकन एवं अनिवार्य बायोमेट्रिक निःशुल्क है। ई—आधार डाउनलोड और ए—4 शीट पर रंगीन प्रिंट के लिए शुल्क 30 रुपए, जनसंख्यकीय अधतन हेतु शुल्क 50 रुपए तथा जनसंख्यकीय अधतन के साथ बायोमेट्रिक अधतन हेतु 100 रुपए शुल्क निर्धारित किया गया है।

देवरिया के विकास के लिए नार्थ—इस्टर्न रेलवे की जीएम के साथ सांसद ने की वार्ता

ब्यूरो देवरिया
देवरिया। गुरुवार को सदर सांसद शशांक मणि त्रिपाठी ने गोरखपुर में पुर्वोत्तर रेलवे की महाप्रबंधक सौम्या माथुर से मिलकर देवरिया में रेलवे से संबंधित 3 प्रमुख मुद्दों पर चर्चा की तथा कसया ढाले पर ओवरब्रिज न होने के कारण जनता को हो रही समस्याओं से अवगत कराया । इस पर महाप्रबंधक ने कसया ढाले पर ओवरब्रिज बनवाने के लिए अनापत्ति प्रमाण देने पर सहमति जताई, इसके लिए सरकार से धन की मांग भी की गई है। कुशीनगर जनपद में तमकुही – छितौनी – पनियहवा रेलवे लाइन बनाने की परियोजना को जल्द मंजूरी देने पर भी

जीएम ने सहमति दी, इससे तमकुही से वाल्मिकीनगर तक एक और रेल कनेक्शन मिलेगा। सदर सांसद ने देवरिया में बन रहे अमृत रेलवे स्टेशन के सौंदर्यीकरण को अतिशीघ्र अंतिम रुप देने के लिए आग्रह किया तथा देवरही माता के साथ देवरहा बाबा से जुड़े भित्ति चित्र स्टेशन की दीवारों पर बनाने के सुझाव पर महाप्रबंधक सौम्य माथुर ने अपनी सहमति जताई । सदर सांसद ने बताया कि इन तीनों कार्यों के पूरा होने से देवरिया में हो रहे जाम की समस्या से जनता को राहत मिलेगी तथा एक विकसित देवरिया के निर्माण में यह कदम सार्थक होगा ।

शार्ट सर्किट होने से ड्रमंडगंज घाटी में ट्रक में लगी आग

ड्रमंडगंज, मीरजापुर(आरएनएस)। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के मीरजापुर रीवा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित ड्रमंडगंज घाटी में गुरुवार दोपहर तीन बजे के करीब शार्ट सर्किट होने से ट्रक में आग लग गई। ट्रक में आग लगने पर ट्रक में सवार ट्रक मालिक नीचे कूद पड़ा जिससे वह घायल हो गया। नागपुर से बेसन लादकर पटना जा रहा ट्रक ड्रमंडगंज घाटी में नीचे उतरते समय जैसे ही बड़का मोड़ घुमान से चार सौ मीटर पहले पहुंचा तो अचानक शार्ट सर्किट होने से ट्रक में आग लग गई। ट्रक में आग लगी देखकर ट्रक चालक कौशल पटेल निवासी खटखरी थाना शाहपुर जिला मऊगंज राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे ट्रक खड़ी करने लगा तो उसी दौरान ट्रक मालिक मालिक हीरालाल गुप्ता निवासी खटखरी जिला मऊगंज मध्यप्रदेश जान बचाने के लिए हड़बड़ी में ट्रक से नीचे कूद पड़ा जिससे उसके पैर तथा सिर में चोटें आ गई। राहगीरों की सूचना पर पहुंचे उपनिरीक्षक भरत राय, जिउतबंधन यादव तथा हेड कांस्टेबल संजय सिंह ने घाटी से गुजर रहे वाहनों के आवागमन को बंद कराते हुए आग बुझाने के लिए फायर ब्रिगेड को सूचना दी। आधे घंटे बाद एनएचएआई के कर्मचारी पानी का टैंकर लेकर पहुंचे और आग बुझाने में जुट गए राष्ट्रीय राजमार्ग के कर्मचारियों ने आधे घंटे में आग पर काबू पा लिया।ट्रक में आग लगने से करीब एक घंटे तक आवागमन बाधित रहा।पुलिस ने घायल ट्रक मालिक को उपचार हेतु न्यू पीएचसी ड्रमंडगंज में भर्ती कराया मौके पर पहुंचे स्वजन प्राथमिक उपचार के बाद निजी क्लीनिक में उपचार कराने चले गए।ट्रक चालक कौशल पटेल ने बताया कि शार्ट सर्किट होने से अचानक ट्रक में आग लग गई जिससे ट्रक का अगला हिस्सा जलकर राख हो गया है।

डूडा द्वारा संचालित योजनाओं का जिलाधिकारी ने किया समीक्षा बैठक।

ब्यूरो सिद्धार्थनगर—
जिलाधिकारी डॉ0 राजागणपति आर0 की अध्यक्षता एवं अपर जिलाधिकारी वि0ध्रा0 उमाशंकर की उपस्थिति में जिला नगरीय विकास अभिकरण डूडा द्वारा संचालित समस्त योजनाओ की समीक्षा बैठक जिलाधिकारी कैम्प कार्यालय पर सम्पन्न हुआ जिलाधिकारी डॉ0 राजागणपति आर0 द्वारा मुख्यमंत्री नगरीय अल्पविकसित मलिन बस्ती योजना के अन्तर्गत शासन से स्वीकृत कार्यो को पूर्ण कराये जाने, जिन कार्यो का टेण्डर प्रचलित है उनका निविदा पूर्ण कराते हुए कार्यादेश समय से निर्गत कराये जाने तथा समस्त निर्माण कार्यो को गुणवत्तापूर्ण एवं मानक के अनुरूप समय से पूर्ण कराये जाने हेतु परियोजना अधिकारी डूडा को निर्देश दिया गया। पीएम स्वनिधि योजना अन्तर्गत प्रथम किशत 4942, द्वितीय किशत 1499 एवं तृतीय किशत 216 ऋण वितरण को लक्ष्य के सापेक्ष पूर्ण कराने हेतु निर्देशित किया गया तथा स्वनिधि से समृद्धि के अन्तर्गत भारत सरकार की 08 योजनाओ से वेण्डर्स को लिकेंज की कार्यवाही पूर्ण कराया जाये। फैमिली प्रोफाईलिंग का कार्य जिन नगर निकायो में अधूरा है उसे पूर्ण कराया जाये। ये कार्य नगर

निकाय से कराया जाना है, इसलिए समस्त अधिशासी अधिकारी को अगले बैठक में उपस्थित रहने का आदेश दिया गया। दीन दयाल अन्त्योदय योजना, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के अन्तर्गत डूडा द्वारा प्राप्त लक्ष्य के अनुरूप स्वंय सहायता समूह के गठन का कार्य पूर्ण कराते हुए समूहो को रिवाल्बिंग फण्ड का भुगतान समय से कराने हेतु निर्देशित किया गया। स्वरोजगार योजनान्तर्गत व्यक्ति ऋण तथा समूह ऋण की पत्रावली को बैंक से समन्वय स्थपित कर लक्ष्य को शतप्रतिशत पूर्ण कराये। प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के अन्तर्गत प्रथम किशत हेतु लंबित समस्त लाभार्थियो को प्रथम किशत एंव समस्त लंबित आवासो का गुणवत्ता एंव मानक के अनुरूप पूर्ण कराया जाए ऐसे लाभार्थी जिनके द्वारा आवास निर्माण की धनराशि प्राप्त कर आवास निर्माण का कार्य नहीं किया जा रहा है उन्हे अन्तिम चेतावनी जारी करने हेतु परियोजना अधिकारी डूडा को निर्देशित किया गया। जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि जिला नगरीय विकास अभिकरण के समस्त योजनाओ की समीक्षा साप्ताहिक बैठक में की जायेगी। किसी भी कर्मचारी या अधिकारी द्वारा कार्यो में शिथिलता न बरती जाये। इस अवसर पर उपरोक्त के अतिरिक्त परियोजना अधिकारी, डूडा, शहर मिशन प्रबन्धक, सिविल इंजीनियर प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी, सामुदायिक आयोजक, सहायक अभियन्ता डूडा, अवर अभियन्ता डूडा, उपस्थित रहे।

जिला पंचायत द्वारा निर्मित सड़क का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण।

ब्यूरो सिद्धार्थनगर
सिद्धार्थनगर—जिला पंचायत द्वारा निर्मित ग्राम मोहनापुर, तहसील नौगढ़ समय माता स्थान से हरैया तक सी.सी.रोड का निरीक्षण किया गया निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी डॉ0 राजागणपति आर0 द्वारा रोड की लम्बाई, चौड़ाई को नपवाकर देखा गया जो मानक अनुसार ठीक पाया गया। सड़क की गुणवत्ता को खोदवाकर देखा गया जो मानक के अनुसार गुणवत्ता न मिलने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए 05 प्रतिशत कटौती करते हुए निर्देश दिया कि भविष्य में ऐसी पुनर्रावृत्ति नही होना चाहिए। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि कार्य गुणवत्तापूर्ण एवं समय से

पूर्ण कराए। इस अवसर पर उपरोक्त के अतिरिक्त अवर अभियन्ता शीतल प्रसाद शर्मा उपस्थित थे।

दिव्यांगजन शादी विवाह प्रोत्साहन पुरस्कार योजना का लाभ लेने हेतु निर्धारित प्रपत्रों के साथ किया जा सकता है आवेदन

ब्यूरो देवरिया
देवरिया। जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी प्रियंका चौधरी ने बताया है कि दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा संचालित दिव्यांगजन शादी विवाह प्रोत्साहन पुरस्कार योजना का लाभ लेने हेतु ऐसे दिव्यांगजन जिनका विवाह वर्ष 2023—24 एवं 2024—25 में हुआ हो, वे दिव्यांग व्यक्ति आवेदन कर सकते है। ऐसे दम्पति जिनमें केवल पति दिव्यांग हो को धनराशि रूपये 15,000 को प्रोत्साहन राशि तथा ऐसे दम्पत्ति जिनमें केवल पत्नी दिव्यांग हो कि धनराशि रूपये 20,000 तथा ऐसे दम्पति जिनमें पति एवं पत्नी दोनो ही दिव्यांग हो, को धनराशि रूपये 35,000 का एक मुश्त राशि दोनो के संयुक्त खाते में भेजी जाती है। जो दिव्यांगजन शादी विवाह प्रोत्साहन योजना का लाभ लेना चाहते है उन्हे निर्धारित प्रपत्रों के साथ दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग की वेबसाइट ीजजचरूध्ध्कपअलंदहरंद.नचेकब.हवअ.पद पर आनलाइन आवेदन कराने के उपरान्त 15 दिवस के अन्दर आवेदन पत्र की हार्ड कापी समस्त संलग्नक प्रपत्रों के साथ कार्यालय जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी कमरा नम्बर 17 विकास भवन, देवरिया में जमा कराया जाना अनिवार्य है। पात्रता के विवरण में उन्होंने बताया है कि संयुक्त नवीनतम फोटो, विवाह पंजीकरण प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र एवं दम्पति में कोई सदस्य आयकरदाता न हो। मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा जारी किया गया दिव्यांगता प्रमाण पत्र (40 प्रतिशत या उससे अधिक का होना अनिवार्य है), राष्ट्रीयकृत बैंक में संचालित संयुक्त खाता पासबुक, दम्पति भारत का नागरिक हो, उत्तर प्रदेश का स्थाई निवासी हो या कम से कम 05 वर्ष से उसका अधिवासी हो। (निवास प्रमाण पत्र) युवक एवं युवती का आयु प्रमाण पत्र (शादी के समय युवक का आयु 21 वर्ष से कम तथा 45 वर्ष से अधिक न हो। युवती की उम्र 18 वर्ष से कम एवं 45 वर्ष से अधिक न हो।) युवक एवं युवती के आधार कार्ड की छायाप्रति, जिसके पास पूर्व से कोई जीवित पति या पत्नी न हो और उनके उपर महिला उत्पीड़न या अन्य अपराधिकवाद न चल रहा हो।

गौ–तस्कर भूमाफिया नशीम कुरैशी के खिलाफ मुख्यमंत्री ने बैठायी जांच, डीएम को दिए निर्देश

'वैश्य महासम्मेलन के प्रतिनिधि मण्डल ने लखनऊ में सीएम योगी से की मुलाकात

मीरजापुर(आरएनएस)। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के प्रदेश महामंत्री शैलेन्द्र अग्रहरि ने वैश्य समाज के एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमण्डल के साथ सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। इस दौरान शैलेन्द्र अग्रहरि ने बताया कि इस प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व समाज के प्रदेश अध्यक्ष सुधीर हलवासिया ने किया जिनके साथ प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व विधायक संजय गुप्ता सहित आधा दर्जन प्रादेशिक पदाधिकारी शामिल रहे। जहां उत्तर प्रदेश में जीएसटी ट्रबुनल बनाये जाने की मांग रखी गई। जिससे व्यापारियों को मामले सरलता से निपटाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहाकि मुख्यमंत्री ने इस पर त्वरित निस्तारण की बात कही है। साथ ही साथ प्रतिनिधि मण्डल ने दानवीर भामाशाह जयंती को व्यापारी कल्याण दिवस के रूप में सरकार द्वारा पूरे प्रदेश में मनाये जाने पर आभार धन्यवाद ज्ञापित किया। वहीं मिर्जापुर में वैश्य व्यापारी समाज द्वारा संचालित श्री माता प्रसाद माता भीख इंटर कॉलेज के तरकापुर स्थित खेल मैदान के एक अंश की फर्जी रजिस्ट्री करा कर अपारधिक प्रवृति के भू—माफिया द्वारा कब्जा किये जाने की बात बतायी गई, जिस पर मुख्यमंत्री ने त्वरित आदेश जारी करते हुए जिला प्रशासन को निर्देश दिया। कब्जा करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही का आश्वासन दिया। विद्यालय प्रबंधक अतिन गुप्ता ने बताया कि भू—माफिया और गो तस्करी व गैगस्टर में निरुद्ध नसीम कुरैशी विद्यालय पर अवैध ढंग से कब्जा करने की साजिश रच रहा है। जिससे खेल मैदान में स्कूल के विद्यार्थी खेलने से वंचित है। निलंबित प्रधानाचार्य संजय कुमार मिश्रा द्वारा विद्यालय में किये गये करोड़ों के गबन की शिकायत भी मुख्यमंत्री तक की गई। जिस पर मुख्यमंत्री ने न्यायसंगत कार्यवाही करने का ठोस आश्वासन दिया और सम्बंधित अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए।

हिन्दी दैनिक विजडम इंडिया
स्वामी,मुद्रक एवं प्रकाशक श्री शील कुमार शुक्ला द्वारा हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा लि0 ,94, एम0जी0 मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से छपवाकर 633/387,गेहमर कुंज कालोनी, फैजाबाद रोड, चिनहट, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।
सम्पादक–शील कुमार शुक्ला
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ मान्य होगा।